ताईद मे जगह जगह हदीषुल्बाब अफ़आल वला हरज को भी लाए हैं। (अनवारुल बारी जिल्द 4 पेज नं. 104)

मा'लूम होता है कि साहिबे अनवारुल बारी को हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) के दिल का पूरा हाल मा'लूम है, इसीलिये तो वह उनके ज़मीर पर ये फ़त्वा लगा रहे हैं। इस्लाम की ता'लीम थी कि मुसलमान आपस में हुस्ने ज़न्न (अच्छे गुमान) से काम लिया करें, यहाँ ये सूए ज़न्न (बुरा गुमान) है। अस्तग़्फ़िरुल्लाह आगे साहिबे अनवारुल बारी मज़ीद वज़ाहत फ़र्माते हैं।

आज इसी क़िस्म के तशद्दुद से हमारे ग़ैर मुक़ल्लिद भाई और हरमैन शरीफ़ैन के नज्दी उलमा अइम्मा हनफ़िया के ख़िलाफ़ महाज़ (मोर्चा) बनाते हैं, हनफ़िया को चिढ़ाने के लिये इमाम बुख़ारी (रह) की इकतरफ़ा अहादीष पेश किया करते हैं। (हवाला मज़्कूर)

साहिबे अनवारुल बारी के इस इल्ज़ाम पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है क़ायदा है, **'अल मरउ यक़ीसु अला नफ़्सिही'** (इंसान दूसरों को भी अपने नफ़्स पर क़यास किया करता है) चूँकि इस तशद्दुद और चिढ़ाने का मंज़र किताब अनवारुल बारी के बेशतर मक़ामात पर ज़ाहिर व बाहिर है। इसलिये वो दूसरों को भी इसी ऐनक से देखते हैं, हालाँकि वाक़ियात बिलकुल उसके ख़िलाफ़ हैं। मुक़ामे सद शुक्र है कि यहाँ आपने अपनी सबसे मअतूब जमाअत अहले हदीष को लफ़्ज़ ग़ैर मुक़ल्लिद भाई से तो याद फ़र्माया। अल्लाह करे कि ग़ैर मुक़ल्लिदो को ये भाई बनाना बिरादराने यूसुफ़ की नक़ल न हो और हमारा तो यक़ीन है कि ऐसा हर्गिज़ न होगा। अल्लाह पाक हम सबको नामूसे इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये आपसी इत्तिफ़ाक़ अता फ़र्माए। सहवन ऐसे मौक़ा पर इतनी तक़्दीम व ताख़ीर मुआफ़ है। हदीष का यही मंशा है, हनफ़िया को चिढ़ाना हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) का मंशा नहीं है।

बाब 48 : अल्लाह तआला के इस फ़र्मान की तशरीह में कि तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया है

٤٨– بَابُ قَولِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيْلاً﴾

(125) हमसे क़ैस बिन हफ़्सी ने बयान किया, उनसे अब्दुल वाहिद ने, उनसे अअमश सुलैमान बिन मुहरान ने इब्राहीम के वास्ते से बयान किया, उन्होंने अलक़मा से नक़ल किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से रिवायत किया, वो कहते हैं कि (एक बार) में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना के खंडहरात में चल रहा था और आप (ﷺ) खजूर की छड़ी पर सहारा देकर चल रहे थे, तो कुछ यहूदियों का (उधर से) गुज़र हुआ, उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि आपसे रूह के बारे में कुछ पूछो, उनमें से किसी ने कहा मत पूछो, ऐसा न हो कि वो कोई ऐसी बात कह दे जो तुम्हें नागवार गुज़रे (मगर) उनमें से कुछ ने कहा कि हम ज़रूर पूछेंगे, फिर एक शख़्स ने खड़े होकर कहा, ऐ अबुल क़ासिम! रूह क्या चीज़ है? आप (ﷺ) ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़र्माई, मैंने (दिल में) कहा कि आप पर वह्य आ रही है। इसलिये मैं खड़ा हो गया। जब आपसे (वो कैफ़ियत) दूर हो गई तो आप ﷺ ने (क़ुर्आन की यह आयत जो उस वक़्त नाज़िल हुई थी) तिलावत फ़र्माई (ऐ नबी!) तुमसे ये लोग रूह के बारे में पूछ रहे हैं। कह दो

١٢٥– حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ سُلَيْمَانُ بْنُ مُهْرَانَةَ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: بَيْنَا أَنَا أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي خِرَبِ الْمَدِيْنَةِ – وَهُوَ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيبٍ مَعَهُ – فَمَرَّ بِنَفَرٍ مِنَ الْيَهُودِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ : سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ لاَ تَسْأَلُوهُ، لا يَجِيءُ فِيْهِ بِشَيْءٍ تَكْرَهُونَهُ. فَقَالَ بَعْضُهُمْ لَنَسْأَلَنَّهُ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَالَ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ، مَا الرُّوحُ؟ فَسَكَتَ. فَقُلْتُ إِنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ، فَقُمْتُ. فَلَمَّا انْجَلَى عَنْهُ فَقَالَ: وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ، قُلِ الرُّوحُ

बाब 48 : अल्लाह तआला के इस फ़र्मान की तशरीह में कि तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया है

٤٨- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾

(125) हमसे क़ैस बिन हफ़्सी ने बयान किया, उनसे अब्दुल वाहिद ने, उनसे अअ़मश सुलैमान बिन मुहरान ने इब्राहीम के वास्ते से बयान किया, उन्हों ने अलक़मा से नक़ल किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से रिवायत किया, वो कहते हैं कि (एक बार) मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना के खंडहरात में चल रहा था और आप (ﷺ) खजूर की छड़ी पर सहारा देकर चल रहे थे, तो कुछ यहूदियों का (उधर से) गुज़र हुआ, उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि आपसे रूह के बारे में कुछ पूछो, उनमें से किसी ने कहा मत पूछो, ऐसा न हो कि वो कोई ऐसी बात कह दे जो तुम्हें नागवार गुज़रे (मगर) उनमें से कुछ ने कहा कि हम ज़रूर पूछेंगे, फिर एक शख़्स ने खड़े होकर कहा, ऐ अबुल क़ासिम! रूह क्या चीज़ है? आप (ﷺ) ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़र्माई, मैंने (दिल में) कहा कि आप पर वह्य आ रही है। इसलिये मैं खड़ा हो गया। जब आपसे (वो कैफ़ियत) दूर हो गई तो आप ﷺ ने (क़ुर्आन की यह आयत जो उस वक़्त नाज़िल हुई थी) तिलावत फ़र्माई (ऐ नबी!) तुमसे ये लोग रूह के बारे में पूछ रहे हैं। कह दो

١٢٥- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ سُلَيْمَانُ بْنُ مِهْرَانَةَ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: بَيْنَا أَنَا أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي خَرِبِ الْمَدِيْنَةِ - وَهُوَ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيْبٍ مَعَهُ - فَمَرَّ بِنَفَرٍ مِنَ الْيَهُوْدِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: سَلُوْهُ عَنِ الرُّوْحِ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لاَ تَسْأَلُوهُ، لاَ يَجِيْءُ فِيْهِ بِشَيْءٍ تَكْرَهُوْنَهُ. فَقَالَ بَعْضُهُمْ لَنَسْأَلَنَّهُ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَالَ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ، مَا الرُّوْحُ؟ فَسَكَتَ. فَقُلْتُ: إِنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ، فَقُمْتُ. فَلَمَّا انْجَلَى عَنْهُ فَقَالَ: وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ، قُلِ الرُّوحُ

कि रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें इल्म का बहुत थोड़ा हिस्सा दिया गया है। (इसलिये तुम रूह की हक़ीक़त नहीं समझ सकते) अअ़मश कहते हैं कि हमारी क़िरात में वमा ऊतू है। वमा (ऊतीतुम) नहीं।

مِنْ أَمْرِ رَبِّي، وَمَا أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾) قَالَ الأَعْمَشُ: هَكَذَا فِي قِرَاءَتِنَا. وَمَا أُوتُوا.

(दीगर मक़ाम : 4721, 7297, 7456, 7662)

[أطرافه في : ٤٧٢١، ٧٢٩٧، ٧٤٥٦، ٧٤٦٢].

तशरीह : चूँकि तौरात में भी रूह के बारे में यही बयान किया गया है कि वो अल्लाह की तरफ़ से एक चीज़ है, इसलिये यहूदी मा'लूम करना चाहते थे कि उनकी ता'लीम भी तौरात के मुताबिक़ है या नहीं? या रूह के सिलसिले में ये भी मुलाहिदे व फ़लसफ़े की तरह दूर अज़ कार बातें कहते हैं। कुछ रिवायात से मा'लूम होता है कि ये सवाल आपसे मक्का शरीफ़ में भी किया गया था, फिर मदीना के यहूदी ने भी उसे दोहराया। अहले सुन्नत के नज़दीक रूह जिस्मे लतीफ़ है जो बदन में इसी तरह सरायत किये हुए है, जिस तरह गुलाब की ख़ुश्बू उसके फूल में समाई हुई होती है। रूह के बारे में सत्तर अक़्वाल हैं हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह) ने किताबुर्रूह में उन पर ख़ूब रोशनी डाली है। वाक़िया यही है कि रूह ख़ालिस एक लतीफ़ शै है, इसलिये हम अपनी मौजूदा ज़िंदगी में जो कषाफ़त से भरपूर है किसी तरह रूह की हक़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं हो सकते, अकाबिर अहले सुन्नत की यही राय है कि अदब का तक़ाज़ा यही है कि रूह के बारे में सुकूत इख़्तियार किया जाए, कुछ उलमा की राय है कि **मिन अम्रि रब्बी** से मुराद रूह का आलमे अम्र से होना है जो आलमे मल्कूत है, जम्हूर का इत्तिफ़ाक़ है कि रूह हादिष है जिस तरह दूसरे तमाम अजज़ा हादिष हैं। हज़रत इमाम क़द्दस सिर्रहु का मंशा–ए–बाब ये है कि कोई शख़्स कितना ही बड़ा आलिम, फ़ाज़िल, मुहद्दिष, मुफ़स्सिर बन जाए मगर फिर भी इंसानी मा'लूमात का सिलसिला महदूद (सीमित) है और कोई शख़्स नहीं कह सकता कि वो जुम्ला उलूम (सारे ज्ञान) पर हावी हो चुका है, इल्ला मन शाअल्लाह!

مِنْ أَمْرِ رَبِّي، وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾)) قَالَ الأَعْمَشُ: هَكَذَا فِي قِرَاءَتِنَا. وَمَا أُوتُوا.

[أطرافه في : ٤٧٢١، ٧٢٩٧، ٧٤٥٦، ٧٤٦٢].

कि रूह़ मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें इल्म का बहुत थ़ोड़ा हिस़्सा दिया गया है। (इसलिये तुम रूह़ की ह़क़ीक़त नहीं समझ सकते) अअ़मश कहते हैं कि हमारी क़िरात में वमा ऊतू है। वमा (ऊतीतुम) नहीं।

(दीगर मक़ाम : 4721, 7297, 7456, 7662)

तश्रीह़ : चूँकि तौरात में भी रूह़ के बारे में यही बयान किया गया है कि वो अल्लाह की त़रफ़ से एक चीज़ है, इसलिये यहूदी मा'लूम करना चाहते थे कि उनकी ता'लीम भी तौरात के मुत़ाबिक़ है या नहीं? या रूह़ के सिलसिले में ये भी मुलाह़िदे व फ़लसफ़े की त़रह़ दूर अज़ कार बातें कहते हैं। कुछ रिवायात से मा'लूम होता है कि ये सवाल आपसे मक्का शरीफ़ में भी किया गया था, फिर मदीना के यहूदी ने भी उसे दोहराया। अहले सुन्नत के नज़दीक रूह़ जिस्मे लत़ीफ़ है जो बदन में इसी त़रह़ सरायत किये हुए है, जिस त़रह़ गुलाब की ख़ुश्बू उसके फूल में समाई हुई होती है। रूह़ के बारे में सत्तर अक़्वाल हैं ह़ाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह़) ने किताबुर् रूह़ में उन पर ख़ूब रोशनी डाली है। वाक़िया यही है कि रूह़ ख़ालिस़ एक लत़ीफ़ शै है, इसलिये हम अपनी मौजूदा ज़िंदगी में जो कष़ाफ़त से भरपूर है किसी त़रह़ रूह़ की ह़क़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं हो सकते, अकाबिर अहले सुन्नत की यही राय है कि अदब का तक़ाज़ा यही है कि रूह़ के बारे में सुकूत इख़्तियार किया जाए, कुछ उ़लमा की राय है कि मिन अम्रि रब्बी से मुराद रूह़ का आ़लमे अम्र से होना है जो आ़लमे मल्कूत है, जम्हूर का इत्तिफ़ाक़ है कि रूह़ ह़ादिष़ है जिस त़रह़ दूसरे तमाम अजज़ा ह़ादिष़ हैं। ह़ज़रत इमाम क़द्दस सिर्रुहु का मंशा—ए—बाब ये है कि कोई शख़्स़ कितना ही बड़ा आ़लिम, फ़ाज़िल, मुह़द्दिष़, मुफ़स्सिर बन जाए मगर फिर भी इंसानी मा'लूमात का सिलसिला मह़दूद (सीमित) है और कोई शख़्स़ नहीं कह सकता कि वो जुम्ला उ़लूम (सारे ज्ञान) पर ह़ावी हो चुका है, इल्ला मन शाअल्लाह!

٤٩- بَابُ مَنْ تَرَكَ بَعْضَ الاخْتِيَارِ مَخَافَةَ أَنْ يَقْصُرَ فَهْمُ بَعْضِ النَّاسِ عَنْهُ فَيَقَعُوا فِي أَشَدَّ مِنْهُ

बाब 49 : इस बारे में कि कोई शख़्स कुछ ब ातों को इस ख़ौफ़ से छोड़ दे कि कहीं लोग अपनी कम फ़हमी की वजह से उससे ज़्यादा सख़्त (यानी नाजाइज़) बातों में मुब्तला न हो जाएँ

١٢٦- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: قَالَ لِي ابْنُ الزُّبَيْرِ: كَانَتْ عَائِشَةُ تُسِرُّ إِلَيْكَ كَثِيرًا، فَمَا حَدَّثَتْكَ فِي الْكَعْبَةِ؟ قُلْتُ : قَالَتْ لِي: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا عَائِشَةُ لَوْ لاَ أَنَّ قَوْمَكِ حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ - قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ: بِكُفْرٍ - لَنَقَضْتُ الْكَعْبَةَ فَجَعَلْتُ لَهَا بَابَيْنِ: بَابٌ يَدْخُلُ النَّاسُ، وَبَابٌ يَخْرُجُونَ)) مِنْهُ

(126) हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने इस्राईल के वास्ते से नक़ल किया, उन्होंने अबू इस्ह़ाक़ से अस्वद के वास्ते से बयान किया, वो कहते हैं कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) तुमसे बहुत बातें छुपाकर कहती थीं, तो क्या तुमसे क़ाबा के बारे में भी कुछ बयान किया, मैंने कहा (हाँ) मुझसे उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (एक बार) इर्शाद फ़र्माया था कि ऐ आ़इशा! अगर तेरी क़ौम (दौरे जाहिलियत के साथ) क़रीब न होती (बल्कि पुरानी हो गई होती) इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा यानी ज़मान—ए—कुफ़्र के साथ (क़रीब न होती) तो मैं क़ाबा को तोड़ देता और उसके लिये दो दरवाज़े बना देता। एक दरवाज़े से लोग दाख़िल होते और दूसरे दरवाज़े से बाहर

(482) हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे नज्र बिन शुमैल ने, उन्होंने कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न ने ख़बर दी, उन्होंने मुहम्मद बिन सिरीन से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें दोपहर के बाद की दो नमाज़ों में से कोई नमाज़ पढ़ाई (ज़ुहर या अ़स्र की) इब्ने सिरीन ने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उनका नाम तो लिया था लेकिन मैं भूल गया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बतलाया कि आप (ﷺ) ने हमें दो रकअ़त नमाज़ पढ़ा कर सलाम फेर दिया। इसके बाद एक लकड़ी की लाठी से जो मस्जिद में रखी हुई थी आप (ﷺ) टेक लगाकर खड़े हो गए। ऐसा मा'लूम होता

٤٨٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ شُمَيْلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ إِحْدَى صَلاَتَيِ الْعَشِيِّ - قَالَ ابْنُ سِيْرِيْنَ: قَدْ سَمَّاهَا أَبُوهُرَيْرَةَ، وَلَكِنْ نَسِيْتُ أَنَا، قَالَ - فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، فَقَامَ إِلَى خَشَبَةٍ مَعْرُوضَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَاتَّكَأَ عَلَيْهَا كَأَنَّهُ

था कि आप बहुत ही ख़फ़ा हों। और आप (ﷺ) ने अपने दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर रखा। और उनकी उँगलियों को एक—दूसरे में दाख़िल किया। और आपने अपने दाएँ रुख़सार को बाएँ हाथ की हथेली से सहारा दिया। जो लोग नमाज़ पढ़कर जल्दी निकल जाया करते थे वो मस्जिद के दरवाज़ों से पार हो गए। फिर लोग कहने लगे कि क्या नमाज़ कम कर दी गई है। हाज़िरीन में अबूबक्र और उ़मर (रज़ि.) भी मौजूद थे। लेकिन उन्हें भी आपसे बोलने की हिम्मत न हुई। उन्हीं में एक शख़्स थे जिनके हाथ लम्बे थे और उन्हें ज़ुलयदैन कहा जाता था। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप (ﷺ) भूल गए या नमाज़ कम कर दी गई है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि न मैं भूला हूँ और न नमाज़ कम हुई है। फिर आप (ﷺ) ने लोगों से पूछा, क्या ज़ुलयदैन सहीह कह रहे हैं। हाज़िरीन बोले कि जी हाँ! ये सुनकर आप (ﷺ) आगे बढ़े और बाक़ी रकअ़तें पढ़ीं। फिर सलाम फेरा, फिर तक्बीर कही और सह्व का सज्दा किया। मअ़मूल के मुताबिक़ या उससे भी लम्बा सज्दा। फिर सर उठाया और तक्बीर कही। फिर तक्बीर कही और दूसरा सज्दा किया। मअ़मूल के मुताबिक़ या उससे भी लम्बा फिर सर उठाया और तक्बीर कही, लोगों ने बार-बार इब्ने सिरीन से पूछा कि क्या फिर सलाम फेरा तो वो जवाब देते कि मुझे ख़बर दी गई है कि इमरान बिन हुसैन कहते थे कि फिर सलाम फेरा।

(दीगर मक़ाम : 714, 715, 1227, 1228, 1229, 6051, 7250)

غَضْبَانُ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى، وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ، وَوَضَعَ خَدَّهُ الأَيْمَنَ عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى، وَخَرَجَتِ السَّرَعَانُ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالُوا: قَصُرَتِ الصَّلاَةُ. وَفِي الْقَومِ أَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ فَهَابَا أَنْ يُكَلِّمَاهُ، وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ فِي يَدَيْهِ طُولٌ يُقَالُ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنَسِيْتَ أَمْ قُصِرَتِ الصَّلاَةُ؟ قَالَ: ((لَمْ أَنسَ وَلَمْ تُقْصَرْ)) فَقَالَ: ((أَكَمَا يَقُولُ ذُو الْيَدَيْنِ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ. فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى مَا تَرَكَ ثُمَّ سَلَّمَ. ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ. ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، فَرُبَّمَا سَأَلُوهُ : ثُمَّ سَلَّمَ؟ فَيَقُولُ: نُبِّئْتُ أَنَّ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ قَالَ: ثُمَّ سَلَّمَ.

[أطرافه في : ٧١٤، ٧١٥، ١٢٢٧، ١٢٢٨، ١٢٢٩، ٦٠٥١، ٧٢٥٠].

बाब 25 : अगर इमाम मुक़्तदियों से कहे कि तुम लोग इसी हालत में ठहरे रहो तो जब तक वो लौटकर आए उसका इंतिज़ार करें (और अपनी हालत पर ठहरे रहें)

٢٥– بَابُ إِذَا قَالَ الإِمَامُ ((مَكَانَكُمْ)) حَتَّى يَرْجِعَ انْتَظَرُوهُ

(640) हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा कि हमें मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने ख़बर दी कि कहा हमसे औज़ाई ने इब्ने शिहाब ज़ुहरी से बयान किया, उन्होंने अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि उन्होंने फ़र्माया कि नमाज़ के लिए इक़ामत कही जा चुकी थी और लोगों ने सफ़ें सीधी कर ली थीं। फिर रसूले करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और आगे बढ़े। लेकिन हालते जनाबत में थे (मगर पहले ख़्याल न रहा) इसलिए आपने फ़र्माया कि तुम लोग अपनी-अपनी जगहों पर ठहरे रहो। फिर आप (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए तो आप ग़ुस्ल किये हुए थे और सर से पानी टपक रहा था। फिर आप (ﷺ) ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ़ : 275)

٦٤٠– حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ، فَسَوَّى النَّاسُ صُفُوفَهُمْ، فَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَتَقَدَّمَ وَهُوَ جُنُبٌ. ثُمَّ قَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمْ)). فَرَجَعَ فَاغْتَسَلَ، ثُمَّ خَرَجَ وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ مَاءً، فَصَلَّى بِهِمْ.
[راجع: ٢٧٥]

तश्रीह : हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साहब फ़र्माते हैं कि बाज़ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़ायद (अधिक) है– 'क़ील लिअबी अब्दिल्लाहि अय अल बुख़ारी अन्न बदअ लिअहदिना मिस्ल हाज़ा यफ़अलु कमा यफ़अलुन्नबिय्यु ﷺ फ़अय्यु शैइन यस्नउ फ़ क़ील यन्तजिरूनहू क़ियामन औ क़ुऊदन क़ाल इन कान क़ब्लत्तक्बीरि लिल इहरामि फ़ला बास अंय्यक़ऊदू व इन कान बअदत्तक्बीरि इन्तज़िरूहु हाल कौनिहिम क़ियामन'

यानी लोगों ने इमाम बुखारी (रह.) से कहा अगर हममें किसी को ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो वो क्या करें? उन्होंने कहा कि जैसा आँहज़रत (ﷺ) ने किया वैसा करें। लोगों ने कहा तो मुक़्तदी इमाम का इन्तिज़ार खड़े रहकर करते रहे या बैठ जाये। उन्होंने कहा अगर तकबीर तहरीमा हो चुकी है तो खड़े खड़े इन्तिज़ार करें वर्ना बैठ जाने में कोई क़बाहत नहीं है।

बाब 26 : आदमी यूँ कहे कि हमने नमाज़ नहीं पढ़ी तो इस तरह कहने में कोई क़बाहत नहीं है

٢٦– بَابُ قَوْلِ الرَّجُلِ: مَا صَلَّيْنَا

(641) हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शैबान ने यह्या के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सलमा से सुना, वो कहते थे कि हमें जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ग़ज़्व–ए–ख़ंदक़ के दिन हाज़िर हुए और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम अल्लाह की सूरज ग़ुरूब होने को ही था कि मैं अब अस्र की नमाज़ पढ़ सका हूँ। आप जब हाज़िरे

٦٤١– حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ يَقُولُ: أَخْبَرَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَاءَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَاللهِ مَا كِدْتُ أَنْ أُصَلِّيَ حَتَّى كَادَتِ الشَّمْسُ تَغْرُبُ،

(दीगर मक़ाम : 3667, 3669, 4452, 4455, 5710, 3668, 3680, 4453, 4454, 4457, 5711)

[أطرافه في: ٣٦٦٧، ٣٦٦٩، ٤٤٥٢، ٤٤٥٥، ٥٧١٠].

[أطرافه في: ٣٦٦٨، ٣٦٧٠، ٤٤٥٣، ٤٤٥٤، ٤٤٥٧، ٥٧١١].

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) का चेहर-ए-मुबारक खोला और आप को बोसा दिया। यहीं से बाब का तर्जुमा षाबित हुआ। वफ़ाते नबवी पर सहाबा किराम में एक तहलका मच गया था। मगर बरवक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उम्मत को सम्भाला और हक़ीक़ते हाल का इज़्हार फ़र्माया जिससे मुसलमानों में एकबारगी सुकून हो गया और सबको इस बात पर पूरा इत्मीनान हासिल हो गया कि इस्लाम अल्लाह का सच्चा दीन है वो अल्लाह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है। आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात से इस्लाम की बक़ा पर कोई अषर नहीं पड़ सकता, आप (ﷺ) रसूलों की जमाअत के एक फ़र्दे-फ़रीद हैं और दुनिया में जो भी रसूल आएँ हैं अपने अपने वक़्त पर सब दुनिया से रुख़्सत हो गये। ऐसे ही आप भी अपना मिशन पूरा करके मलअे आला से जा मिले। सल्लल लाहु अलैहि व सल्लम, अला हबीबिही व बारिक व सल्लिम। कुछ सहाबा किराम (रज़ि.) का ये ख़्याल भी हो गया था कि आँहज़रत (ﷺ) दोबारा ज़िन्दा होंगे। इसीलिये हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अल्लाह पाक आप (ﷺ) पर दो मौत तारी नहीं करेगा। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम।

1243. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने कहा, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने फ़र्माया कि मुझे ख़ारजा बिन ज़ैद बिन षाबित ने ख़बर दी कि उम्मे अलअलाअ अन्सार की एक औरत ने, जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बैअत की थी, ने उन्हें ख़बर दी कि मुहाजिरीन क़ुर्आ डालकर अन्सार में बाँट दिये गये तो हज़रत उष्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) हमारे हिस्से में आए। चुनाँचे हमने उन्हें अपने घर में रखा। आख़िर वो बीमार हुए और उसी में वफ़ात पा गये। वफ़ात के बाद ग़ुस्ल दिया गया और कफ़न में लपेट दिया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, अबू साइब! आप पर अल्लाह की रहमतें हों मेरी आपके मुता'ल्लिक़ शहादत ये है कि अल्लाह तआला ने आपकी इज़्ज़त फ़र्माई है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआला ने इनकी इज़्ज़त फ़माई है? मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हो, फिर किसकी अल्लाह तआला इज़्ज़त-अफ़ज़ाई करेगा? आपने फ़र्माया, इसमें शुब्हा नहीं कि उनकी मौत आ चुकी, क़सम अल्लाह की कि मैं भी इनके लिये ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ, लेकिन वल्लाह! मुझे खुद अपने मुता'ल्लिक़ भी मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला होगा। हालाँकि मैं

١٢٤٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ - امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّهُ اقْتُسِمَ الْمُهَاجِرُونَ قُرْعَةً، فَطَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فَأَنْزَلْنَاهُ فِي أَبْيَاتِنَا، فَوَجِعَ وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ وَغُسِّلَ وَكُفِّنَ فِي أَثْوَابِهِ دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَقُلْتُ، رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ، فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللَّهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيكِ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَكْرَمَهُ؟)) فَقُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَمَنْ يُكْرِمُهُ اللَّهُ؟ فَقَالَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ. وَاللَّهِ إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَاللَّهِ مَا أَدْرِي - وَأَنَا رَسُولُ اللَّهِ - مَا يُفْعَلُ بِي)). قَالَتْ:

1243. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ बिन सअ़द ने कहा, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने फ़र्माया कि मुझे ख़ारजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने ख़बर दी कि उम्मे अलअ़लाअ अन्स़ार की एक औ़रत ने, जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बैअ़त की थी, ने उन्हें ख़बर दी कि मुहाजिरीन क़ुर्आ डालकर अन्स़ार में बाँट दिये गये तो हज़रत उ़ष़्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) हमारे हिस्से में आए। चुनाँचे हमने उन्हें अपने घर में रखा। आख़िर वो बीमार हुए और उसी में वफ़ात पा गये। वफ़ात के बाद ग़ुस्ल दिया गया और कफ़न में लपेट दिया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, अबू साइब! आप पर अल्लाह की रहमतें हों मेरी आपके मुता'ल्लिक़ शहादत ये है कि अल्लाह तआ़ला ने आपकी इ़ज़्ज़त फ़र्माई है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने इनकी इ़ज़्ज़त फ़माई है? मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हो, फिर किसकी अल्लाह तआ़ला इ़ज़्ज़त-अफ़ज़ाई करेगा? आपने फ़र्माया, इसमें शुब्हा नहीं कि उनकी मौत आ चुकी, क़सम अल्लाह की कि मैं भी इनके लिये ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ, लेकिन वल्लाह! मुझे खुद अपने मुता'ल्लिक़ भी मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला होगा। हालाँकि मैं

١٢٤٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ - امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّهُ اقْتُسِمَ الْمُهَاجِرُونَ قُرْعَةً، فَطَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فَأَنْزَلْنَاهُ فِي أَبْيَاتِنَا، فَوَجِعَ وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ وَغُسِّلَ وَكُفِّنَ فِي أَثْوَابِهِ دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَقُلْتُ: رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ، فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللَّهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيكِ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَكْرَمَهُ؟)) فَقُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَمَنْ يُكْرِمُهُ اللَّهُ؟ فَقَالَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ. وَاللَّهِ إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَاللَّهِ مَا أَدْرِي - وَأَنَا رَسُولُ اللَّهِ - مَا يُفْعَلُ بِي)). قَالَتْ:

अल्लाह का रसूल हूँ। उम्मे अल-अ़लाअ ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! अब मैं कभी किसी के मुता'ल्लिक़ (इस तरह की) गवाही नहीं दूँगी।

فَوَاللَّهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ أَبَدًا.

तश्रीह : इस रिवायत में कई उमूर का बयान है। एक तो उसका कि जब मुहाजिरीन मदीना में आए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी परेशानी दूर करने के लिये अंसार से उनका भाईचारा क़ायम करा दिया। इस बारे में क़ुर्आ-अंदाज़ी की गई और जो मुहाजिर जिस अंसारी के हिस्से में आया वो उसके ह़वाले कर दिया गया। उन्होंने सगे भाई से ज़्यादा उनकी ख़ातिर तवाज़ोअ़ की। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ग़ुस्ल व कफ़न के बाद उ़ष़्मान बिन मज़्ऊन को देखा। ह़दीष़ से ये भी निकला कि किसी भी बन्दे के बारे में ह़क़ीक़त का इ़ल्म अल्लाह ही को ह़ासिल है। हमें अपने ज़न्न के मुत़ाबिक़ उनके ह़क़ में नेक गुमान करना चाहिये। ह़क़ीक़ते ह़ाल को अल्लाह के ह़वाले करना चाहिये।

कई मुआनिदीने इस्लाम ने यहाँ ए'तिराज़ किया है कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) को ख़ुद अपनी भी नजात का यक़ीन न था तो आप अपनी उम्मत की क्या सिफ़ारिश करेंगे।

इस ए'तिराज़ के जवाब में पहली बात जो ये है कि आँह़ज़रत (ﷺ) का ये इर्शाद गिरामी इब्तिदा-ए-इस्लाम का है, बाद में अल्लाह ने आपको सूरह फ़तह़ में ये बशारत दी कि आपके अगले और पिछले गुनाह बख़्श दिये गये तो ये ए'तिराज़ ख़ुद दूर हो गया और ष़ाबित हुआ कि उसके बाद आपको अपनी नजात के बारे में यक़ीने कामिल ह़ासिल हो गया था। फिर भी शाने बन्दगी उसको मुस्तलज़िम है कि परवारदिगार की शाने स़मदियत हमेशा मल्ह़ूज़े ख़ातिर रहे। आप (ﷺ) का शफ़ाअ़त करना बरह़क़ है बल्कि शफ़ाअ़ते क़ुबरा का मुक़ामे मह़मूद आप (ﷺ) को ह़ासिल है।

अल्लाह का रसूल हूँ। उम्मे अल-अलाअ ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! अब मैं कभी किसी के मुता'ल्लिक़ (इस तरह की) गवाही नहीं दूँगी।

فَوَ اللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ أَبَدًا.

तशरीह : इस रिवायत में कई उमूर का बयान है। एक तो उसका कि जब मुहाजिरीन मदीना में आए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी परेशानी दूर करने के लिये अंस़ार से उनका भाईचारा क़ायम करा दिया। इस बारे में क़ुर्आ-अंदाज़ी की गई और जो मुहाजिर जिस अंसारी के ह़िस़्से में आया वो उसके ह़वाले कर दिया गया। उन्होंने सगे भाई से ज़्यादा उनकी ख़ातिर तवाजोअ़ की। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने गुस्ल व कफ़न के बाद उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न को देखा। ह़दीष़ से ये भी निकला कि किसी भी बन्दे के बारे में ह़क़ीक़त का इल्म अल्लाह ही को ह़ासिल है। हमें अपने ज़न्न के मुत़ाबिक़ उनके ह़क़ में नेक गुमान करना चाहिये। ह़क़ीक़ते ह़ाल को अल्लाह के ह़वाले करना चाहिये।

कई मुआनिदीने इस्लाम ने यहाँ ए'तिराज़ किया है कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) को ख़ुद अपनी भी नजात का यक़ीन न था तो आप अपनी उम्मत की क्या सिफ़ारिश करेंगे।

इस ए'तिराज़ के जवाब में पहली बात जो ये है कि आँह़ज़रत (ﷺ) का ये इर्शाद गिरामी इब्तिदा-ए-इस्लाम का है, बाद में अल्लाह ने आपको सूरह फ़तह़ में ये बशारत दी कि आपके अगले और पिछले गुनाह बख़्श दिये गये तो ये ए'तिराज़ ख़ुद दूर हो गया और ष़ाबित हुआ कि उसके बाद आपको अपनी नजात के बारे में यक़ीने कामिल ह़ासिल हो गया था। फिर भी शाने बन्दगी उसको मुस्तलज़िम है कि परवारदिगार की शाने स़मदियत हमेशा मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रहे। आप (ﷺ) का शफ़ाअ़त करना बरहक़ है बल्कि शफ़ाअ़ते कुबरा का मुक़ामे मह़मूद आप (ﷺ) को ह़ासिल है।

हमसे सईद बिन ड़फ़ैर ने बयान किया और उनसे लैष़ ने साबिक़ा रिवायत की त़रह बयान किया, नाफ़ेअ़ बिन यज़ीद ने अ़क़ील से (मा युफ़्अलु बी के बजाय) मा युफ़्अलु बिही के अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं और इस रिवायत की मुताबअ़त शुऐब, अ़म्र बिन दीनार और मअ़मर ने की है।

(दीगर मक़ाम : 2678, 3929, 7003, 7004, 7018)

حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ..مِثْلَهُ. وَقَالَ نَافِعُ بْنُ يَزِيْدَ عَنْ عُقَيْلٍ: مَا يُفْعَلُ بِهِ.وَتَابَعَهُ شُعَيْبٌ وَعَمْرُو بْنُ دِيْنَارٍ وَمَعْمَرٌ.

[أطرافه في : ٢٦٨٧، ٣٩٢٩، ٧٠٠٣، ٧٠٠٤، ٧٠١٨].

इस सूरत में तर्जुमा ये होगा कि क़सम अल्लाह की मैं नहीं जानता कि उसके साथ क्या मुआमला किया जाएगा। ह़ालाँकि उसके ह़क़ में मेरा गुमान नेक है।

1244. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मुह़म्मद बिन मुन्कदिर से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जब मेरे वालिद शहीद कर दिये गये तो उनके चेहरे पर पड़ा हुआ कपड़ा खोलता और रोता था। दूसरे लोग तो मुझे इससे रोकते थे लेकिन नबी करीम (ﷺ) कुछ नहीं कह रहे थे। आख़िर मेरी चची फ़ातिमा (रज़ि.) भी रोन

١٢٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ : حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((لَمَّا قُتِلَ أَبِي جَعَلْتُ أَكْشِفُ الثَّوْبَ عَنْ وَجْهِهِ أَبْكِي، وَيَنْهَوْنِي عَنْهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ لاَ يَنْهَانِي، فَجَعَلَتْ عَمَّتِي

रिवायाते बाला में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह ने जो ये फ़र्माया कि ये सुन्नत और ह़क़ है उसकी वज़ाह़त ह़ज़रत मौलाना शैख़ुल ह़दीष़ (रह.) ने यूँ फ़र्माई है,

वल्मुरादु बिस्सुन्नतित्तरीक़तिल्मालूफ़ति अन्हु (ﷺ) ला मा युक़ाबिलुल्फ़रीज़त फ़इन्नहू इस्तिलाहुन उर्फ़ियुन हादिषुन फ़क़ाल अल्अशरफ़ुज़्ज़मीरुल्मुअन्नषु लिकिरातिल्फ़ातिहति वलैसल्मुरादु बिसुन्नति इन्नहा लैसत बिवाजिबतिन बल मा युकाबिलुल्बिदअत अय इन्नहा तरीकतुन मर्बिय्यतुन व कालल्कस्तलानी अन्नहा अय किरातल्फ़ातिहति फ़िल्जनाजति सुन्नतुन अय तरीक़तुश्शारिइ फला युनाफ़ी कौनुह वाजिबतन व क़द उलिम अन्न कौलस्सहाबी मिनस्सुन्नति कज़ा हदीषुन मर्फ़ूउन इन्दल्अक्षरि क़ालश्शाफ़िइ फिल्उम्मि व अस्हाबुन्नबिय्यि (ﷺ) ला यकूलून अस्सुन्नतु रसूलिल्लाहि (ﷺ) इन्शाअल्लाहु इन्तिहा (मिर्आतुल मफ़ातीह, पेज 477)

या'नी यहाँ लफ़्ज़े सुन्नत से त़रीक़-ए-मालूफ़ा नबी करीम (ﷺ) मुराद है न वो सुन्नत जो फ़र्ज़ के मुक़ाबले पर होती है। ये एक उ़र्फ़ी इस्तिलाह़ इस्ते'माल की गई है ये मुराद नहीं कि ये वाजिब नहीं है बल्कि सुन्नत मुराद है जो बिदअ़त के मुक़ाबले पर बोली जाती है। या'नी ये त़रीक़ा मरविया है और क़स्त़लानी (रह) ने कहा कि जनाज़ा में सूरह फ़ातिह़ा पढ़नी सुन्नत है या'नी शारेअ़ का त़रीक़ा है और ये वाजिब होने की मनाफ़ी नहीं है। इमाम शाफ़िई (रह) ने किताबुल उम्म में फ़र्माया है कि सह़ाबा किराम (रिज़.) लफ़्ज़े सुन्नत का इस्ते'माल सुन्नत त़रीक़ा रसूलुल्लाह (ﷺ) पर करते थे। अक़्वाले स़ह़ाबा में ह़दीषे़ मर्फ़ूअ़ पर भी सुन्नत का लफ़्ज़ बोला गया। बहरह़ाल यहाँ सुन्नत से मुराद ये है कि सूरह फ़ातिह़ा नमाज़ में पढ़ना त़रीक़-ए-नबवी है और ये वाजिब है कि उसके पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती जैसा कि ऊपर वाली तफ़्स़ील में बयान किया गया है।

बाब 66 : मुर्दे को दफ़न करने के बाद क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना

٦٦- بَابُ الصَّلاَةِ عَلَى الْقَبْرِ بَعْدَ مَا يُدْفَنُ

1336. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअ़बी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे उस स़ह़ाबी ने ख़बर दी जो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक अलग-थलग क़ब्र से गुज़र रहे थे। क़ब्र पर आप (ﷺ) इमाम बने और स़ह़ाबा ने आपके पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। शैबानी ने कहा कि मैंने शुअ़बी से पूछा कि अबू अ़म्र! आप से किस स़ह़ाबी ने बयान किया था, तो उन्होंने बतलाया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने। (राजेअ़ : 875)

١٣٣٦- حدَّثنا حَجَّاجُ بنُ مِنهالٍ قَالَ: حدَّثنا شُعبةُ قَالَ: حدَّثني سُليمانُ الشَّيبانيُّ قَالَ: سَمِعتُ الشَّعبيَّ قَالَ: ((أخبَرَني مَنْ مَرَّ مَعَ النبيِّ ﷺ عَلَى قَبرٍ مَنبُوذٍ فَأمَّهُمْ وصَلَّوا خَلفَهُ. قُلتُ: مَنْ حَدَّثَكَ هَذا يا أبا عَمرٍو؟ قَالَ: ابنُ عبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنهُمَا)). [راجع: ٨٥٧]

1337. हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने बयान किया, उनसे अबू राफ़ेअ़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि काले रंग का एक मर्द या काले रंग की एक औ़रत मस्जिद में ख़िदमत किया करती थी, उनकी वफ़ात हो गई। लेकिन नबी करीम (ﷺ) को किसी ने ख़बर नहीं दी। एक दिन आपने खुद याद फ़र्माया कि वो शख़्स़ दिखाई नहीं देता। स़ह़ाबा ने

١٣٣٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ أَسْوَدَ - رَجُلاً أَوْ امْرَأَةً - كَانَ يَقُمُّ الْمَسْجِدَ، فَمَاتَ، وَلَمْ يَعْلَمِ النَّبِيُّ ﷺ بِمَوْتِهِ، فَذَكَرَهُ ذَاتَ يَوْمٍ فَقَالَ عَلَيْهِ



١٣٣٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ أَسْوَدَ - رَجُلاً أَوْ امْرَأَةً - كَانَ يَقُمُّ الْمَسْجِدَ، فَمَاتَ، وَلَمْ يَعْلَمِ النَّبِيُّ ﷺ بِمَوْتِهِ، فَذَكَرَهُ ذَاتَ يَوْمٍ فَقَالَ عَلَيْهِ

1337. हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने बयान किया, उनसे अबू राफ़ेअ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि काले रंग का एक मर्द या काले रंग की एक औरत मस्जिद में ख़िदमत किया करती थी, उनकी वफ़ात हो गई। लेकिन नबी करीम (ﷺ) को किसी ने ख़बर नहीं दी। एक दिन आपने खुद याद फ़र्माया कि वो शख़्स दिखाई नहीं देता। सहाबा ने

السَّلاَمُ وَالسَّلاَمُ: مَا فَعَلَ ذَلِكَ الإِنْسَانُ؟ قَالُوا: مَاتَ يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ: ((أَفَلاَ آذَنْتُمُونِي؟)) فَقَالُوا : إِنَّهُ كَانَ كَذَا وَكَذَا - قِصَّتُهُ - قَالَ فَحَقَرُوا شَأْنَهُ. قَالَ: ((فَدُلُّونِي عَلَى قَبْرِهِ)). فَأَتَى قَبْرَهُ فَصَلَّى عَلَيْهِ. [راجع: ٤٥٨]

कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! उनका इन्तिक़ाल हो गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तुमने मुझे ख़बर क्यों नहीं दी? सहाबा ने अर्ज़ किया कि ये वजह थी (इसलिये आपको तकलीफ़ नहीं दी गई) गोया लोगों ने उनको हक़ीर जानकर क़ाबिले तवज्जह नहीं समझा। लेकिन आपने फ़र्माया कि चलो मुझे उनकी क़ब्र बता दो। चुनाँचे आप उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। (राजेअ : 458)

तश्रीह : ये काला मर्द या काली औरत मस्जिदे नबवी की जारूबकश बड़े-ब ड़े बादशाहाने हफ़्ते अक़्लीम से अल्लाह के नज़दीक मर्तबे और दर्जे में ज़ाइद थी। हबीबुल्लाह (ﷺ) ने ढूँढ़कर उसकी क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी। वाह रे क़िस्मत! आपकी कफ़श-बरदारी अगर हमको बहिश्त में नसीब हो जाए तो ऐसी दुनिया की लाखों सल्तनतें इस पर तस्दीक़ कर दें। (वहीदी)

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने उससे षाबित फ़र्माया कि अगर किसी मुसलमान मर्द या औरत का जनाज़ा न पढ़ा गया हो तो क़ब्र पर दफ़न करने के बाद भी पढ़ा जा सकता है। कुछ ने उसे नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ास कर दिया है मगर दा'वा बेदलील है।

कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! उनका इन्तिक़ाल हो गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तुमने मुझे ख़बर क्यों नहीं दी? सहाबा ने अर्ज़ किया कि ये वजह थी (इसलिये आपको तकलीफ़ नहीं दी गई) गोया लोगों ने उनको हक़ीर जानकर क़ाबिले तवज्जह नहीं समझा। लेकिन आपने फ़र्माया कि चलो मुझे उनकी क़ब्र बता दो। चुनाँचे आप उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। (राजेअ : 458)

السَّلَامُ وَالسَّلَامُ: مَا فَعَلَ ذَلِكَ الإِنْسَانُ؟ قَالُوا: مَاتَ يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ: ((أَفَلاَ آذَنْتُمُونِي؟)) فَقَالُوا : إِنَّهُ كَانَ كَذَا وَكَذَا - قِصَّتُهُ - قَالَ فَحَقَّرُوا شَأْنَهُ. قَالَ: ((فَدُلُّونِي عَلَى قَبْرِهِ)). فَأَتَى قَبْرَهُ فَصَلَّى عَلَيْهِ. [راجع: ٤٥٨]

तशरीह : ये काला मर्द या काली औरत मस्जिदे नबवी की जारूबकश बड़े-बड़े बादशाहाने हफ़्ते अक़्लीम से अल्लाह के नज़दीक मर्तबे और दर्जे में ज़ाइद थी। हबीबुल्लाह (ﷺ) ने ढूँढ़कर उसकी क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी। वाह रे क़िस्मत! आपकी कफ़श-बरदारी अगर हमको बहिश्त में नसीब हो जाए तो ऐसी दुनिया की लाखों सल्तनतें इस पर तस्दीक़ कर दें। (वहीदी)

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने उससे षाबित फ़र्माया कि अगर किसी मुसलमान मर्द या औरत का जनाज़ा न पढ़ा गया हो तो क़ब्र पर दफ़न करने के बाद भी पढ़ा जा सकता है। कुछ ने उसे नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ास कर दिया है मगर दा'वा बेदलील है।

बाब 68 : इस बयान में कि मुर्दा लौटकर जाने वालों के जूतों की आवाज़ सुनता है

٦٧- بَابُ الْمَيِّتُ يَسْمَعُ خَفْقَ النِّعَالِ

यहाँ से ये निकला कि क़ब्रिस्तान में जूते पहनकर जाना जाइज़ है। इब्ने मुनीर ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह) ने ये बाब इसलिये क़ायम किया कि दफ़न के आदाब का लिहाज़ रखें और शोरो-गुल और ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से चलने से परहेज़ करें जैसे ज़िन्दा सोते आदमी के साथ करता है।

1338. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा कि मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन ज़रिअ ने, उनसे सईद बिन अबी अरूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी जब क़ब्र में रखा जाता है और दफ़न करके उसके लोग-बाग पीठ मोड़कर रुख़सत होते हैं तो उनके जूतों की आवाज़ सुनता है। फिर दो फ़रिश्ते आते हैं, उसे उठाते हैं और पूछते हैं कि उस शख़्स (मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ) के मुता'ल्लिक़ तुम्हारा क्या ए'तिक़ाद है? वो जब जवाब देता है कि मैं गवाही देता हूँ कि वो अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। इस जवाब पर उससे कहा जाता है कि ये देख जहन्नम का अपना एक ठिकाना लेकिन अल्लाह तआला ने जन्नत में तेरे लिये एक मकान इसके बदले में बना दिया है। नबी करीम

١٣٣٨- حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ ح.. وَقَالَ لِي خَلِيْفَةُ: قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((الْعَبْدُ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتُوُلِّيَ وَذَهَبَ أَصْحَابُهُ - حَتَّى إِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ - أَتَاهُ مَلَكَانِ فَأَقْعَدَاهُ، فَيَقُولاَنِ لَهُ : لَهُ مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ مُحَمَّدٍ ﷺ؟ فَيَقُولُ: أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ. فَيُقَالُ: أُنْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، أَبْدَلَكَ اللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ)). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَيَرَاهُمَا

या'नी जब ज़ुबान पर तस्बीह़ जारी हो और दिल घर के जानवरों में लगा हुआ हो तो ऐसी तस्बीह़ क्या अष़र पैदा कर सकती है। ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) के अष़रे मज़कूर को इब्ने अबी शैबा ने बइस्नादे स़ह़ीह़ रिवायत किया है। ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) को अल्लाह ने अपने दीन की ख़िदमत व नुस़रत के लिये पैदा फ़र्माया था। उनको नमाज़ में भी वही ख़्यालात दामनगीर रहते थे, नमाज़ में जिहाद के लिये फ़ौजकशी और जंगी तदबीरें सोचते थे चूँकि नमाज़ नफ़्स और शैत़ान के साथ जिहाद है और उन ह़र्बी तदाबीर को सोचना भी अज़ क़िस्मे जिहाद है लिहाज़ा मुफ़्सिदे नमाज़ नहीं। (ह़वाशी सल्फ़िया, पारा नं. 5 पेज नं. 443)

1221. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा कि हमसे रौह बिन ड़बादा ने, कहा कि हमसे ड़मर ने जो सईद के बेटे हैं, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ अ़स्र की नमाज़ पढ़ी, आप (ﷺ) सलाम फेरते ही बड़ी तेज़ी से उठे और अपनी एक बीवी के हुज्रे में तशरीफ़ ले गये, फिर बाहर तशरीफ़ लाए। आपने अपनी जल्दी पर इस ता'ज्जुब व ह़ैरत को मह़सूस किया जो स़ह़ाबा के चेहरे से ज़ाहिर हो रहा था, इसलिये आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नमाज़ में मुझे सोने का एक डला याद आ गया जो हमारे पास तक़्सीम से बाक़ी रह गया था। मुझे बुरा मा'लूम हुआ कि हमारे पास वो शाम तक या रात तक रह जाए। इसलिये मैंने उसे तक़्सीम करने का हुक्म दे दिया। (राजेअ़ : 851)

١٢٢١ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحٌ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعَصْرَ فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ سَرِيعًا وَدَخَلَ عَلَى بَعْضِ نِسَائِهِ، ثُمَّ خَرَجَ وَرَأَى مَا فِي وُجُوهِ الْقَوْمِ مِنْ تَعَجُّبِهِمْ لِسُرْعَتِهِ فَقَالَ: ((ذَكَرْتُ - وَأَنَا فِي الصَّلاَةِ - تِبْرًا عِنْدَنَا فَكَرِهْتُ أَنْ يُمْسِيَ - أَوْ يَبِيتَ - عِنْدَنَا، فَأَمَرْتُ بِقِسْمَتِهِ)). [راجع: ٨٥١]

नमाज़ में आँह़ज़रत (ﷺ) को सोने का बक़ाया डला तक़्सीम के लिये याद आ गया यहीं से बाब का मत़लब ष़ाबित होता है।

1222. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ ने उनसे जा'फ़र बिन रबीआ ने और उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती तो शैतान पीठ मोड़ कर हवा ख़ारिज करता हुआ भाग जाता है ताकि अज़ान न सुन सके। जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है तो मर्दूद फिर आ जाता है और जब जमाअ़त खड़ी होने लगती है (और तक्बीर कही जाती है) तो फिर भाग जाता है। लेकिन जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है, फिर आ जाता है और आदमी के दिल में बराबर वस्वसा पैदा करता रहता है। कहता है कि (फलाँ-फलाँ बात) याद कर। कमबख़्त वो बातें याद दिलाता है जो उस नमाज़ी के ज़हन में भी न थी। इस त़रह नमाज़ी को ये भी याद नहीं रहता कि उसने कितनी रकअ़तें पढ़ी है। अबू सलमा अ़ब्दुर्रह़मान न

١٢٢٢ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرٍ عَنِ الأَعْرَجِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أُذِّنَ بِالصَّلاَةِ أَدْبَرَ الشَّيْطَانُ لَهُ ضُرَاطٌ حَتَّى لاَ يَسْمَعَ التَّأْذِينَ، فَإِذَا سَكَتَ الْمُؤَذِّنُ أَقْبَلَ، فَإِذَا ثُوِّبَ أَدْبَرَ، فَإِذَا سَكَتَ أَقْبَلَ، فَلاَ يَزَالُ بِالْمَرْءِ يَقُولُ لَهُ اذْكُرْ مَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ حَتَّى لاَ يَدْرِي كَمْ صَلَّى)). قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: إِذَا فَعَلَ أَحَدُكُمْ ذَلِكَ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ قَاعِدٌ،

(ﷺ) की राफ़्त और रहमत पर भी रोशनी पड़ती है कि आप (ﷺ) को किसी का भूखा रहना गवारा न था। एक अल्लाह वाले बुज़ुर्ग इंसान की यही शान होनी चाहिये।

बाब 15 : अल्लाह तआला का सूरह बक़र: में ये फ़र्माना, और वो बड़ा सख़्त झगड़ालू है

١٥- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ﴾ [البقرة: ٢٠٤]

2457. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला के यहाँ सबसे ज़्यादा नापसन्द वो आदमी है जो सख़्त झगड़ालू हो। (दीगर मक़ाम : 4523, 7188)

٢٤٥٧- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى اللهِ الأَلَدُّ الْخَصِمُ)).

[طرفاه في: ٤٥٢٣، ٧١٨٨].

कुछ बदबख़्तों की फ़ितरत होती है कि वो ज़रा–ज़रा सी बातों में झगड़ा फ़साद करते रहते हैं। ऐसे लोग अल्लाह के नज़दीक बहुत ही बुरे हैं। पूरी आयत का तर्जुमा यूँ है, लोगों में कोई ऐसा है जिसकी बात दुनिया की ज़िन्दगी में तुझको भली लगती है और अपने दिल की हालत पर अल्लाह को गवाह करता है हालाँकि वो सख़्त झगड़ालू है। कहते हैं ये आयत अख़्नस बिन शुरैक़ के हक़ में उतरी। वो आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और इस्लाम का दा'वा करके मीठी बातें करने लगा। जबकि दिल में निफ़ाक़ रखता था (वहीदी)

बाब 16 : उस शख़्स का गुनाह, जो जान–बूझकर झूठ के लिये झगड़ा करे

١٦- باب إِثْمِ مَنْ خَاصَمَ فِي بَاطِلٍ وَهُوَ يَعلَمُه

2458. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन कैसान ने और उनसे इब्ने शिहाब ने कि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत्तह्हरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने हुज्रे के दरवाज़े के सामने झगड़े की आवाज़ें सुनी और झगड़ा करने वालों के पास तशरीफ़ लाए। आपने उनसे फ़र्माया कि मैं भी एक इंसान हूँ। इसलिये जब मेरे यहाँ कोई झगड़ा लेकर आता है तो हो सकता है कि (फ़रीक़ैन में से) एक फ़रीक़ की बह्स दूसरे फ़रीक़ से ज़्यादा बेहतर हो, मैं समझता हूँ कि वो सच्चा है। और इस तरह मैं उसके हक़ में फ़ैसला कर देता हूँ। लेकिन अगर मैं उसको (उसके ज़ाहिरी बयान पर भरोसा करके) किसी मुसलमान का हक़ दिला दूँ तो दोज़ख़ का एक टुकड़ा उसको दिला रहा हूँ, वो ले ले या छोड़ दे।

٢٤٥٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أُمِّ سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّهَا أُمَّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ: أَنَّهُ سَمِعَ خُصُومَةً بِبَابِ حُجْرَتِهِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّهُ يَأْتِينِي الْخَصْمُ، فَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَبْلَغَ مِنْ بَعْضٍ، فَأَحْسِبُ أَنَّهُ صَدَقَ فَأَقْضِي لَهُ بِذَلِكَ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ مُسْلِمٍ فَإِنَّمَا هِيَ قِطْعَةٌ مِنَ النَّارِ، فَلْيَأْخُذْهَا أَوْ فَلْيَتْرُكْهَا)).

कराया दिया। (राजेअ : 88) M-09825696131 [راجع: ٨٨]

बाब का तर्जुमा इस तरह षाबित हुआ कि उक़्बा और उसकी अहलिया के अज़ीज़ का बयान नफ़ी में था और दूध पिलाने वाली औरत का बयान इष्बात में था। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी औरत की गवाही क़ुबूल फ़र्माई। मा'लूम हुआ कि गवाही में इष्बात नफ़ी पर मुक़द्दम है।

बाब 5 : गवाह आदिल, मो'तबर होने ज़रूरी हैं

٥- بَابُ الشُّهَدَاءِ الْعُدُول

और अल्लाह तआला ने सूरह तलाक़ में फ़र्माया, कि अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो, और अल्लाह तआला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया कि) गवाहों में से जिन्हें तुम पसन्द करो।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَأَشْهِدُوا ذَوَي عَدْلٍ مِنْكُمْ﴾ -و- ﴿مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ﴾ [الطلاق: ٢ والبقرة: ٢٨٢]

2641. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी ज़ुहरी से, कहा कि मुझसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने और उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में लोगों का वह्य के ज़रिये मुआख़ज़ा हो जाता था। लेकिन अब वह्य का सिलसिला ख़त्म हो गया और हम सिर्फ़ उन्हीं उमूर में मुआख़िज़ा करेंगे जो तुम्हारे अमल से हमारे सामने ज़ाहिर होंगे। इसलिये जो कोई ज़ाहिर में हमारे सामने ख़ैर करेगा, हम उसे अमन देंगे और अपने क़रीब रखेंगे। उसके बातिन से हमें कोई सरोकार नहीं होगा। उसका हिसाब तो अल्लाह तआला करेगा और जो कोई हमारे सामने ज़ाहिर में बुराई करेगा तो हम भी उसे अमन नहीं देंगे और न हम उसकी तस्दीक़ करेंगे ख़्वाह वो यही कहता रहे कि उसका बातिन अच्छा है।

٢٦٤١- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوفٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُتْبَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((إِنَّ أُنَاسًا كَانُوا يُؤْخَذُونَ بِالْوَحْيِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَإِنَّ الْوَحْيَ قَدِ انْقَطَعَ، وَإِنَّمَا نَأْخُذُكُمُ الآنَ بِمَا ظَهَرَ لَنَا مِنْ أَعْمَالِكُمْ، فَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا خَيْرًا أَمِنَّاهُ وَقَرَّبْنَاهُ وَلَيْسَ إِلَيْنَا مِنْ سَرِيرَتِهِ شَيْءٌ، اللهُ يُحَاسِبُهُ فِي سَرِيرَتِهِ. وَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا سُوءًا لَمْ نَأْمَنْهُ وَلَمْ نُصَدِّقْهُ وَإِنْ قَالَ إِنَّ سَرِيرَتَهُ حَسَنَةٌ)).

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) के क़ौल से उनके बुक़ूफ़ों का रद्द हुआ जो एक बदकार फ़ासिक़ को दरवेश और वली समझें और ये दा'वा करें कि ज़ाहिर आमाल से किया होता है, दिल अच्छा होना चाहिये। कहो, जब हज़रत उमर (रज़ि.) ऐसे शख़्स को दिल का हाल मा'लूम नहीं हो सकता था तो तुम बेचारे किस खेत की मूली है। दिल का हाल बजुज़ अल्लाह करीम के कोई नहीं जानता। नबी करीम (ﷺ) को भी उसका इल्म वह्य या'नी अल्लाह के बतलाने से होता। हज़रत उमर (रज़ि.) ने क़ायदा बयान किया कि ज़ाहिर की रू से जिसके आमाल शरअ के मुवाफ़िक़ हों उसको अच्छा समझो और जिसके आमाल शरअ के ख़िलाफ़ हों उनको बुरा समझो। अब अगर उसका दिल बिल फ़र्ज़ अच्छा भी होगा जब भी हम उसके बुरा समझने में कोई मुआख़िज़ा वार न होंगे क्योंकि हमने शरीअत के क़ायदे पर अमल किया। अल्बत्ता हम अगर उसको अच्छा समझेंगे तो गुनाहगार होंगे। (वहीदी)

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि फ़ासिक़, बदकार की बात न मा'नी जाएगी या'नी उसकी शहादत मक़्बूल न होगी। मा'लूम हुआ कि शाहिद के लिये अदालत ज़रूरी है। अदालत से मुराद ये है कि मुसलमान आज़ाद, आक़िल, बालिग़, नेक

मुस्कुरा रहे थे, मैंने अ़र्ज़ किया कि आप (ﷺ) किस बात पर हंस रहे हैं? फ़र्माया मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने पेश किये गये जो ग़ज़्वा करने के लिये उस बहते दरिया पर सवार होकर जा रहे थे जैसे बादशाह तख़्त पर चढ़ते हैं। मैंने अ़र्ज़ किया फिर आप (ﷺ) मेरे लिये भी दुआ़ कर दीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन्हीं में से बना दे। आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ़ की। फिर दोबारा आप (ﷺ) सो गए और पहले की त़रह इस बार भी किया (बेदार होते हुए मुस्कुराए) उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने पहले ही की त़रह इस बार भी अ़र्ज़ किया और आप (ﷺ) ने वही जवाब दिया। उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया आप दुआ़ कर दें कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन्हीं में से बना दे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम सबसे पहले लश्कर के साथ होगी चुनाँचे वो अपने शौहर उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) के साथ मुसलमानों के सबसे पहले बह़री (समन्दरी) बेड़े में शरीक हुईं। मुआ़विया (रज़ि.) के ज़माने में ग़ज़्वा से लौटते वक़्त जब शाम के साहिल पर लश्कर उतरा तो उम्मे ह़राम (रज़ि.) के क़रीब एक सवारी लाई गई ताकि उस पर सवार हो जाएँ लेकिन जानवर ने उन्हें गिरा दिया और उसी में उनका इंतिक़ाल हो गया।
(राजेअ़ : 2788, 2789)

اسْتَيْقَظَ يَتَبَسَّمُ، فَقُلْتُ: مَا أَضْحَكَكَ؟ قَالَ: ((أُنَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ يَرْكَبُونَ هَذَا الْبَحْرَ الأَخْضَرَ كَالْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ))، قَالَ: فَادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَدَعَا لَهَا. ثُمَّ نَامَ الثَّانِيَةَ، فَفَعَلَ مِثْلَهَا، فَقَالَتْ: مِثْلَ قَوْلِهَا، فَأَجَابَهَا مِثْلَهَا، فَقَالَتْ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَقَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ)). فَخَرَجَتْ مَعَ زَوْجِهَا عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ غَازِيًا أَوَّلَ مَا رَكِبَ الْمُسْلِمُونَ الْبَحْرَ مَعَ مُعَاوِيَةَ، فَلَمَّا انْصَرَفُوا مِنْ غَزْوِهِمْ قَافِلِينَ فَنَزَلُوا الشَّامَ فَقُرِّبَتْ إِلَيْهَا دَابَّةٌ لِتَرْكَبَهَا فَصَرَعَتْهَا فَمَاتَتْ)).
[راجع: ٢٧٨٨، ٢٧٨٩]

अंबिया के ख़्वाब भी वह्य और इल्हाम होते हैं। आपने ख़्वाब में देखा कि आपकी उम्मत के कुछ लोग बड़ी शान और शौकत के साथ बादशाहों की त़रह़ समुन्दर पर सवार हो रहे हैं। आख़िर आप (ﷺ) का ये ख़्वाब पूरा हुआ और मुसलमानों ने अ़हदे मुआ़विया (रज़ि.) में बह़री बेड़े तैयार करके शाम (सीरिया) पर ह़मला किया, बाब का तर्जुमा इस त़रह़ निकला कि उम्मे ह़राम (रज़ि.) अगरचे जानवर से गिरकर मरीं मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको मुजाहिदीन में शामिल फ़र्माया और अन्त मिनल् अव्वलीन से आपने पेशीनगोई फ़र्माई।

बाब 9 : जिसको अल्लाह की राह में तकलीफ़ पहुँचे (या'नी उसके किसी अ़ज़्व को स़दमा हो)

٩- بَابُ مَنْ يُنْكَبُ أَوْ يُطْعَنُ فِي سَبِيلِ اللهِ

2801. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर हौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने, उनसे इस्ह़ाक़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू सुलैम के सत्तर आदमी (जो क़ारी थे) बनू आमिर के यहाँ भेजे। जब ये सब ह़ज़रात (बीरे मऊ़ना पर) पहुँचे तो मेरे मामू ह़राम बिन मिलह़ान (रज़ि.) ने कहा मैं (बनू सुलैम के यहाँ) आगे जाता हूँ अगर मुझे उन्होंने इस बात का अमन दे दिया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें उन तक

٢٨٠١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ الْحَوْضِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْوَامًا مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ إِلَى بَنِي عَامِرٍ فِي سَبْعِينَ، فَلَمَّا قَدِمُوا قَالَ لَهُمْ خَالِي: أَتَقَدَّمُكُمْ، فَإِنْ

बाब 9 : जिसको अल्लाह की राह में तकलीफ़ पहुँचे (या'नी उसके किसी अ़ज़्व को सदमा हो)

٩- بَابُ مَنْ يُنْكَبُ أَوْ يُطْعَنُ فِي سَبِيلِ اللهِ

2801. हमसे ह़फ़्स बिन उ़मर हौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने, उनसे इस्हाक़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू सुलैम के सत्तर आदमी (जो क़ारी थे) बनू आ़मिर के यहाँ भेजे। जब ये सब ह़ज़रात (बीरे मऊ़ना पर) पहुँचे तो मेरे मामू ह़राम बिन मिलह़ान (रज़ि.) ने कहा मैं (बनू सुलैम के यहाँ) आगे जाता हूँ अगर मुझे उन्हों ने इस बात का अमन दे दिया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें उन तक

٢٨٠١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ الْحَوْضِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْوَامًا مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ إِلَى بَنِي عَامِرٍ فِي سَبْعِينَ، فَلَمَّا قَدِمُوا قَالَ لَهُمْ خَالِي: أَتَقَدَّمُكُمْ، فَإِنْ

पहुँचाऊँ ता बेहतर वरना तुम लोग मेरे क़रीब तो हो ही। चुनाँचे वो उनके यहाँ गये और उन्होंने अमन भी दे दिया। अभी वो क़बीले के लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें सुना ही रहे थे कि क़बीले वालों ने अपने एक आदमी (आ़मिर बिन तुफ़ैल) को इशारा किया और उसने आप (रज़ि.) के बरछा मारा जो जिस्म में आर-पार हो गया। उस वक़्त उनकी ज़ुबान से निकला, अल्लाहु अकबर! मैं कामयाब हो गया का'बा के रब की क़सम! उसके बाद क़बीले वाले ह़राम (रज़ि.) के दूसरे साथियों की त़रफ़ (जो सत्तर की ता'दाद में थे) बढ़े और सबको क़त्ल कर दिया। अल्बत्ता एक साह़ब जो लंगड़े थे, पहाड़ पर चढ़ गए। हम्माम (ह़दीष़ के रावी) ने बयान किया मैं समझता हूँ कि एक साहब और उनके साथी (पहाड़ पर चढ़े थे) (अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी) उसके बाद जिब्रईल ने नबी करीम (ﷺ) को ख़बर दी कि आपके साथी अल्लाह तआ़ला से जा मिले हैं, पस अल्लाह ख़ुद भी उनसे ख़ुश है और उन्हें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद हम (क़ुर्आन की दूसरी आयतों के साथ ये आयत भी) पढ़ते थे (तर्जुमा) हमारी क़ौम के लोगों को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं, पस हमारा रब ख़ुद भी ख़ुश है और हमें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद ये मन्सूख़ हो गई, नबी करीम (ﷺ) ने चालीस दिन तक सुबह की नमाज़ में क़बीला रअ़ल, ज़क्वान, बनी लह़यान और बनी उ़सय्या के लिये बद् दुआ़ की थी जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) की नाफ़र्मानी की थी। (राजेअ़ : 1001)

أَمَّنُونِي حَتَّى أُبَلِّغَهُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلَّا كُنْتُمْ مِنِّي قَرِيبًا. فَتَقَدَّمَ فَأَمَّنُوهُ، فَبَيْنَمَا يُحَدِّثُهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَوْمَؤُوا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ فَطَعَنَهُ فَأَنْفَذَهُ، فَقَالَ: اللهُ أَكْبَرُ، فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ. ثُمَّ مَالُوا عَلَى بَقِيَّةِ أَصْحَابِهِ فَقَتَلُوهُمْ إِلَّا رَجُلًا أَعْرَجَ صَعِدَ الْجَبَلَ، قَالَ هَمَّامٌ: فَأُرَاهُ آخَرَ مَعَهُ، فَأَخْبَرَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهُمْ قَدْ لَقُوا رَبَّهُمْ فَرَضِيَ عَنْهُمْ وَأَرْضَاهُمْ، فَكُنَّا نَقْرَأُ أَنْ بَلِّغُوا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا، ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ، فَدَعَا عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا: عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَبَنِي لِحْيَانَ وَبَنِي عُصَيَّةَ الَّذِينَ عَصَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[راجع: ١٠٠١]

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ ने कहा उसमें ह़फ़्स बिन उ़मर इमाम बुख़ारी के शैख़ से सह्व हो गया है और सही़ह़ यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उम्मे सुलैम के एक भाई या'नी ह़राम बिन मिल्ह़ान को सत्तर आदमियों के साथ बनी आ़मिर की त़रफ़ भेजा था। ये सत्तर आदमी अंसार के क़ारी थे और आपने दीन की ता'लीम फैलाने के लिये क़बीला बनी आ़मिर के यहाँ भेजे थे जिनके लिये ख़ुद उस क़बीला ने दरख़्वास्त की लेकिन रास्ते में बनू सुलैम ने दग़ा की और उन ग़रीब क़ारियों को नाह़क़ क़त्ल कर दिया। बनू सुलैम का सरदार आ़मिर बिन तुफ़ैल था। लुग़त के सिलसिले में जिन क़बीलों का ज़िक्र रिवायत में आया है ये सब बनू सुलैम की शाख़ें हैं। आयत जिसका ज़िक्र रिवायत में आया है उन आयतों में से है जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गई।

पहुँचाऊँ ता बेहतर वरना तुम लोग मेरे क़रीब तो हो ही। चुनाँचे वो उनके यहाँ गये और उन्होंने अमन भी दे दिया। अभी वो क़बीले के लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें सुना ही रहे थे कि क़बीले वालों ने अपने एक आदमी (आ़मिर बिन तुफ़ैल) को इशारा किया और उसने आप (रज़ि.) के बरछा मारा जो जिस्म में आर-पार हो गया। उस वक़्त उनकी ज़ुबान से निकला, अल्लाहु अकबर! मैं कामयाब हो गया का'बा के रब की क़सम! उसके बाद क़बीले वाले ह़राम (रज़ि.) के दूसरे साथियों की त़रफ़ (जो सत्तर की ता'दाद में थे) बढ़े और सबको क़त्ल कर दिया। अल्बत्ता एक स़ाहब जो लंगड़े थे, पहाड़ पर चढ़ गए। हम्माम (ह़दीष़ के रावी) ने बयान किया मैं समझता हूँ कि एक साहब और उनके साथी (पहाड़ पर चढ़े थे) (अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी) उसके बाद जिब्रईल ने नबी करीम (ﷺ) को ख़बर दी कि आपके साथी अल्लाह तआ़ला से जा मिले हैं, पस अल्लाह ख़ुद भी उनसे ख़ुश है और उन्हें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद हम (क़ुर्आन की दूसरी आयतों के साथ ये आयत भी) पढ़ते थे (तर्जुमा) हमारी क़ौम के लोगों को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं, पस हमारा रब ख़ुद भी ख़ुश है और हमें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद ये मन्सूख़ हो गई, नबी करीम (ﷺ) ने चालीस दिन तक सुबह की नमाज़ में क़बीला रअ़ल, ज़क्वान, बनी लह़यान और बनी उ़सय्या के लिये बद् दुआ की थी जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) की नाफ़र्मानी की थी। (राजेअ़ : 1001)

أَمِّنُونِي حَتَّى أُبَلِّغَهُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلَّا كُنْتُمْ مِنِّي قَرِيبًا. فَتَقَدَّمَ فَأَمَّنُوهُ، فَبَيْنَمَا يُحَدِّثُهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَوْمَؤُوا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ فَطَعَنَهُ فَأَنْفَذَهُ، فَقَالَ: اللهُ أَكْبَرُ، فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ. ثُمَّ مَالُوا عَلَى بَقِيَّةِ أَصْحَابِهِ فَقَتَلُوهُمْ إِلَّا رَجُلاً أَعْرَجَ صَعِدَ الْجَبَلَ. قَالَ هَمَّامٌ: فَأُرَاهُ آخَرَ مَعَهُ. فَأَخْبَرَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُمْ قَدْ لَقُوا رَبَّهُمْ فَرَضِيَ عَنْهُمْ وَأَرْضَاهُمْ، فَكُنَّا نَقْرَأُ أَنْ بَلِّغُوا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا، ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ، فَدَعَا عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا؛ عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَبَنِي لِحْيَانَ وَبَنِي عُصَيَّةَ الَّذِينَ عَصَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[راجع: ١٠٠١]

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ ने कहा उसमें ह़फ़्स़ बिन उ़मर इमाम बुख़ारी के शैख़ से सह्व हो गया है और स़ह़ीह़ यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उम्मे सुलैम के एक भाई या'नी ह़राम बिन मिल्ह़ान को सत्तर आदमियों के साथ बनी आमिर की त़रफ़ भेजा था। ये सत्तर आदमी अंसार के क़ारी थे और आपने दीन की ता'लीम फैलाने के लिये क़बीला बनी आ़मिर के यहाँ भेजे थे जिनके लिये ख़ुद उस क़बीला ने दरख़्वास्त की लेकिन रास्ते में बनू सुलैम ने दग़ा की और उन ग़रीब क़ारियों को नाह़क़ क़त्ल कर दिया। बनू सुलैम का सरदार आमिर बिन तुफ़ैल था। लुग़त के सिलसिले में जिन क़बीलों का ज़िक्र रिवायत में आया है ये सब बनू सुलैम की शाख़ें हैं। आयत जिसका ज़िक्र रिवायत में आया है उन आयतों में से है जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गई।

2802. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने और उनसे जुन्दब बिन सुफ़यान (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) किसी लड़ाई के मौक़े पर मौजूद थे और आप (ﷺ) की उँगली जख़्मी हो गई थी।

٢٨٠٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بْنِ سُفْيَانَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ

हज़रत सअद (रज़ि.) का फ़ैसला हालाते हाज़रा के तहत बिलकुल मुनासिब था और उसके बग़ैर क़यामे अमन नामुम्किन था। वो बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों की फ़ितरत से वाक़िफ़ थे, उनका ये फ़ैसला यहूदी शरीअत के मुताबिक़ था।

बाब 169 : क़ैदी को क़त्ल करना और किसी को खड़ा करके निशाना बनाना

١٦٩- بَابُ قَتْلِ الأَسِيرِ وَقَتْلِ الصَّبْرِ

जिसको अरबी में क़त्ले सब्र कहते हैं। वो ये है कि जानदार आदमी हो या जानवर उसको किसी झाड़ या पेड़ से बाँध देना और तीर या गोली का निशाना बनाना, इस बाब को लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उन लोगों का रद्द किया है जो क़ैदियों को क़त्ल करना जाइज़ नहीं रखते।

3044. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे मक्का के दिन जब शहर में दाख़िल हुए तो आपके सरे मुबारक पर ख़ूद था। आप जब उसे उतार रहे थे तो एक शख़्स (अबूबर्ज़ा असलमी) ने आकर आपको ख़बर दी कि इब्ने ख़त्तल (इस्लाम का बदतरीन दुश्मन) का'बा के पर्दे से लटका हुआ है। आपने फ़र्माया उसे वहीं क़त्ल कर दो। (राजेअ : 1864)

٣٠٤٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: ((اقْتُلُوهُ)).

[راجع: ١٨٤٦]

ये अब्दुल्लाह बिन ख़त्तल कमबख़्त मुर्तद होकर एक मुसलमान का ख़ून करके काफ़िरों में मिल गया था और आँहज़रत (ﷺ) की और मुसलमानों की हिज्व (निन्दा) वेश्याओं से गवाता। ये हदीष उस हदीष की मुख़स्सस है कि जो शख़्स मस्जिदे हराम में आ जाए वो बेख़ौफ़ है और इससे ये निकला कि मस्जिदे हराम में हद्दे क़िसास लिया जा सकता है। ख़ूद, लोहे का टोप जो मैदाने जंग में सर के बचाने के लिये इस्ते'माल किया जाता था जिस तरह लोहे के कुर्ते (ज़िरह) से बाक़ी बदन को बचाया जाता था।

बाब 170 : अपने तईं क़ैद करा देना और जो शख़्स क़ैद न कराये उसका हुक्म

और क़त्ल के वक़्त दो रकअत नमाज़ पढ़ना.

١٧٠- بَابُ هَلْ يَسْتَأْسِرُ الرَّجُلُ؟ وَمَنْ لَمْ يَسْتَأْسِرْ، وَمَنْ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ عِنْدَ الْقَتْلِ

3045. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें अम्र बिन अबी सुफ़यान बिन उसैद बिन जारिया ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, वो बनी ज़ुह्रा के हलीफ़ थे और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के दोस्त, उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दस स़हाबा की एक जमाअत कुफ़्फ़ार की जासूसी के लिये भेजी, उस जमाअत का अमीर आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के नाना आसिम बिन ष़ाबित अंसारी (रज़ि.) को बनाया और जमाअत रवाना हो गई। जब ये लोग मुक़ामे हिदात पर पहुँचे जो उस्फ़ान और मक्का के बीच में है तो क़बीला हुज़ैल की

٣٠٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي سُفْيَانَ بْنِ أَسِيْدِ بْنِ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ - وَهُوَ حَلِيفٌ لِبَنِي زُهْرَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ - أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةَ رَهْطٍ سَرِيَّةً عَيْنًا، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ

बाब 170 : अपने तईं क़ैद करा देना और जो शख़्स क़ैद न कराये उसका हुक्म

और क़त्ल के वक़्त दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना.

١٧٠- بَابُ هَلْ يَسْتَأْسِرُ الرَّجُلُ؟ وَمَنْ لَمْ يَسْتَأْسِرْ، وَمَنْ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ عِنْدَ الْقَتْلِ

3045. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें अ़म्र बिन अबी सुफ़यान बिन उसैद बिन जारिया ष़क़्फ़ी ने ख़बर दी, वो बनी ज़ुह्रा के हलीफ़ थे और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के दोस्त, उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दस स़हाबा की एक जमाअ़त कुफ़्फ़ार की जासूसी के लिये भेजी, उस जमाअ़त का अमीर आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के नाना आ़सिम बिन ष़ाबित अंसारी (रज़ि.) को बनाया और जमाअ़त रवाना हो गई। जब ये लोग मुक़ामे हिदात पर पहुँचे जो उ़स्फ़ान और मक्का के बीच में है तो क़बीला हुज़ैल की

٣٠٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي سُفْيَانَ بْنِ أَسِيْدِ بْنِ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ - وَهُوَ حَلِيْفٌ لِبَنِي زُهْرَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ - أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةَ رَهْطٍ سَرِيَّةً عَيْنًا، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ

एक शाख़ बनु लह्यान को किसी ने ख़बर दे दी और उस क़बीले के दो सौ तीरंदाज़ों की एक जमाअ़त उनकी तलाश में निकली, ये सब स़हाबा के क़दमों के निशानों से अंदाज़ा लगाते हुए चलते-चलते आख़िर एक ऐसी जगह पर पहुँच गये जहाँ स़हाबा ने बैठकर खजूरें खाई थीं, जो वो मदीना मुनव्वरा से अपने साथ लेकर चले थे। पीछा करने वालों ने कहा कि ये (गुठलियाँ) तो यष़रिब (मदीना) की (खजूरों की) हैं और फिर क़दम के निशानों से अंदाज़ा करते हुए आगे बढ़ने लगे। आख़िर आ़सिम (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब उन्हें देखा तो उन सबने एक पहाड़ की चोटी पर पनाह ली, मुश्रिकीन ने उनसे कहा कि हथियार डालकर नीचे उतर आओ, तुमसे हमारा अ़हद व पैमान है। हम किसी शख़्स को भी क़त्ल नहीं करेंगे। आ़सिम बिन ष़ाबित (रज़ि.) मुहिम के अमीर ने कहा कि मैं तो आज किसी सूरत में भी एक काफ़िर की पनाह में नहीं उतरूँगा। ऐ अल्लाह! हमारी हालत से अपने नबी को ख़बर कर दे। इस पर उन काफ़िरों ने तीर बरसाने शुरू कर दिये और आ़सिम (रज़ि.) और सात दूसरे स़हाबा को शहीद कर डाला और बाक़ी तीन स़हाबी उनके अ़हद व पैमान पर उतर आए, ये ख़ुबैब अंसारी (रज़ि.), इब्ने दष़िना (रज़ि.) और एक तीसरे सहाबी (अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ बलवी रज़ि.) थे। जब ये स़हाबी उनके क़ाबू में आ गये तो उन्होंने अपनी कमानों के तांत उतारकर उनको उनसे बाँध लिया, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! ये तुम्हारी पहली ग़द्दारी है। मैं तुम्हारे साथ हर्गिज़ न जाऊँगा बल्कि मैं तो उन्हीं हज़रत का उस्वा इख़्तियार करूँगा, उनकी मुराद शुह्दा से थी, मगर मुश्रिकीन उन्हें खींचने लगे और ज़बरदस्ती अपने साथ ले जाना चाहा। जब वो किसी त़रह न गये तो उनको भी शहीद कर दिया। अब ये ख़ुबैब (रज़ि.) और इब्ने दष़िना (रज़ि.) को साथ लेकर चले और उनको मक्का में ले जाकर बेच दिया। ये जंगे बद्र के बाद का वाक़िया है। ख़ुबैब (रज़ि.) को हारिष़ बिन आ़मिर बिन नौफ़िल बिन अ़ब्दे मुनाफ़ के लड़कों ने ख़रीद लिया, ख़ुबैब (रज़ि.) ने ही बद्र की लड़ाई में हारिष़ बिन आ़मिर को क़त्ल किया था। आप उनके यहाँ कुछ दिनों तक क़ैदी बनकर रहे, (ज़ुह्री ने बयान किया) कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़याज़ ने ख़बर दी और उन्हें हारिष़ की बेटी (ज़ैनब

بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ - جَدَّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ - فَانْطَلَقُوا، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْهَدَأَةِ - وَهُوَ بَيْنَ عُسْفَانَ وَمَكَّةَ - وَذُكِرُوا لِحَيٍّ مِنْ هُذَيْلٍ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو لِحْيَانَ، فَنَفَرُوا لَهُمْ قَرِيْبًا مِنْ مِائَتَيْ رَجُلٍ كُلُّهُمْ رَامٍ، فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ حَتَّى وَجَدُوا مَأْكَلَهُمْ تَمْرًا تَزَوَّدُوهُ مِنَ الْمَدِيْنَةِ فَقَالُوا هَذَا تَمْرُ يَثْرِبَ فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ فَلَمَّا رَآهُمْ عَاصِمٌ وَأَصْحَابُهُ لَجَؤُوا إِلَى فَدْفَدٍ، وَأَحَاطَ بِهِمُ الْقَوْمُ، فَقَالُوا لَهُمْ: انْزِلُوا وَأَعْطُونَا بِأَيْدِيكُمْ، وَلَكُمُ الْعَهْدُ وَالْمِيْثَاقُ وَلاَ نَقْتُلُ مِنْكُمْ أَحَدًا. قَالَ عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ أَمِيْرُ السَّرِيَّةِ: أَمَّا أَنَا فَوَ اللهِ لاَ أَنْزِلُ الْيَوْمَ فِي ذِمَّةِ كَافِرٍ، اللَّهُمَّ أَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ، فَرَمَوْهُمْ بِالنَّبْلِ، فَقَتَلُوا عَاصِمًا فِي سَبْعَةٍ. فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ ثَلاَثَةُ رَهْطٍ بِالْعَهْدِ وَالْمِيْثَاقِ، مِنْهُمْ خُبَيْبٌ الأَنْصَارِيُّ وَابْنُ دَثِنَةَ وَرَجُلٌ آخَرُ. فَلَمَّا اسْتَمْكَنُوا مِنْهُمْ أَطْلَقُوا أَوْتَارَ قِسِيِّهِمْ فَأَوْثَقُوهُمْ، فَقَالَ الرَّجُلُ الثَّالِثُ: هَذَا أَوَّلُ الْغَدْرِ، وَاللهِ لاَ أَصْحَبُكُمْ، إِنَّ فِي هَؤُلاَءِ لأُسْوَةً -يُرِيْدُ الْقَتْلَى- فَجَرَّرُوهُ وَعَالَجُوهُ عَلَى أَنْ يَصْحَبَهُمْ فَأَبَى، فَقَتَلُوهُ، فَانْطَلَقُوا بِخُبَيْبٍ وَابْنِ دَثِنَةَ حَتَّى بَاعُوهُمَا بِمَكَّةَ بَعْدَ وَقِيْعَةِ بَدْرٍ، فَابْتَاعَ خُبَيْبًا بَنُو الْحَارِثِ بْنِ عَامِرِ بْنِ نَوْفَلِ بْنِ عَبْدِ

एक शख़्स बनु लह्यान को किसी ने ख़बर दे दी और उस क़बीले के दो सौ तीरंदाज़ों की एक जमाअ़त उनकी तलाश में निकली, ये सब स़हाबा के क़दमों के निशानों से अंदाज़ा लगाते हुए चलते-चलते आख़िर एक ऐसी जगह पर पहुँच गये जहाँ स़हाबा ने बैठकर खजूरें खाई थीं, जो वो मदीना मुनव्वरा से अपने साथ लेकर चले थे। पीछा करने वालों ने कहा कि ये (गुठलियाँ) तो यष़्रिब (मदीना) की (खजूरों की) हैं और फिर क़दम के निशानों से अंदाज़ा करते हुए आगे बढ़ने लगे। आख़िर आ़स़िम (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब उन्हें देखा तो उन सबने एक पहाड़ की चोटी पर पनाह ली, मुश्रिकीन ने उनसे कहा कि हथियार डालकर नीचे उतर आओ, तुमसे हमारा अ़हद व पैमान है। हम किसी शख़्स को भी क़त्ल नहीं करेंगे। आ़स़िम बिन ष़ाबित (रज़ि.) मुहिम के अमीर ने कहा कि मैं तो आज किसी सूरत में भी एक काफ़िर की पनाह में नहीं उतरूँगा। ऐ अल्लाह! हमारी ह़ालत से अपने नबी को ख़बर कर दे। इस पर उन काफ़िरों ने तीर बरसाने शुरू कर दिये और आ़स़िम (रज़ि.) और सात दूसरे स़हाबा को शहीद कर डाला और बाक़ी तीन स़हाबी उनके अ़हद व पैमान पर उतर आए, ये ख़ुबैब अंस़ारी (रज़ि.), इब्ने दष़िना (रज़ि.) और एक तीसरे स़हाबी (अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ बलवी रज़ि.) थे। जब ये स़हाबी उनके क़ाबू में आ गये तो उन्होंने अपनी कमानों के तांत उतारकर उनको उनसे बाँध लिया, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! ये तुम्हारी पहली ग़द्दारी है। मैं तुम्हारे साथ हर्गिज़ न जाऊँगा बल्कि मैं तो उन्हीं ह़ज़रत का उस्वा इख़्तियार करूँगा, उनकी मुराद शुह्दा से थी, मगर मुश्रिकीन उन्हें खींचने लगे और ज़बरदस्ती अपने साथ ले जाना चाहा। जब वो किसी त़रह न गये तो उनको भी शहीद कर दिया। अब ये ख़ुबैब (रज़ि.) और इब्ने दष़िना (रज़ि.) को साथ लेकर चले और उनको मक्का में ले जाकर बेच दिया। ये जंगे बद्र के बाद का वाक़िया है। ख़ुबैब (रज़ि.) को ह़ारिष़ बिन आ़मिर बिन नौफ़िल बिन अ़ब्दे मुनाफ़ के लड़कों ने ख़रीद लिया, ख़ुबैब (रज़ि.) ने ही बद्र की लड़ाई में ह़ारिष़ बिन आ़मिर को क़त्ल किया था। आप उनके यहाँ कुछ दिनों तक क़ैदी बनकर रहे, (ज़ुह्री ने बयान किया) कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़याज़ ने ख़बर दी और उन्हें ह़ारिष़ की बेटी (ज़ैनब

بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ - جَدَّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ - فَانْطَلَقُوا، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْهَدَأَةِ - وَهُوَ بَيْنَ عُسْفَانَ وَمَكَّةَ - وَذُكِرُوا لِحَيٍّ مِنْ هُذَيْلٍ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو لَحْيَانَ، فَنَفَرُوا لَهُمْ قَرِيْبًا مِنْ مِائَتَي رَجُلٍ كُلُّهُمْ رَامٍ، فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ حَتَّى وَجَدُوا مَأْكَلَهُمْ تَمْرًا تَزَوَّدُوهُ مِنَ الْمَدِيْنَةِ فَقَالُوا هَذَا تَمْرُ يَثْرِبَ فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ. فَلَمَّا رَآهُمْ عَاصِمٌ وَأَصْحَابُهُ لَجَؤُوا إِلَى فَدْفَدٍ، وَأَحَاطَ بِهِمُ الْقَوْمُ، فَقَالُوا لَهُمْ: انْزِلُوا وَأَعْطُونَا بِأَيْدِيكُمْ، وَلَكُمُ الْعَهْدُ وَالْمِيْثَاقُ وَلاَ نَقْتُلُ مِنْكُمْ أَحَدًا. قَالَ عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ أَمِيْرُ السَّرِيَّةِ: أَمَّا أَنَا فَوَ اللهِ لاَ أَنْزِلُ الْيَوْمَ فِي ذِمَّةِ كَافِرٍ، اللَّهُمَّ أَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ. فَرَمَوْهُمْ بِالنَّبْلِ، فَقَتَلُوا عَاصِمًا فِي سَبْعَةٍ. فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ ثَلاَثَةُ رَهْطٍ بِالْعَهْدِ وَالْمِيْثَاقِ، مِنْهُمْ خُبَيْبٌ الأَنْصَارِيُّ وَابْنُ دَثِنَةَ وَرَجُلٌ آخَرُ. فَلَمَّا اسْتَمْكَنُوا مِنْهُمْ أَطْلَقُوا أَوْتَارَ قِسِيِّهِمْ فَأَوْثَقُوهُمْ. فَقَالَ الرَّجُلُ الثَّالِثُ: هَذَا أَوَّلُ الْغَدْرِ، وَاللهِ لاَ أَصْحَبُكُمْ، إِنَّ فِي هَؤُلاَءِ لأُسْوَةً -يُرِيْدُ الْقَتْلَى- فَجَرَّرُوهُ وَعَالَجُوهُ عَلَى أَنْ يَصْحَبَهُمْ فَأَبَى، فَقَتَلُوهُ، فَانْطَلَقُوا بِخُبَيْبٍ وَابْنِ دَثِنَةَ حَتَّى بَاعُوهُمَا بِمَكَّةَ بَعْدَ وَقِيْعَةِ بَدْرٍ، فَابْتَاعَ خُبَيْبًا بَنُو الْحَارِثِ بْنِ عَامِرِ بْنِ نَوْفَلِ بْنِ عَبْدِ

जुदा चलने वाली हवाएँ लवाक़िह लाक़ितुन की जमा है या'नी वो हवाएँ जो पानी को उठाए हुए चलती हैं गोया ह़ामला हैं। मौलाना जमालुद्दीन अफ़ग़ानी कहते हैं कि ह़ामला करने वाली हवा का मा'नी उसूले नबातात की रू से ठीक है क्योंकि इल्मे नबातात में ष़ाबित हुआ है कि हवा नर पेड़ का माद्दा उड़ाकर मादा पेड़ पर ले जाती है। इस वजह से पेड़ ख़ूब फलता फूलता है गोया हवा दरख़्तों को ह़ामला करती है। तह़क़ीक़ात से भी यही मुशाहिदा हुआ है।

3205. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बादे स़बा (मश्रिक़ी हवा) के ज़रिया मेरी मदद की गई और क़ौमे आ़द, बादे दबूर (मग़्रिबी हवा) से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ़ : 1035)

٣٢٠٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نُصِرْتُ بِالصَّبَا أُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُورِ))

[راجع: ١٠٣٥]

3206. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अ़ता ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) बादल का कोई ऐसा टुकड़ा देखते जिससे बारिश की उम्मीद होती तो आप कभी आगे आते, कभी पीछे जाते, कभी घर के अंदर तशरीफ़ लाते, कभी बाहर आ जाते और चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल जाता लेकिन जब बारिश होने लगती तो फिर ये क़ैफ़ियत बाक़ी न रहती। एक बार ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने उसके बारे में आपसे पूछा। तो आपने फ़र्माया। मैं नहीं जानता मुम्किन है ये बादल भी वैसा ही हो जिसके बारे में क़ौमे आ़द ने कहा था, जब उन्होंने बादल को अपनी वादियों की तरफ़ आते देखा था। आख़िर आयत तक (कि उनके लिये रह़मत का बादल आया है, ह़ालाँकि वो अ़ज़ाब का बादल था)। (दीगर मक़ाम : 4829)

٣٢٠٦- حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا رَأَى مَخِيْلَةً فِي السَّمَاءِ أَقْبَلَ وَأَدْبَرَ وَدَخَلَ وَخَرَجَ وَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ، فَإِذَا أَمْطَرَتِ السَّمَاءُ سُرِّيَ عَنْهُ، فَعَرَّفَتْهُ عَائِشَةُ ذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا أَدْرِي! كَمَا قَالَ قَوْمٌ: ﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ﴾)) الآية [الأحقاف : ٢٤].

[طرفه في : ٤٨٢٩].



हवा भी अल्लाह की एक मख़्लूक़ है जो मुख़्तलिफ़ ताष़ीर रखती है और मख़्लूक़ात की ज़िन्दगी में जिसका क़ुदरत ने बड़ा दख़ल रखा है। क़ौमे आद पर अल्लाह ने क़ह़त का अ़ज़ाब नाज़िल किया। उन्होंने अपने कुछ लोगों को मक्का शरीफ़ भेजा कि वहाँ जाकर बारिश की दुआ करें। मगर वहाँ वो लोग ऐश व इशरत में पड़कर दुआ करना भूल गये इधर क़ौम की बस्तियों पर बादल छाये। क़ौम ने समझा कि ये हमारे उन आदमियों की दुआओं का अष़र है। मगर उस बादल ने अ़ज़ाब की शक्ल इख़्तियार करके उस क़ौम को तबाह कर दिया।

बाब 6 : फ़रिश्तों का बयान

٦- بَابُ ذِكْرِ الْمَلاَئِكَةِ

मिन जुम्ला उसूले ईमान में एक ये भी है कि अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान लाए। वो अल्लाह के मुअ़ज़्ज़ बन्दे हैं। उनके जिस्म लत़ीफ़ हैं वो हर शक्ल में जाहिर हो सकते हैं। वो सब नेक और अल्लाह के ताबेदार बन्दे हैं। फ़रिश्तों का इंकार करना कुफ़्र है। उनके वजूद पर तमाम कुतुबे आसमानी व अंबिया-ए-किराम का इत्तिफ़ाक़ है।

क़ाल जुम्हूरू अहलिल्कलामि मिनल्मुस्लिमीन अल्मलाइकतु अज्सामुन लत़ीफतुन उअ़तीयत क़ुदरतुन अलत्तशक्कुलि बिअश्कालिन मुख्तलिफतिन व मसाकिनुहा अस्समावातव अब्त़लमन क़ाल इन्नहल्कवाकिबु औ इन्नहल्अन्फसुल्ख़ैरतुल्लती फारकत अज्सादहा व गैरहू ज़ालिक मिनल्अक़्वालिल्लती ला यूजदु

आमादा किया। अल्लाह पाक उन सबको बरकाते दारेन से नवाज़ियो। आमीन षुम्म आमीन।

3209. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़लद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मूसा बिन उक़्बा ने ख़बर दी, उन्हे नाफ़ेअ ने, उन्होंने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। और इस रिवायत की मुताबअत अबू आसिम ने इब्ने जुरैज से की है कि मुझे मूसा बिन उक़्बा ने ख़बर दी उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से फ़र्माता है कि अल्लाह तआला फ़लाँ शख़्स से मुहब्बत करता है। तुम भी इससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) भी उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तमाम अहले आसमान को पुकार कर कहते हैं कि अल्लाह तआला फ़लाँ शख़्स से मुहब्बत रखता है। इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे तमाम आसमान वाले उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। उसके बाद रूए ज़मीन वाले भी उसको मक़्बूल समझते हैं। (दीगर मक़ाम : 6040, 7485)

٣٢٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا مَخْلَدٌ، قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَتَابَعَهُ أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَحَبَّ اللهُ الْعَبْدَ نَادَى جِبْرِيْلَ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحْبِبْهُ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيْلُ. فَيُنَادِي جِبْرِيْلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ. إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحِبُّوهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ. ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الأَرْضِ)).

[طرفاه في : ٦٠٤٠، ٧٤٨٥].

तश्रीह : इस्माईल की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि जब अल्लाह किसी बन्दे से दुश्मनी करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से ज़ाहिर करता है फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) और सारे फ़रिश्ते उसके दुश्मन हो जाते हैं यहाँ तक कि रूए ज़मीन पर उसके लिये बुराई फैल जाती है। इस ह़दीष़ से अल्लाह के कलाम में आवाज़ और पुकार षाबित हुई और उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में स़ौत (आवाज़) और हुरूफ़ नहीं हैं।

3210. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें लैष़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हहरा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया था कि फ़रिश्ते अनान मे उतरते हैं और अनान से मुराद बादल हैं। यहाँ फ़रिश्ते उन कामों का ज़िक्र करते हैं जिनका फ़ैसला आसमान में हो चुका होता है। और यहीं से शयातीन कुछ बातें चोरी छुपे उड़ा लेते हैं। फिर काहिनों को उसकी ख़बर कर देते

٣٢١٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ - وَهُوَ السَّحَابُ - فَتَذْكُرُ الأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرِقُ الشَّيَاطِيْنُ السَّمْعَ



3210. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें लैष़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हहरा आइशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया था कि फ़रिश्ते अ़नान मे उतरते हैं और अ़नान से मुराद बादल हैं। यहाँ फ़रिश्ते उन कामों का ज़िक्र करते हैं जिनका फ़ैसला आसमान में हो चुका होता है। और यहीं से शयातीन कुछ बातें चोरी छुपे उड़ा लेते हैं। फिर काहिनों को उसकी ख़बर कर देते

٣٢١٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ - وَهُوَ السَّحَابُ - فَتَذْكُرُ الأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرِقُ الشَّيَاطِيْنُ السَّمْعَ

हैं और ये काहिन सौ झूठ अपनी तरफ़ से मिलाकर बयान करते हैं।
(दीगर मक़ाम : 3288, 5762, 6213, 7561)

فَتَسْمَعُهُ فَتُوحِيْهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُوْنَ مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ)).

[أطرافه في: ٣٢٨٨، ٥٧٦٢، ٦٢١٣،

हैं और ये काहिन सौ झूठ अपनी तरफ़ से मिलाकर बयान करते हैं।
(दीगर मक़ाम : 3288, 5762, 6213, 7561)

فَتَسْمَعُهُ فَتُوحِيْهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ)).
[أطرافه في: ٣٢٨٨، ٥٧٦٢، ٦٢١٣، ٧٥٦١].

3211. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा और अग़र ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब जुमा का दिन आता है तो मस्जिद के हर दरवाज़े पर फ़रिश्ते खड़े हो जाते हैं और सबसे पहले आने वाले और फिर उसके बाद आने वालों को नम्बर वार लिखते जाते हैं। फिर जब इमाम (ख़ुत्बे के लिये मिम्बर पर) बैठ जाता है तो ये फ़रिश्ते अपने रजिस्टर बन्द कर लेते हैंऔर ज़िक्र सुनने लग जाते हैं (ये ह़दीष़ किताबुल जुम्आ में मज़्कूर हो चुकी है यहाँ फ़रिश्तों का वजूद ष़ाबित करना मक़्सूद है)। (राजेअ : 929)

٣٢١١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَالأَغَرِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِذَا كَانَ يَومُ الْجُمُعَةِ كَانَ عَلَى كُلِّ بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ الْمَلاَئِكَةُ يَكْتُبُونَ الأَوَّلَ فَالأَوَّلَ، فَإِذَا جَلَسَ الإِمَامُ طَوَوا الصُّحُفَ وَجَاؤُوا يَسْتَمِعُونَ الذِّكْرَ)). [راجع: ٩٢٩]

3212. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो ह़स्सान (रज़ि.) शे'र पढ़ रहे थे। उन्होंने मस्जिद में शे'र पढ़ने पर नापसन्दीदगी फ़र्माई तो ह़स्सान (रज़ि.) ने कहा कि मैं उस वक़्त यहाँ शे'र पढ़ा करता था जब आपसे बेहतर शख़्स (आँह़ज़रत ﷺ) यहाँ तशरीफ़ रखते थे। फिर ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि.) ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा कि मैं तुमसे अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ क्या रसूलल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते तुमने नहीं सुना था कि ऐ ह़स्सान! (कुफ़्फ़ारे मक्का को) मेरी तरफ़ से जवाब दे। ऐ अल्लाह! रूहुल क़ुदस के ज़रिये ह़स्सान की मदद कर। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि हाँ बेशक (मैंने सुना था)। (राजेअ : 453)

٣٢١٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((مَرَّ عُمَرُ فِي الْمَسْجِدِ وَحَسَّانُ يُنْشِدُ فَقَالَ: كُنْتُ أُنْشِدُ فِيْهِ وَفِيْهِ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْكَ. ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَى أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ: أَنْشُدُكَ بِاللهِ أَسَمِعْتَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((أَجِبْ عَنِّي، اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ؟)) قَالَ : نَعَمْ)).
[راجع: ٤٥٣]

इससे ह़म्दो—नअ़त के अश्आ़र पढ़ने और कहने का जवाज़ ष़ाबित हुआ।

3213. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने और उनसे बराअ बिन

٣٢١٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنِ الْبَرَاءِ

सिर्फ़ आम मुसलमानों की जमाअत का एक शख़्स हूँ।

तश्रीह : हज़रत अ़ली (रज़ि.) के इस क़ौल से उन लोगों ने दलील ली है जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल कहते हैं फिर उनके बाद हज़रत उमर (रज़ि.) को जैसे जुम्हूर अहले सुन्नत का क़ौल है। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ मुहद्दिष फ़र्माते हैं कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ख़ुद शैख़ेन को अपने ऊपर फ़ज़ीलत दी है लिहाज़ा मैं भी फ़ज़ीलत देता हूँ वरना कभी फ़ज़ीलत न देता। दूसरी रिवायत में हज़रत अ़ली (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि जो कोई मुझको शैख़ेन के ऊपर फ़ज़ीलत दे मैं उसको मुफ़्तरी की ह़द लगाऊँगा। इससे उन सुन्नी हज़रात को सबक़ लेना चाहिये जो हज़रत अ़ली (रज़ि.) की तफ़्ज़ील के क़ाइल हैं जबकि ख़ुद हज़रत अ़ली (रज़ि.) ही उनको मुफ़्तरी क़रार दे रहे हैं।

3672. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले जब हम मुक़ामे बैदा या मुक़ामे ज़ातुल जैश पर पहुँचे तो मेरा एक हार टूटकर गिर गया। इसलिये हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसकी तलाश के लिये वहाँ ठहर गये और सहाबा भी आपके साथ ठहरे लेकिन न उस जगह पर पानी था और न उनके साथ पानी था। लोग हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आकर कहने लगे कि आप मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या किया, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को यहीं रोक लिया है। इतने सहाबा आपके साथ हैं, न तो यहाँ पानी है और न लोग अपने साथ लिये (पानी) हुए हैं। उसके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अंदर आए। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त अपना सरे मुबारक मेरी रान पर रखे हुए सो रहे थे। वो कहने लगे, तुम्हारी वजह से आँहज़रत (ﷺ) को और सब लोगों को रुकना पड़ा। अब न यहाँ कहीं पानी है और न लोगों के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हजरत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझ पर ग़ुस्सा किया और जो कुछ अल्लाह को मंज़ूर था उन्होंने कहा और अपने हाथ से मेरी कोख में कचूके लगाने लगे। मैं ज़रूर तड़प उठती मगर आँहज़रत (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर था। आँहज़रत (ﷺ) सोते रहे। जब सुबह हुई तो पानी नहीं था और उसी मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने तयम्मुम का हुक्म नाज़िल फ़र्माया और सबने तयम्मुम किया, इस पर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ आले अबूबक्र (रज़ि.) तुम्हारी कोई पहली

٣٦٧٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - انْقَطَعَ عِقْدٌ لِيْ. فَأَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْتِمَاسِهِ، وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَأَتَى النَّاسُ أَبَا بَكْرٍ فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ؟ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِيْ قَدْ نَامَ، فَقَالَ: حَبَسْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. قَالَتْ: فَعَاتَبَنِي وَقَالَ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُولَ، وَجَعَلَ يَطْعُنُنِي بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي فَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى فَخِذِيْ، فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ، فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ ﴿فَتَيَمَّمُوا﴾ [النساء : ٤٣]، فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ

3672. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले जब हम मुक़ामे बैदा या मुक़ामे ज़ातुल जैश पर पहुँचे तो मेरा एक हार टूटकर गिर गया। इसलिये हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसकी तलाश के लिये वहाँ ठहर गये और स़हाबा भी आपके साथ ठहरे लेकिन न उस जगह पर पानी था और न उनके साथ पानी था। लोग हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आकर कहने लगे कि आप मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या किया, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को यहीं रोक लिया है। इतने स़हाबा आपके साथ हैं, न तो यहाँ पानी है और न लोग अपने साथ लिये (पानी) हुए हैं। उसके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अंदर आए। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त अपना सरे मुबारक मेरी रान पर रखे हुए सो रहे थे। वो कहने लगे, तुम्हारी वजह से आँहज़रत (ﷺ) को और सब लोगों को रुकना पड़ा। अब न यहाँ कहीं पानी है और न लोगों के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हजरत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझ पर ग़ुस़्सा किया और जो कुछ अल्लाह को मंज़ूर था उन्होंने कहा और अपने हाथ से मेरी कोख में कचूके लगाने लगे। मैं ज़रूर तड़प उठती मगर आँहज़रत (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर था। आँहज़रत (ﷺ) सोते रहे। जब सुबह हुई तो पानी नहीं था और उसी मौक़े पर अल्लाह तआला ने तयम्मुम का हुक्म नाज़िल फ़र्माया और सबने तयम्मुम किया, इस पर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ आले अबूबक्र (रज़ि.) तुम्हारी कोई पहली

٣٦٧٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - انْقَطَعَ عِقْدٌ لِيْ، فَأَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْتِمَاسِهِ، وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَأَتَى النَّاسُ أَبَا بَكْرٍ فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ؟ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِيْ قَدْ نَامَ، فَقَالَ: حَبَسْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. قَالَتْ: فَعَاتَبَنِي وَقَالَ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُولَ، وَجَعَلَ يَطْعُنُنِي بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي فَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى فَخِذِيْ، فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ، فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ ﴿فَتَيَمَّمُوا﴾ [النساء : ٤٣]، فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ

बरकत नहीं है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने उस ऊँट को उठाया जिस पर मैं सवार थी तो हार उसी के नीचे हमें मिला। (राजेअ़ : 334)

: مَا هِيَ بِأَوَّلِ بَرَكَتِكُمْ يَا آلَ أَبِي بَكْرٍ فَقَالَتْ عَائِشَةُ : فَبَعَثْنَا الْبَعِيْرَ الَّذِيْ كُنْتُ عَلَيْهِ فَوَجَدْنَا الْعِقْدَ تَحْتَهُ)).

बरकत नहीं है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने उस ऊँट को उठाया जिस पर मैं सवार थी तो हार उसी के नीचे हमें मिला। (राजेअ़ : 334)

: مَا هِيَ بِأَوَّلِ بَرَكَتِكُمْ يَا آلَ أَبِي بَكْرٍ فَقَالَتْ عَائِشَةُ : فَبَعَثْنَا الْبَعِيرَ الَّذِي كُنْتُ عَلَيْهِ فَوَجَدْنَا الْعِقْدَ تَحْتَهُ)).

[راجع: ٣٣٤]

तश्रीह : गुम होने वाला हार हज़रत अस्मा (रज़ि.) का था, इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) को और भी ज़्यादा फ़िक्र हुआ, बाद में अल्लाह तआ़ला ने उसे मिला दिया। हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) के क़ौल का मतलब ये है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की औलाद की वजह से मुसलमानों को हमेशा फ़वाइद व बरकात मिलते रहे हैं। ये हदीष़ किताबुत तयम्मुम में भी मज़्कूर हो चुकी है। यहाँ पर उसके लाने से ये ग़र्ज़ है कि इस हदीष़ से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ख़ानदान की फ़ज़ीलत षाबित होती है। उसैद (रज़ि.) ने कहा। **मा हिया बिअव्वलि बर्कतिकुम या आल अबीबक्र.**

3673. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा मैंने ज़क्वान से सुना और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे अस्हाब को बुरा भला मत कहो। अगर कोई शख़्स उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना (अल्लाह की राह में) खर्च कर डाले तो उनके एक मुद अनाज के बराबर भी नहीं हो सकता और न उनके आधे मुद के बराबर। शुअ़बा के साथ इस हदीष़ को जरीर, अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद, अबू मुआ़विया और मुहाज़िर ने भी आ'मश से रिवायत किया है।

٣٦٧٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ : سَمِعْتُ ذَكْوَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَسُبُّوا أَصْحَابِي، فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلاَ نَصِيفَهُ)). تَابَعَهُ جَرِيْرٌ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَمُحَاضِرٌ عَنِ الأَعْمَشِ.

तश्रीह : इससे आ़म तौर पर सहाबा किराम (रज़ि.) की फ़ज़ीलत षाबित होती है ये वो बुज़ुर्गाने इस्लाम हैं। जिनको दीदारे रिसालत पनाह (ﷺ) नसीब हुआ। इसलिये उनकी अल्लाह के नज़दीक बड़ी अहमियत है। जरीर (रह.) की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और मुहाज़िर की रिवायत को अबुल फ़तह ने अपने फ़वाइद में और अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद की रिवायत को मुसद्दद ने और अबू मुआ़विया की रिवायत को इमाम अहमद ने वस्ल किया है। ख़िदमते इस्लाम में सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाह अ़न्हुम अज्मईन की माली क़ुर्बानियों को इसलिये फ़ज़ीलत हासिल है कि उन्होंने ऐसे वक़्त में ख़र्च किया जब सख़्त ज़रूरत थी, काफ़िरों का ग़ल्बा था और मुसलमान मुह्ताज थे। मक़्सूद मुहाजिरीने अव्वलीन और अंसार की फ़ज़ीलत बयान करना है। उनमें अबूबक्र (रज़ि.) भी थे, लिहाज़ा बाब की मुताबक़त हासिल हो गई। ये हदीष़ आपने उस वक़्त फ़र्माई जब ख़ालिद बिन वलीद और अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) में कुछ तकरार हुई। ख़ालिद ने अ़ब्दुर्रहमान को कुछ सख़्त कहा आपने ख़ालिद (रज़ि.) को मुख़ातब करके ये फ़र्माया। कुछ ने कहा कि ये ख़िताब उन लोगों की तरफ़ है जो सहाबा के बाद पैदा होंगे। उनको मौजूदा फ़र्ज़ करके उनकी तरफ़ ख़िताब किया। मगर ये क़ौल सहीह नहीं है क्योंकि ख़ालिद (रज़ि.) की तरफ़ ख़िताब करके आपने ये हदीष़ फ़र्माई थी और ख़ालिद (रज़ि.) ख़ुद सहाबा मे से हैं।

3674. हमसे अबुल हसन मुहम्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हस्सान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे शुरैक बिन अबी नम्रह ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया, कहा मुझको अबू मूसा अशअ़री

٣٦٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِيْنٍ أَبُو الْحَسَنِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ شَرِيْكِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ عَنْ

3689. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे पहले उम्मतों में मुहद्दष़ हुआ करते थे, और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स है तो वो उ़मर हैं। ज़करिया बिन ज़ायदा ने अपनी रिवायत में सअ़द से ये बढ़ाया

٣٦٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ نَاسٌ مُحَدَّثُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَإِنَّهُ عُمَرُ)) زَادَ زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي

कि उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमसे पहले बनी इस्राईल की उम्मतों में कुछ लोग ऐसे हुआ करते थे कि नबी नहीं होते थे और उसके बावजूद फ़रिश्ते उनसे कलाम किया करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स हो सकता है तो वो ह़ज़रत उ़मर हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने पढ़ा, मन नबिय्यि वला मुहद्दिष़ । (राजेअ : 3469)

زَائِدَةَ عَنْ سَعْدٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ؛ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ رِجَالٌ يُكَلَّمُونَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونُوا أَنْبِيَاءَ، فَإِنْ يَكُنْ فِي أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَعُمَرُ)).
قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((مِنْ نَبِيٍّ وَلاَ مُحَدَّثٍ)). [راجع: ٣٤٦٩]

तश्रीह : मुहद्दष़ वो जिस पर अल्लाह की त़रफ़ से इल्हाम हो और ह़क़ उसकी ज़ुबान पर जारी हो जाए या फ़रिश्ते इससे बात करें या वो जिसकी राय बिलकुल स़ह़ीह़ ष़ाबित हो। मुहद्दष़ वो भी हो सकता है जो स़ाह़िबे कशफ़ हो जैसे ह़ज़रत ईसा (रज़ि.) की उम्मत में ह़ज़रत यूह़न्ना ह़वारी गुज़रे हैं जिनके मकाशिफ़ात मशहूर हैं। यक़ीनन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) भी ऐसे ही लोगों में से हैं। रिवायत के आख़िर में मज़्कूर है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) सूरह ह़ज्ज की इस आयत को यूँ पढ़ते थे, **वमा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक मिन रसूलिन व ला नबिय्यिन व ला मुहद्दसुन** अल्ख़.

इतने में एक छोटा बन्दर आया और बन्दरिया को इशारा किया उसने आहिस्ता से अपना हाथ बन्दर के सर के नीचे से खींच लिया और छोटे बन्दर के साथ चली गई उसने उससे सुहबत की मैं देख रहा था फिर बन्दरिया लौटी और आहिस्ता से फिर अपना हाथ पहले बन्दर के सर के नीचे डालने लगी लेकिन वो जाग गया और एक चीख़ मारी तो सब बन्दर जमा हो गये। ये उस बन्दरिया की त़रफ़ इशारा करता और चीखता जाता था। आख़िर दूसरे बन्दर इधर उधर गये और उसे छोटे बन्दर को पकड़ लाए। मैं उसे पहचानता था फिर उन्होंने उनके लिये गड्ढा खोदा और दोनों को संगसार कर डाला तो मैंने ये रजम का अ़मल जानवरों में भी देखा।

3850. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने और उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जाहिलियत की आ़दतों में से ये आ़दतें हैं नसब के मामले में त़अ़ना मारना और मय्यत पर नौह़ा करना, तीसरी आ़दत के बारे में (उ़बैदुल्लाह रावी) भूल गये थे और सुफ़यान ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि वो तीसरी बात सितारों को बारिश की इल्लत समझना है।

٣٨٥٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خِلاَلٌ مِنْ خِلاَلِ الْجَاهِلِيَّةِ: الطَّعْنُ فِي الأَنْسَابِ، وَالنِّيَاحَةُ - وَنَسِيَ الثَّالِثَةَ - قَالَ سُفْيَانُ: وَيَقُولُونَ إِنَّهَا الاِسْتِسْقَاءُ بِالأَنْوَاءِ)).

बाब 28 : नबी करीम (ﷺ) की बेअ़षत का बयान

٢٨- بَابُ مَبْعَثِ النَّبِيِّ ﷺ

आपका नाम मुबारक है मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मुनाफ़ बिन क़ुसई बिन किलाब बिन मुर्रह़ बिन कअ़ब बिन लुवी बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मदरका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नज़्ज़ार बिन मअ़द बिन अ़दनान।

مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ هَاشِمِ بْنِ عَبْدِ مَنَافِ بْنِ قُصَيِّ بْنِ كِلاَبِ بْنِ مُرَّةَ بْنِ كَعْبِ بْنِ لُؤَيِّ بْنِ غَالِبِ بْنِ فِهْرِ بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّضْرِ بْنِ كِنَانَةَ بْنِ خُزَيْمَةَ بْنِ مُدْرِكَةَ بْنِ إِلْيَاسَ بْنِ مُضَرَ بْنِ نِزَارِ بْنِ مَعَدِّ بْنِ عَدْنَانَ.

यहीं तक आप (ﷺ) ने अपना नसब बयान फ़र्माया है, अ़दनान के बाद रिवायतों में इख़्तिलाफ़ है ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने तारीख़ में आप (ﷺ) का नसब ह़ज़रत इब्राहीम तक बयान फ़र्माया है।

3851. हमसे अहमद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा उनसे हिशाम ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की चालीस साल की उ़म्र हुई तो आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हुई, उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) तेरह साल मक्का मुकर्रमा में रहे फिर आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) मदीना मुनव्वरा हिजरत करके चले गये, वहाँ दस साल रहे फिर आपने वफ़ात फ़र्माई (ﷺ) इस हिसाब से कुल उ़म्र शरीफ़ आपकी 63 साल होती है और ये सह़ीह़ है।

٣٨٥١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النَّضْرُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ، فَهَاجَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَكَثَ بِهَا عَشْرَ سِنِينَ، ثُمَّ تُوُفِّيَ ﷺ)).

बाब 45 : नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाबे किराम का मदीना की तरफ़ हिजरत करना

٤٥- بَابُ هِجْرَةِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

हज़रात अब्दुल्लाह बिन ज़ैद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि अगर हिजरत की फ़ज़ीलत न होती तो मैं अंसार का एक आदमी बनकर रहना पसन्द करता और हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि मैंने ख़्वाब देखा कि मैं मक्का से एक ऐसी ज़मीन की तरफ़ हिजरत करके जा रहा हूँ कि जहाँ खजूर के बाग़ात बकष़रत हैं, मेरा ज़हन उससे यमामा या हजर की तरफ़ गया, लेकिन ये ज़मीन शहरे यष़्रिब की थी।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ وَأَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ لاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ)). وقال أبو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ، فَذَهَبَ وَهَلِي إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرَ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ)).

3897. हमसे (अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर) हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अअ़मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू वाईल शक़ीक़ बिन सलमा से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ख़ब्बाब बिन अरम (रज़ि.) की अ़यादत के लिये गए तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के साथ हमने सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये हिजरत की थी, अल्लाह तआ़ला हमें उसका अज्र देगा। फिर हमारे बहुत से साथी इस दुनिया से उठ गये और उन्होंने (दुनिया में) अपने आ़माल का फल नहीं देखा। उन्हीं में हज़रत मुस़अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद किये गये थे और सिर्फ़ एक धारीदार चादर छोड़ी थी। (कफ़न देते वक़्त) जब हम उनकी चादर से उनका सर ढांकते तो पाँव खुल जाते और पाँव ढाँकते तो सर खुल जाता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि उनका सर ढाँक दें और पाँव पर इज़्ख़र घास डाल दें। (ताकि छुप जाए) और हममें ऐसे भी हैं कि (इस दुनिया में भी) उनके आ़माल का मेवा पक गया, पस वो उसको चुन रहे हैं।

(राजेअ़ : 1286)

٣٨٩٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يَقُولُ: ((عُدْنَا خَبَّابًا فَقَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُرِيْدُ وَجْهَ اللهِ، فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللهِ، فَمِنَّا مَنْ مَضَى لَمْ يَأْخُذْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ نَمِرَةً، فَكُنَّا إِذَا غَطَّيْنَا بِهَا رَأْسَهُ بَدَتْ رِجْلاَهُ، وَإِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَيْهِ بَدَا رَأْسُهُ، فَأَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نُغَطِّيَ رَأْسَهُ وَنَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ شَيْئًا مِنْ إِذْخِرٍ. وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يَهْدِبُهَا)).

[راجع: ١٢٧٦]

मत़लब ये है कि कुछ लोग तो ग़नीमत और दुनिया का माल व अस्बाब मिलने से पहले गुज़र चुके हैं और कुछ ज़िन्दा रहे, उनका मेवा ख़ूब फला फूला या'नी दीन के साथ उन्होंने इस्लामी तरक़्क़ी व कुशादगी का दौर भी देखा और वो आराम व राहत की ज़िन्दगी भी पा गये। सच है **इन्ना मअ़ल उ़स्रि युस्रा** बेशक तंगी के बाद आसानी होती है।

3898. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे

٣٨٩٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ

أجفات القدر: إذا غلت فعلاها الزبد ثم تسكن فيذهب الزبد بلا منفعة فكذلك يميز الحق من الباطل. ﴿المهاد﴾ الفراش ﴿يدرؤون﴾: يدفعون درأته عني دفعته. ﴿سلام عليكم﴾ : أي يقولون : سلام عليكم. ﴿وإليه متاب﴾ توبتي. ﴿أفلم ييأس﴾: لم يتبين. ﴿قارعة﴾ : داهية. ﴿فأمليت﴾ : أطلت من الملي والملاوة ومنه. ﴿مليا﴾: ويقال للواسع الطويل من الأرض ملى من الأرض. ﴿أشق﴾ : أشد من المشقة. ﴿معقب﴾: مغير، وقال مجاهد: ﴿متجاورات﴾ : طيبها وخبيثها السباخ. ﴿صنوان﴾ : النخلتان : أو أكثر في أصل واحد. ﴿وغير صنوان﴾ : وحدها. ﴿بماء واحد﴾ : كصالح بني آدم وخبيثهم أبوهم واحد. ﴿السحاب الثقال﴾ : الذي فيه الماء. ﴿كباسط كفيه﴾ : يدعو الماء بلسانه ويشير إليه بيده فلا يأتيه أبدا. ﴿سالت أودية بقدرها﴾ تملأ بطن واد. ﴿زبدا رابيا﴾: زبد السيل: خبث الحديد والحلية.

ह़क़ बात़िल से इसी त़रह़ जुदा हो जाता है अल्मिदाह बिछौना। यदरून धकेलते हैं दूर करते हैं ये दरातुहू से निकला है या'नी मैंने उसको दूर किया दफ़ा कर दिया। सलाम अ़लैकुम या'नी फ़रिश्ते मुसलमानों को कहते जाएँगे तुम सलामत रहो। व इलैहि मताब में उसी की दरगाह में तौबा करता हूँ। अ फ़लम यब्अस किया उन्होंने नहीं जाना। क़ारिअ़त आफ़त मुसीबत। फ़अम्लयता मैंने ढीला छोड़ा मुह्लत दी ये लफ़्ज़ मल्ली और मिलावत से निकला है। उसी से निकला है जो जिब्राईल की ह़दीष़ में है। फ़लबिस्तु मलिय्या (या क़ुर्आन में है) वहजुर्नी मलिय्या और कुशादा लम्बी ज़मीन को मल्ली कहते हैं। अशुक्कु अफ़्अलुल तफ़्ज़ील का स़ैग़ा है मुशक़्क़त से या'नी बहुत सख़्त। मुअ़क़्क़ब ला मुअ़क़्क़ब लिहुक्मिही में या'नी नहीं बदलने वाला और मुजाहिद ने कहा। मुतजाविरात का मा'नी ये है कि कुछ क़ित़्अ़े उ़म्दह क़ाबिले ज़राअ़त हैं कुछ ख़राब शुर खारे हैं। स़िन्वान वो खजूर के पेड़ जिनकी जड़ मिली हुई हो (एक ही जड़ पर खड़े हों) ग़ैरा स़िन्वान अलग अलग जड़ पर सब एक ही पानी से उगते हैं (एक ही हवा से एक ही ज़मीन में आदमियों की भी यहो मिष़ाल है कोई अच्छा कोई बुरा ह़ालाँकि सब एक बाप आदम (अ़लैहि.) की औलाद हैं। अस्सिह़ाबुल ष़िक़ाल वो बादल जिनमें पानी भरा हुआ हो और वो पानी के बोझ से भारी—भरकम हों। कबासित़ि कफ़्फ़ैहि या'नी उस शख़्स़ की त़रह़ जो दूर से हाथ फैलाकर पानी को ज़ुबान से बुलाए हाथ से उसकी त़रफ़ इशारा करे इस सूरत में पानी कभी उसकी त़रफ़ नहीं आएगा। सालत औदियतुन बिकदरिहा या'नी नाले अपने अंदाज़ से बहते हैं। या'नी पानी भरकर ज़ब्दा राबिया से मुराद बहते पानी का फैन झाग ज़बद मिष़्लुहू से लोहे, ज़ेवरात वग़ैरह का फैन झाग मुराद है। लफ़्ज़े मुअ़क़्क़िबात से मुराद ये है कि रात के फ़रिश्ते अलग और दिन के अलग हैं।

जैसे दूसरी ह़दीष़ में है कि रात दिन के फ़रिश्ते अ़स्र और सुबह़ की नमाज़ में जमा हो जाते हैं। त़बरी ने निकाला कि ह़ज़रत उ़ष़्मान ने आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा आदमी पर कितने फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। आपने फ़र्माया कि हर आदमी पर दस फ़रिश्ते सुबह़ को और दस रात को मुतअ़य्यन रहते हैं।

١ - باب قوله : ﴿الله يعلم ما تحمل كل أنثى وما تغيض﴾

बाब 1 : आयत 'अल्लाहु यअलमु मा तहमिलु' की तफ़्सीर या'नी,

अल्लाह को इ़ल्म है उसका जो कुछ किसी मादा के ह़मल

बाब 1 : आयत 'अल्लाहु यअलमु मा तहमिलु' की तफ़्सीर या'नी,

अल्लाह को इ़ल्म है उसका जो कुछ किसी मादा के ह़मल

١- باب قَوْلِهِ : ﴿اللهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغِيضُ

में होता है और जो कुछ उनके रह़म में कमी-बेशी होती रहती है। ग़ीज़ अय नुक़िस कम किया गया।

الأَرْحَامُ﴾ غِيضَ : نُقِصَ

4697. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअ़न बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ग़ैब की पाँच कुँजियाँ हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि कल क्या होने वाला है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि औरतों के रह़म में क्या कमी बेशी होती रहती है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि बारिश कब बरसेगी, कोई शख़्स नहीं जानता कि उसकी मौत कहाँ होगी और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी। (राजेअ़ : 1039)

٤٦٩٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ، لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ. وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)). [راجع: ١٠٣٩]

तश्रीह : इस आयत से षाबित हुआ कि इ़ल्मे ग़ैब ख़ास़ अल्लाह के लिये है जो किसी ग़ैर के लिये इ़ल्मे ग़ैब का अ़क़ीदा रखता है वो झूठा है। पैग़म्बरों को भी इ़ल्मे ग़ैब ह़ासिल नहीं उनको जो कुछ अल्लाह चाहता है वह़्य के ज़रिये मा'लूम करा देता है। इसे ग़ैब दानी नहीं कहा जा सकता। ह़मल की कमी बेशी का मत़लब ये है कि पेट में एक बच्चा है या दो बच्चे या तीन या चार।

में होता है और जो कुछ उनके रहम में कमी-बेशी होती रहती है। ग़ीज़ अय नुक़िस कम किया गया।

الأَرْحَامُ﴾ غِيضَ : نُقِصَ

4697. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअ़न बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ग़ैब की पाँच कुँजियाँ हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि कल क्या होने वाला है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि औरतों के रहम में क्या कमी बेशी होती रहती है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि बारिश कब बरसेगी, कोई शख़्स नहीं जानता कि उसकी मौत कहाँ होगी और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी। (राजेअ़ : 1039)

٤٦٩٧- حدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الله بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ الله تَعَالَى عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ، لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ الله لاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ إِلاَّ الله، وَلاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ الله، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ الله، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ. وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ الله)). [راجع: ١٠٣٩]

तश्रीह : इस आयत से षाबित हुआ कि इल्मे ग़ैब ख़ास अल्लाह के लिये है जो किसी ग़ैर के लिये इल्मे ग़ैब का अ़क़ीदा रखता है वो झूठा है। पैग़म्बरों को भी इल्मे ग़ैब हासिल नहीं उनको जो कुछ अल्लाह चाहता है वह्य के ज़रिये मा'लूम करा देता है। इसे ग़ैब दानी नहीं कहा जा सकता। हमल की कमी बेशी का मतलब ये है कि पेट में एक बच्चा है या दो बच्चे या तीन या चार।

सूरह इब्राहीम की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

[١٤] سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ (بِسْمِ الله الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ).

तश्रीह : सूरह इब्राहीम मक्की है जिसमें बावन (52) आयात सात (7) रुकूअ़ और 831 कलिमात और 3434 हुरूफ़ हैं। हज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) दुनिया के अ़ज़ीमतरीन तारीख़ी इंसान हैं जिनसे दो बड़े ख़ानदान ज़ुहूर पज़ीर हुए जिनको बनी इस्राईल और बनी इस्माईल से याद किया जाता है। हज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) को आदमे षालिष भी कहा गया है। यहूद और नसारा और मुसलमान तीनों इनको अपना जद्दे अमजद (पूर्वज) तसव्वुर करते हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हाद का मा'नी बुलाने वाला, हिदायत करने वाला (नबी व रसूल मुराद हैं) और मुजाहिद ने कहा सदीद का मा'नी पीप और लहू और सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा उज़्कुरू निअ़मतल्लाहि अ़लैकुम का मा'नी ये है कि अल्लाह की जो नेअ़मतें तुम्हारे पास हैं उनको याद करो और जो जो अगले वाक़ियात उसकी क़ुदरत के हुए हैं और मुजाहिद ने कहा मिन कुल्लि मा सअल्तुमूहु का मा'नी ये है कि जिन जिन चीज़ों की तुमने रग़बत की यब्ग़ूनहा इवजा इसमें कजी पैदा करने की तलाश करते रहते हैं वइज़ तअज़्ज़ना

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هَادٍ : دَاعٍ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ صَدِيدٌ : قَيْحٌ وَدَمٌ. وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : اذْكُرُوا نِعْمَةَ الله عَلَيْكُمْ أَيَادِيَ الله عِنْدَكُمْ وَأَيَامَهُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ رَغِبْتُمْ إِلَيْهِ فِيهِ، يَبْغُونَهَا عِوَجًا : يَلْتَمِسُونَ لَهَا عِوَجًا. وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ : أَعْلَمَكُمْ آذَنَكُمْ. رَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي

है तअज्जुबम्मिन्ना कालहुल्हिब्रू व तस्दीक़ल्लहू मा मिन कल्बिन इल्ला व हुव बैन इस्बअयनि मिन अस़ाबिइर्रहमान अतानिल्लैलत रब्बी फ़ी अहसिन स़ूरतिन फवज़अ यदहू बैन कतफ़य हत्ता वजत्तु बुर्द अनामिलिही बैन षदई अनामिल उँगलियों की पोरें। ग़र्ज़ उँगलियों का इष्बात परवरदिगार के लिये ऐसा ही है जैसे वज्हुन और यदैनि और क़दमुन और रजुलुन और जम्बुन वग़ैरह का और अहले ह़दीष़ का अ़क़ीदा उनकी निस्बत ये है कि ये सब अपने मा'नी ज़ाहिरी पर मह़मूल हैं लेकिन उनकी ह़क़ीक़त अल्लाह ही जानता है और मुतकल्लिमीन उन चीज़ों की तावील करते हैं क़ुदरत वग़ैरह से। मैं कहता हूँ मुह़म्मद बिन स़ल्त रावी ने इस ह़दीष़ के रिवायत करते वक़्त छुँगलिया की त़रफ़ इशारा किया फिर पास वाली उँगली की त़रफ़ फिर उसके पास वाली उँगली की त़रफ़, यहाँ तक कि अंगूठे तक पहुँचे और उससे अहले तावील का मज़हब रद्द होता है। (वह़ीदी)

बाब आयत 'वल्अर्ज़ु जमीअन क़बज़्तुहू यौमल्क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुन बियमीनिही सुब्हानहू व तआ़ला अम्मा युश्रिकून' की तफ़्सीर,

باب ﴿وَالأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾.

4812. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद बिन मुसाफ़िर ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अबू सलमा और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना आप फ़र्मा रहे थे कि क़यामत के दिन अल्लाह सारी ज़मीन को अपनी मुट्ठी में लेगा और आसमान को अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा। फिर फ़र्माएगा, आज हुकूमत स़िर्फ़ मेरी है। दुनिया के बादशाह आज कहाँ हैं? (दीगर मक़ाम : 6519, 7382, 7413)

٤٨١٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدِ بْنِ مُسَافِرٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَقْبِضُ اللهُ الأَرْضَ، وَيَطْوِي السَّمَاوَاتِ بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يَقُولُ : أَنَا الْمَلِكُ، أَيْنَ مُلُوكُ الأَرْضِ؟)).

[أطرافه في : ٦٥١٩، ٧٣٨٢، ٧٤١٣].

बाब 4 : आयत 'व नुफ़िख़ फिस्स़ूरि फ़स़इक़ मन फिस्समावात' की तफ़्सीर में,

٤- باب قَوْلِهِ:

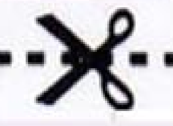
﴿وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ﴾.

और स़ूर फूँका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएँगे जो आसमानों और ज़मीनों में हैं सिवा उसके जिसको अल्लाह चाहे, फिर दोबारा स़ूर फूँका जाएगा तो फिर अचानक सबके सब देखते हुए उठ खड़े होंगे।

4813. मुझसे ह़सन ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रह़ीम ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने, उन्हें आ़मिर ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आख़िरी मर्तबा स़ूर फूँके जाने के बाद सबसे पहले अपना सर

٤٨١٣- حدثني الْحَسَنُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ عَامِرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ





बाब 4 : आयत 'व नुफ़िख़ फिस्सूरि फ़सइक़ मन फिस्समावात' की तफ़्सीर में,

٤- باب قَوْلِهِ:

और सूर फूँका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएँगे जो आसमानों और ज़मीनों में हैं सिवा उसके जिसको अल्लाह चाहे, फिर दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फिर अचानक सबके सब देखते हुए उठ खड़े होंगे।

﴿وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ﴾.

4813. मुझसे ह़सन ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रह़ीम ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने, उन्हें आ़मिर ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आख़िरी मर्तबा सूर फूँके जाने के बाद सबसे पहले अपना सर

٤٨١٣- حدثني الْحَسَنُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ عَامِرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ

उठाने वाला मैं होऊँगा लेकिन उस वक़्त मैं ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) को देखूँगा कि अ़र्श के साथ लिपटे हुए हैं, अब मुझे नहीं मा'लूम कि वो पहले ही से इसी त़रह़ थे या दूसरे सूर के बाद (मुझसे पहले उठकर अ़र्शे इलाही को थाम लेंगे) (राजेअ :

ﷺ قَالَ: ((إِنِّي أَوَّلُ مَنْ يَرْفَعُ رَأْسَهُ بَعْدَ النَّفْخَةِ الآخِرَةِ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى مُتَعَلِّقٌ بِالْعَرْشِ فَلاَ أَدْرِي، أَكَذَلِكَ كَانَ أَمْ بَعْدَ

उठाने वाला मैं होऊँगा लेकिन उस वक़्त मैं ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) को देखूँगा कि अ़र्श के साथ लिपटे हुए हैं, अब मुझे नहीं मा'लूम कि वो पहले ही से इसी त़रह़ थे या दूसरे सूर के बाद (मुझसे पहले उठकर अ़र्शे इलाही को थाम लेंगे) (राजेअ़ : 2411)

قَالَ: ((إِنِّي أَوَّلُ مَنْ يَرْفَعُ رَأْسَهُ بَعْدَ النَّفْخَةِ الآخِرَةِ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى مُتَعَلِّقٌ بِالْعَرْشِ فَلاَ أَدْرِي، أَكَذَلِكَ كَانَ أَمْ بَعْدَ النَّفْخَةِ)). [راجع: ٢٤١١]

4814. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने अबू स़ालेह़ से सुना और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, दोनों सूरों के फूँके जाने का दरम्यानी अ़र्सा चालीस है। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों ने पूछा, क्या चालीस दिन मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं फिर उन्होंने पूछा चालीस साल? उस पर भी उन्होंने इंकार किया। फिर उन्होंने पूछा चालीस महीने? उसके बारे में भी उन्होंने कहा कि मुझको ख़बर नहीं और हर चीज़ फ़ना हो जाएगी, सिवा रीढ़ की हड्डी के कि उसी से सारी मख़्लूक़ दोबारा बनाई जाएगी। (दीगर मक़ाम : 4935)

٤٨١٤- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي. قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ))، قَالُوا: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَرْبَعُونَ يَوْمًا؟ قَالَ أَبَيْتُ قَالَ: أَرْبَعُونَ سَنَةً قَالَ أَبَيْتُ قَالَ : أَرْبَعُونَ شَهْرًا : قَالَ أَبَيْتُ، وَيَبْلَى كُلُّ شَيْءٍ مِنَ الإِنْسَانِ إِلاَّ عَجْبَ ذَنَبِهِ فِيهِ يُرَكَّبُ الْخَلْقُ.

[طرفه في : ٤٩٣٥].

इस रिवायत में यूँ ही है लेकिन इब्ने मर्वदवैह की रिवायत में चालीस साल मज़्कूर हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से भी ऐसा ही मन्क़ूल है। ह़लीमी ने कहा अकष़र रिवायतें इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि दोनों नफ़्ख़ों में चालीस बरस का फ़ासला होगा।

सूरतुल मोमिन

[٤٠] سورة ﴿الْمُؤْمِنُ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा ह़ामीम का मा'नी अल्लाह को मा'लूम है जैसे दूसरी सूरतों में जो हुरूफ़े मुक़त्तआत शुरू में आए हैं उनके बारे मे ह़क़ीक़ी मआनी स़िर्फ़ अल्लाह ही को मा'लूम हैं। कुछ ने कहा ह़ामीम क़ुर्आन या सूरत का नाम है जैसे शुरैह़ इब्ने अबी औफ़ा अ़ब्सी इस शेअ़र में कहता है जबकि नेज़ा जंग में चलने लगा। पढ़ता है ह़ामीम पहले पढ़ना था। अत्तौल के मा'नी एह़सान और फ़ज़्ल करना। दाख़िरीन के मा'नी ज़लील व ख़्वार होकर। ह़ज़रत मुजाहिद (रह़) ने कहा उदऊकुम इलन्नजात से ईमान मुराद है। लयसा लहू दअ़वह या'नी बुत किसी की दुआ क़ुबूल नहीं कर सकता। यस्जरून के मा'नी वो दोज़ख़ के ईंधन बनेंगे। तम्रहून के मा'नी तुम इतराते थे। और अ़लाअ बिन ज़ियाद

قَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿حم﴾ مَجَازُهَا مَجَازُ أَوَائِلِ السُّوَرِ، وَيُقَالُ : بَلْ هُوَ اسْمٌ لِقَوْلِ شُرَيْحِ بْنِ أَبِي أَوْفَى الْعَبْسِيِّ.

يُذَكِّرُنِي حَامِيمَ وَالرُّمْحُ شَاجِرٌ
فَهَلاَّ تَلاَ حَامِيمَ قَبْلَ التَّقَدُّمِ

الطَّوْلُ: التَّفَضُّلُ. دَاخِرِينَ خَاضِعِينَ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿إِلَى النَّجَاةِ﴾ الإِيمَانِ. لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ يَعْنِي الْوَثَنَ. ﴿يُسْجَرُونَ﴾ تُوقَدُ بِهِمُ النَّارُ ﴿تَمْرَحُونَ﴾ تَبْطَرُونَ. وَكَانَ

يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ قَاتَلَهُمُ اللهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ﴾

हैं, जब वो बातें करते हैं तो तू उनकी बात सुनता है गोया वो बहुत बड़ी लकड़ी के खम्बे हैं जिनके साथ लोग तकिया लगाते हैं, हर एक ज़ोरदार आवाज़ को अपने ही बरख़िलाफ़ जानते हैं पस तुम ऐ नबी! इन दुश्मनों से बचते रहो। इन पर अल्लाह की मार हो कहाँ को बहके जाते हैं।

٤٩٠٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ أَصَابَ النَّاسَ فِيهِ شِدَّةٌ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ لأَصْحَابِهِ: لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى يَنْفَضُّوا مِنْ حَوْلِهِ، وَقَالَ: لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَأَرْسَلَ إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ فَسَأَلَهُ، فَاجْتَهَدَ يَمِينَهُ مَا فَعَلَ قَالُوا كَذَبَ زَيْدٌ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَقَعَ فِي نَفْسِي مِمَّا قَالُوا شِدَّةٌ، حَتَّى أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ تَصْدِيقِي فِي ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ﴾ فَدَعَاهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَغْفِرَ لَهُمْ فَلَوَّوْا رُؤُوسَهُمْ. وَقَوْلُهُ ﴿خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ﴾ قَالَ: كَانُوا رِجَالاً أَجْمَلَ شَيْءٍ.

[راجع: ٤٩٠٠]

4903. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआ़विया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक सफ़र (ग़ज़्व-ए-तबूक़ या बनी अल् मुस्तलक़) में थे जिसमें लोगों पर बड़े तंग औक़ात आए थे। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने अपने साथियों से कहा कि, जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जमा हैं उन पर कुछ ख़र्च मत करो ताकि वो उनके पास से मुंतशिर हो जाएँ, उसने ये भी कहा कि, अगर हम अब मदीना लौटकर जाएँगे तो इ़ज़्ज़त वाला वहाँ से ज़लीलों को निकाल बाहर करेगा। मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर उनकी इस बातचीत की ख़बर दी तो आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को बुलाकर पूछा। उसने बड़ी क़समें खाकर कहा कि मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही। लोगों ने कहा कि ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने झूठ बोला है। लोगों की इस त़रह़ की बातों से मैं बड़ा रंजीदा हुआ यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी तस्दीक़ फ़र्माई और ये आयत नाज़िल हुई इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना अल्अख़ या'नी जब आपके पास मुनाफ़िक़ आए फिर आप (ﷺ) ने उन्हें बुलाया ताकि उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ करें लेकिन उन्होंने अपने सर फेर लिये। ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआ़ला के इर्शाद ख़ुशुबुम् मुसन्नदह् गोया वो बहुत बड़े लकड़ी के खम्बे हैं (उनके बारे में इसलिये कहा गया कि) वो बड़े ख़ूबसूरत और डील डोल मअ़क़ूल मगर दिल में निफ़ाक़ था। (राजेअ़ : 4900)

٤- باب قَوْلُهُ

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ

बाब 4 : आयत 'व इज़ा क़ील लहुम तआ़लौ यस्तग़्फ़िर लकुम रसूलुल्लाहि लव्वव रूऊसहुम …'

बाब 4 : आयत 'व इज़ा क़ील लहुम तआलौ यस्तग़्फ़िर लकुम रसूलुल्लाहि लव्वव रूऊसहुम ...'

٤- باب قَوْلُهُ

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ

اللَّهِ لَوَّوْا رُؤُسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ﴾

حَرَّكُوا اسْتَهْزَؤُوا بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُقْرَأُ بِالتَّخْفِيفِ مِنْ لَوَيْتُ.

की तफ़्सीर या'नी, और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह के रसूल (ﷺ) तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार फ़र्माए तो वो अपना सर फेर लेते हैं और आप उन्हें देखेंगे कि घमण्ड करते हुए वो किस क़द्र बेरुख़ी बरत रहे हैं। लव्वव का मा'नी ये है कि अपने सर हंसी ठठ्ठे की राह से हिलाने लगे। कुछ ने लव्वव बर तख़्फ़ीफ़ वाव लवयत से पढ़ा है या'नी सर फेर लिया।

٤٩٠٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَمِّي فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ سَلُولٍ يَقُولُ : لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ حَتَّى يَنْفَضُّوا، وَلَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ. فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمِّي فَذَكَرَ عَمِّي لِلنَّبِيِّ ﷺ وَصَدَّقَهُمْ، فَأَصَابَنِي هَمٌّ لَمْ يُصِبْنِي مِثْلُهُ قَطُّ، فَجَلَسْتُ فِي بَيْتِي وَقَالَ عَمِّي : مَا أَرَدْتَ إِلَى أَنْ كَذَّبَكَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَقَتَكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ﴾، وَأَرْسَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَرَأَهَا وَقَالَ : ((إِنَّ اللَّهَ قَدْ صَدَّقَكَ)).

[راجع: ٤٩٠٠]

4904. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अपने चचा के साथ था। मैंने अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को कहते सुना कि, जो लोग रसूल (ﷺ) के पास हैं उन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि वह बिखर जाएँ और अगर अब हम मदीना वापस लौटेंगे तो हमम में से जो इज़्ज़त वाले हैं वो ज़लीलों को बाहर कर देंगे। मैंने उसका ज़िक्र अपने चचा से किया और उन्होंने रसूल (ﷺ) से कहा जब आँहज़रत (ﷺ) ने उन ही की तस्दीक़ कर दी तो मुझे उसका इतना अफ़सोस हुआ कि पहले कभी किसी बात पर न हुआ होगा, मैं ग़म से अपने घर मे बैठ गया। मेरे चचा ने कहा कि तुम्हारा क्या ऐसा ख़्याल था कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें झुठलाया और तुम पर ख़फ़ा हुए हैं? फिर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना.. अल आयत जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं तो कहते कि आप बेशक अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलवाकर इस आयत की तिलावत फ़र्माई और फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी तस्दीक़ नाज़िल कर दी है। (राजेअ : 4900)

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ग़ैबदाँ नहीं थे, दिलों का हाल सिर्फ़ अल्लाह तआला जानता है। अब्दुल्लाह बिन उबई ने क़समें खा खाकर अपनी बराअत ज़ाहिर की। आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी बातों का यक़ीन कर लिया बाद में वह्य इलाही ने अब्दुल्लाह बिन उबई का झूठ ज़ाहिर फ़र्माया और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) के ब यान की तस्दीक़ फ़र्माई जिससे हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) का दिल मुत्मईन हो गया और मुनाफ़िक़ीन का सूरह मुनाफ़िक़ीन में सारा पोल खोल दिया गया।

की तफ़्सीर या'नी, और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह के रसूल (ﷺ) तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार फ़र्माए तो वो अपना सर फेर लेते हैं और आप उन्हें देखेंगे कि घमण्ड करते हुए वो किस क़द्र बेरुख़ी बरत रहे हैं। लव्वव का मा'नी ये है कि अपने सर हंसी ठठ्ठे की राह से हिलाने लगे। कुछ ने लव्वव बर तख़ फ़ीफ़ वाव लवयत से पढ़ा है या'नी सर फेर लिया।

﴿ الله لَوَّوْا رُؤُسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ﴾ حَرَّكُوا اسْتَهْزَءُوا بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُقْرَأُ بِالتَّخْفِيفِ مِنْ لَوَيْتُ.

4904. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अपने चचा के साथ था। मैंने अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को कहते सुना कि, जो लोग रसूल (ﷺ) के पास हैं उन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि वह बिखर जाएँ और अगर अब हम मदीना वापस लौटेंगे तो हमम में से जो इज़्ज़त वाले हैं वो ज़लीलों को बाहर कर देंगे। मैंने उसका ज़िक्र अपने चचा से किया और उन्होंने रसूल (ﷺ) से कहा जब आँहज़रत (ﷺ) ने उन ही की तस्दीक़ कर दी तो मुझे उसका इतना अफ़सोस हुआ कि पहले कभी किसी बात पर न हुआ होगा, मैं ग़म से अपने घर मे बैठ गया। मेरे चचा ने कहा कि तुम्हारा क्या ऐसा ख़याल था कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें झुठलाया और तुम पर ख़फ़ा हुए हैं? फिर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना.. अल आयत जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं तो कहते कि आप बेशक अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलवाकर इस आयत की तिलावत फ़र्माई और फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी तस्दीक़ नाज़िल कर दी है। (राजेअ : 4900)

٤٩٠٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَمِّي فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ سَلُولٍ يَقُولُ : لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ حَتَّى يَنْفَضُّوا، وَلَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ. فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمِّي فَذَكَرَ عَمِّي لِلنَّبِيِّ ﷺ وَصَدَّقَهُمْ، فَأَصَابَنِي هَمٌّ لَمْ يُصِبْنِي مِثْلُهُ قَطُّ، فَجَلَسْتُ فِي بَيْتِي وَقَالَ عَمِّي : مَا أَرَدْتَ إِلَى أَنْ كَذَّبَكَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَقَتَكَ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللهِ﴾، وَأَرْسَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَرَأَهَا وَقَالَ : ((إِنَّ اللهَ قَدْ صَدَّقَكَ)).

[راجع: ٤٩٠٠]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ग़ैबदाँ नहीं थे, दिलों का हाल सिर्फ़ अल्लाह तआला जानता है। अब्दुल्लाह बिन उबई ने क़समें खा खाकर अपनी बराअत ज़ाहिर की। आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी बातों का यक़ीन कर लिया बाद में वह्य इलाही ने अब्दुल्लाह बिन उबई का झूठ ज़ाहिर फ़र्माया और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) के ब यान की तस्दीक़ फ़र्माई जिससे हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) का दिल मुत्मईन हो गया और मुनाफ़िक़ीन का सूरह मुनाफ़िक़ीन में सारा पोल खोल दिया गया।

बाब 5 : 'सवाउन अलैहिमुस्तग़्फ़र्त लहुम अम लम तस्तग़्फ़िर्लहुम लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम .... (अल्आय:)' की तफ़्सीर या'नी,

उनके लिये बराबर है ख़्वाह आप उनके लिये इस्तिग़्फ़ार करें या

٥- باب قَوْلِهِ :

﴿سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ اسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَهُمْ إِنَّ اللهَ لاَ

में सूरह फ़ुरक़ान पढ़ते सुना। मैं उनकी क़िरात को ग़ौर से सुनने लगा तो मा'लूम हुआ कि वो ऐसे बहुत से त़रीक़ों मे तिलावत कर रहे थे जिन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नहीं सिखाया था। मुम्किन था कि मैं नमाज़ ही में उनका सर पकड़ लेता लेकिन मैंने इंतिज़ार किया और जब उन्होंने सलाम फेरा तो मैंने उनके गले में चादर लपेट दी और पूछा ये सूरतें जिन्हें अभी अभी तुम्हें पढ़ते हुए मैंने सुना है तुम्हें किसने सिखाई हैं? उन्होंने कहा कि मुझे इस त़रह़ इन सूरतों को रसूले करीम (ﷺ) ने सिखाया है। मैंने कहा कि तुम झूठ बोल रहे हो। ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुझे भी ये सूरतें पढ़ाई हैं जो मैंने तुमसे सुनीं। मैं उन्हें खींचते हुए आप (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने ख़ुद सुना कि ये शख़्स सूरह फ़ुरक़ान ऐसी क़िरात से पढ़ रहा था। जिसकी ता'लीम आप (ﷺ) ने हमें नहीं दी है आप (ﷺ) मुझे भी सूरह फ़ुरक़ान पढ़ा चुके हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हिशाम! पढ़कर सुनाओ। उन्होंने इसी त़रह़ उसकी क़िरात की जिस त़रह़ मैं उनसे सुन चुका था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसी त़रह़ ये सूरत नाज़िल हुई है। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उ़मर! अब तुम पढ़ो। मैंने भी इसी त़रह़ क़िरात की जिस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे सिखाया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया उसी त़रह़ ये सूरत नाज़िल हुई थी। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुर्आन मजीद सात क़िस्म की क़िरातों पर नाज़िल हुआ है बस तुम्हारे लिये जो आसान हो उसके मुत़ाबिक़ पढ़ो। (राजेअ़: 2419)

يَقُولُ : سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَاسْتَمَعْتُ لِقِرَاءَتِهِ فَإِذَا هُوَ يَقْرَؤُهَا عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ لَمْ يُقْرِئْنِيهَا رَسُولُ اللهِ، فَكِدْتُ أُسَاوِرُهُ فِي الصَّلاَةِ، فَانْتَظَرْتُهُ حَتَّى سَلَّمَ فَلَبَّبْتُهُ فَقُلْتُ: مَنْ أَقْرَأَكَ هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ تَقْرَأُ؟ قَالَ: أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ. فَقُلْتُ لَهُ : كَذَبْتَ، فَوَ اللهِ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَهُوَ أَقْرَأَنِي هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ، فَانْطَلَقْتُ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَقُودُهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ عَلَى حُرُوفٍ لَمْ تُقْرِئْنِيهَا، وَإِنَّكَ أَقْرَأْتَنِي سُورَةَ الْفُرْقَانِ. فَقَالَ: ((يَا هِشَامُ اقْرَأْهَا)). فَقَرَأَهَا الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ: ((اقْرَأْ يَا عُمَرُ)). فَقَرَأْتُهَا الَّتِي أَقْرَأَنِيهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ)). [راجع: ٢٤١٩]

इस ह़दीष़ शरीफ़ में सूरह फ़ुरक़ान का लफ़्ज़ है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है। इस ह़दीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि उमूरे मुख़्तलिफ़ा में इंशिक़ाक़ व इफ़्तिराक से बचना ज़रूरी है।

5042. हमसे बिश्र बिन आदम ने बयान किया, कहा हमको अ़ली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक क़ारी को रात के वक़्त मस्जिद में क़ुर्आन मजीद पढ़ते हुए सुना तो फ़र्माया

٥٠٤٢ - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ آدَمَ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ قَارِئًا يَقْرَأُ مِنَ اللَّيْلِ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ:



5042. हमसे बिशर बिन आदम ने बयान किया, कहा हमको अली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक क़ारी को रात के वक़्त मस्जिद में कुर्आन मजीद पढ़ते हुए सुना तो फ़र्माया

٥٠٤٢- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ آدَمَ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ قَارِئًا يَقْرَأُ مِنَ اللَّيْلِ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ:

कि अल्लाह उस आदमी पर रह़म करे उसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जिन्हें मैंने फ़लाँ फ़लाँ सूरतों में से छोड़ रखा था। (राजेअ़ : 2655)

((يَرْحَمُهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا، آيَةً أَسْقَطْتُهَا مِنْ سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)).

[راجع: ٢٦٥٥]

कि अल्लाह उस आदमी पर रहम करे उसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जिन्हें मैंने फ़लाँ फ़लाँ सूरतों में से छोड़ रखा था। (राजेअ़ : 2655)

((يَرْحَمُهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا، آيَةً اسْقَطْتُهَا مِنْ سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)).

[راجع: ٢٦٥٥]

बाब 28 : क़ुर्आन मजीद की तिलावत साफ़ साफ़ और ठहर ठहरकर करना

٢٨- باب التَّرْتِيلِ فِي الْقِرَاءَةِ، وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلاً﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ﴾ وَمَا يُكْرَهُ أَنْ يُهَذَّ كَهَذِّ الشِّعْرِ. يُفْرَقُ : يُفَصَّلُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَرَقْنَاهُ : فَصَّلْنَاهُ.

और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सूरत मुज़्ज़म्मिल में फ़र्माया, और क़ुर्आन मजीद को तरतील से पढ़। (या'नी हर एक ह़र्फ़ अच्छी त़रह निकालकर इत़्मीनान के साथ) और सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया और हमने क़ुर्आन मजीद को थोड़ा थोड़ा करके इसलिये भेजा कि तू ठहर ठहरकर लोगों को पढ़कर सुनाए और शे'र व सुख़न की त़रह उसका जल्दी जल्दी पढ़ना मकरूह है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा इस सूरत में जो फ़रक़्ना का लफ़्ज़ है (व क़ुर्आनन फ़रक़्नाहू) उसका मा'नी ये है कि हमने उसे कई हिस्से करके उतारा।

5044. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे मह्दी बिन मैमून ने, कहा हमसे वासिल अह़दब ने, उनसे अबू वाइल ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से बयान किया कि हम उनकी ख़िदमत में सुबह सवेरे ह़ाज़िर हुए। ह़ाज़िरीन में से एक साह़ब ने कहा कि रात मैंने (तमाम) मुफ़स़्स़ल सूरतें पढ़ डालीं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बोले जैसे अश्आ़र जल्दी जल्दी पढ़ते हैं तुमने वैसे ही पढ़ ली होंगी। हमने क़िरात सुनी है और मुझे वो जोड़ वाली सूरतें भी याद हैं जिनको मिलाकर नमाज़ों म नबी करीम (ﷺ) पढ़ा करते थे। ये अठारह सूरतें मुफ़स़्स़ल की हैं और वो दो सूरतें जिनके शुरू में ह़ामीम है। (राजेअ़ : 775)

٥٠٤٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ حَدَّثَنَا وَاصِلٌ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : غَدَوْنَا عَلَى عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ رَجُلٌ : قَرَأْتُ الْمُفَصَّلَ الْبَارِحَةَ فَقَالَ: هَذًّا كَهَذِّ الشِّعْرِ إِنَّا قَدْ سَمِعْنَا الْقِرَاءَةَ، وَإِنِّي لأَحْفَظُ الْقُرَنَاءَ الَّتِي كَانَ يَقْرَأُ بِهِنَّ النَّبِيُّ ﷺ. ثَمَانِيَ عَشْرَةَ سُورَةً مِنَ الْمُفَصَّلِ وَسُورَتَيْنِ مِنْ آلِ حم.

[راجع: ٧٧٥]

5044. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे मूसा बिन अबी आइशा ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान, आप क़ुर्आन को जल्दी जल्दी लेने के लिये इस पर नाज़िल होते तो रसूले करीम (ﷺ) अपनी ज़ुबान और होंठ हिलाया करते थे। उसकी वजह से आपके लिये वह्य याद करने में बहुत बार पड़ता था और ये आपके चेहरे से भी ज़ाहिर हो जाता था। इसलिये अल्लाह

٥٠٤٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ﴾، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَزَلَ جِبْرِيلُ بِالْوَحْيِ،

मियाँ–बीवी से क़सम खिलवाई और फिर दोनों में जुदाई करा दी। (राजेअ : 4748)

قذف امرأته فأحلفهما النبي ﷺ ثم فرق بينهما. [راجع: ٤٧٤٨]

बाब : 28 लिआ़न की इब्तिदा मर्द करेगा (फिर औरत)

٢٨- باب يبدأ الرجل بالتلاعن

5307. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ह़स्सान ने, कहा कि हमसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि हिलाल बिन उमय्या ने अपनी बीवी पर तोह्मत लगाई, फिर वो आए और गवाही दी। नबी करीम (ﷺ) ने उस वक़्त फ़र्माया, अल्लाह ख़ूब जानता है कि तुममें से एक झूठा है, तो क्या तुममें से कोई (जो वाक़ई गुनाह का मुर्तकिब हुआ है) रुजूअ करेगा? उसके बाद उनकी बीवी खड़ी हुई और उन्होंने गवाही दी। अपने बरी होने की। (राजेअ : 2671)

٥٣٠٧- حدثني محمد بن بشار حدثنا ابن أبي عدي عن هشام بن حسان حدثنا عكرمة عن ابن عباس رضي الله عنهما أن هلال بن أمية قذف امرأته فجاء فشهد والنبي ﷺ يقول: ((إن الله يعلم أن أحدكما كاذب، فهل منكما تائب؟)) ثم قامت فشهدت. [راجع: ٢٦٧١]

तशरीह : बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है। ह़दीष़ से ये निकला कि पहले मर्द से गवाही लेनी चाहिये। इमाम शाफ़िई और अकष़र उ़लमा का यही क़ौल है। अगर औ़रत से पहले गवाही ली जाए तब भी लिआ़न दुरुस्त हो जाएगा। कहते हैं उस औ़रत ने पाँचवीं बार में ज़रा ताम्मुल किया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हम समझे कि वो अपने क़ुसूर का इक़रार करेगी मगर फिर कहने लगी मैं अपनी क़ौम को सारी उ़म्र के लिये ज़लील नहीं कर सकती और उसने पाँचवीं बार भी क़सम खाकर लिआ़न कर दिया।

बाब 29 : लिआ़न और लिआ़न के बाद त़लाक़ देने का बयान

٢٩- باب اللعان، ومن طلق بعد اللعان

5308. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उन्हें सहल बिन सअ़द साएदी ने ख़बर दी कि उ़वैमिर अ़ज्लानी, आ़सिम बिन अ़दी अंसारी के पास आए और उनसे कहा कि आ़सिम आपका क्या ख़्याल है कि एक शख़्स अगर अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखे तो क्या उसे क़त्ल कर देगा लेकिन फिर आप लोग उसे भी क़त्ल कर देंगे। आख़िर उसे क्या करना चाहिये? आ़सिम, मेरे लिये ये मसला पूछ दो। चुनाँचे आ़सिम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये मसला पूछा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस त़रह़ के सवालात को नापसंद फ़र्माया और इज़्हारे नागवारी किया। आ़सिम (रज़ि.) ने इस सिलसिले में आँह़ज़रत (ﷺ) से जो कुछ सुना उसका बहुत अष़र लिया। फिर जब घर वापस आए

٥٣٠٨- حدثنا إسماعيل قال: حدثني مالك عن ابن شهاب أن سهل بن سعد الساعدي أخبره أن عويمرا العجلاني جاء إلى عاصم بن عدي الأنصاري فقال له: يا عاصم أرأيت رجلا وجد مع امرأته رجلا أيقتله فتقتلونه، أم كيف يفعل؟ سل لي يا عاصم عن ذلك، فسأل عاصم رسول الله صلى الله عليه وسلم عن ذلك، فكره رسول الله صلى الله عليه وسلم المسائل وعابها حتى كبر على عاصم ما سمع من

इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि दो औरतें थीं। एक ने दूसरी को पत्थर दे मारा जिससे उसके पेट का हमल गिर गया। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मामले में एक ग़ुलाम या बाँदी दियत में दिये जाने का फ़ैसला किया। (राजेअ : 5758)

شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ امْرَأَتَيْنِ رَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى بِحَجَرٍ فَطَرَحَتْ جَنِينَهَا فَقَضَى فِيهِ النَّبِيُّ ﷺ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ.

[راجع: ٥٧٥٨]

5760. और इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे हज़रत सईद बिन मुसय्यिब ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जनीन जिसे उसकी माँ के पेट में मार डाला गया हो, की दियत के तौर पर एक ग़ुलाम या एक बाँदी दिये जाने का फ़ैसला किया था जिसे दियत देनी थी उसने कहा कि ऐसे बच्चे की दियत आख़िर क्यूँ दूँ जिसने न खाया, न पिया, न बोला और न विलादत के वक़्त ही आवाज़ निकाली? ऐसी सूरत में तो दियत नहीं हो सकती। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शख़्स तो काहिनों का भाई मा'लूम होता है। (राजेअ : 5758)

٥٧٦٠- وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَضَى فِي الْجَنِينِ يُقْتَلُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ وَلِيدَةٍ فَقَالَ: الَّذِي قُضِيَ عَلَيْهِ كَيْفَ أَغْرَمُ مَا لاَ أَكَلَ وَلاَ شَرِبَ وَلاَ نَطَقَ وَلاَ اسْتَهَلَّ؟ وَمِثْلُ ذَلِكَ بَطَلٌ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا هَذَا مِنْ إِخْوَانِ الْكُهَّانِ)).

[راجع: ٥٧٥٨]

तश्रीह : जो कुछ आँहज़रत (ﷺ) ने फ़ैसला फ़र्माया वही बरहक़ था बाक़ी उस शख़्स की हफ़्वात थीं जिनको आँहुज़ूर (ﷺ) ने कहानत से तश्बीह देकर मिष्ले कहानत के बातिल ठहरा दिया (ﷺ)।

5761. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान इब्ने उ़यैना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन हारिष़ ने और उनसे अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने कुत्ते की क़ीमत, ज़िना की उजरत और काहिन की कहानत की वजह से मिलने वाले हदिये से मना फ़र्माया है। (राजेअ : 2237)

٥٧٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَمَهْرِ الْبَغِيِّ وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ.

[راجع: ٢٢٣٧]

तश्रीह : या'नी एक मोमिन मुसलमान के लिये उनका खाना लेना हराम है। कुत्ते की क़ीमत, ज़ानिया औरत की उजरत और काहिनों के तोहफ़े उनका लेना और खाना सरासर हराम है।

5762. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें यह्या बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से काहिनों के बारे में पूछा

٥٧٦٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا




5762. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्‌री ने, उन्हें यह्या बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से काहिनों के बारे में पूछा

٥٧٦٢- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عبدِ اللهِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُرْوَةَ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी कोई बुनियाद नहीं। लोगों ने कहा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कुछ औक़ात वो हमें ऐसी चीज़ें भी बताते हैं जो स़ह़ीह़ हो जाती हैं। ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कलिमा ह़क़ होता है। उसे काहिन किसी जिन्नी से सुन लेता है वो जिन्नी अपने दोस्त काहिन के कान में डाल जाता है और फिर ये काहिन उसके साथ सौ झूठ मिलाकर बयान करते हैं। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इस कलिमे तिल्कल कलिमतु मिनल ह़क़ को मुर्सलन रिवायत करते थे फिर उन्होंने कहा मुझको ये ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने उसके बाद उसको मुस्नदन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ : 3210)

قَالَتْ: سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَاسٌ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِشَيْءٍ)) فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُمْ يحدثوننا أَحْيَانًا بِشَيْءٍ فَيَكُونُ حقًا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيُقِرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ فَيَخْلِطُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ)). قَالَ عَلِيٌّ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: مُرْسَلٌ. الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ ثُمَّ بَلَغَنِي أَنَّهُ أَسْنَدَهُ بَعْدَهُ. [راجع: ٣٢١٠]

तश्रीह़ : क़स्तलानी (रह़.) ने कहा ये कहानत या'नी शैत़ान जो आसमान पर जाकर फ़रिश्तों की बात उड़ा लेते थे, आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़ष़त से मौक़ूफ़ हो गई अब आसमान पर इतना शदीद पहरा है कि शैत़ान वहाँ फटकने नहीं पाते न अब वैसे काहिन मौजूद हैं जो शैत़ान से ता'ल्लुक़ रखते थे हमारे ज़माने के काहिन मह़ज़ अटकल पच्चू बात करते हैं।

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी कोई बुनियाद नहीं। लोगों ने कहा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कुछ औक़ात वो हमें ऐसी चीज़ें भी बताते हैं जो सहीह हो जाती हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कलिमा हक़ होता है। उसे काहिन किसी जिन्नी से सुन लेता है वो जिन्नी अपने दोस्त काहिन के कान में डाल जाता है और फिर ये काहिन उसके साथ सौ झूठ मिलाकर बयान करते हैं। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इस कलिमे तिल्कल कलिमतु मिनल हक़ को मुर्सलन रिवायत करते थे फिर उन्होंने कहा मुझको ये ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने उसके बाद उसको मुस्नदन हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3210)

قَالَتْ: سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَاسٌ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِشَيْءٍ)) فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُمْ يحدثوننا أَحْيَانًا بِشَيْءٍ فَيَكُونُ حقًا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيَقُرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ فَيَخْلِطُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ)). قَالَ عَلِيٌّ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: مُرْسَلٌ. الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ ثُمَّ بَلَغَنِي أَنَّهُ أَسْنَدَهُ بَعْدَهُ. [راجع: ٣٢١٠]

तश्रीह : क़स्तलानी (रह.) ने कहा ये कहानत या'नी शैतान जो आसमान पर जाकर फ़रिश्तों की बात उड़ा लेते थे, आँहज़रत (ﷺ) की बिअ़षत से मौक़ूफ़ हो गई अब आसमान पर इतना शदीद पहरा है कि शैतान वहाँ फटकने नहीं पाते न अब वैसे काहिन मौजूद हैं जो शैतान से ता'ल्लुक़ रखते थे हमारे ज़माने के काहिन महज़ अटकल पच्चू बात करते हैं।

बाब 47 : जादू का बयान

٤٧- باب السِّحْرِ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया, लेकिन शैतान काफ़िर हो गये वही लोगों को सेहर या'नी जादू सिखलाते हैं और उस इल्म की भी ता'लीम देते हैं जो मक़ामे बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारा गया था और वो दोनों किसी को भी इस इल्म की बातें नहीं सिखलाते थे जब तक ये न कह देते देखो अल्लाह ने हमको दुनिया में आज़माइश के लिये भेजा है तो जादू सीखकर काफ़िर मत बन। मगर लोग उन दोनों के इस तरह कह देने पर भी उनसे वो जादू सीख ही लेते जिससे वो मर्द और उसकी बीवी के बीच जुदाई डाल देते हैं और ये जादूगर जादू की वजह से बग़ैर अल्लाह के हुक्म के किसी को नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते। ग़र्ज़ वो इल्म सीखते हैं जिससे फ़ायदा तो कुछ नहीं उल्टा नुक़्सान है और यहूदियों को भी मा'लूम है कि जो कोई जादू सीखे उसका आख़िरत में कोई हिस्सा न रहा। और सूरह ताहा में फ़र्माया कि, जादूगर जहाँ भी जाए कमबख़्त बामुराद नहीं होता। और सूरह अंबिया में फ़र्माया, क्या तुम देख समझकर जादू की पैरवी करते हो, और सूरह ताहा में फ़र्माया कि हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को उनके जादू की वजह से ऐसा मा'लूम होता था कि वो रस्सियाँ और लाठियाँ सांप की तरह दौड़ रही हैं और सूरह फ़लक़ में फ़र्माया और बदी है उन औरतों की जो गिरहों में फूँक मारती हैं। और सूरह मोमिनून में फ़र्माया **फ़इन्ना तस्हरून** या'नी फिर तुम पर जादू की मार है।

5763. हमसे इब्राहीम बिन मूसा अशअ़री ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी ज़ुरैक़ के एक शख़्स यहूदी लबीद बिन आसम ने रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू कर दिया था और उसकी वजह से आँहज़रत (ﷺ) किसी चीज़ के बारे में ख़्याल करते कि आपने वो काम कर लिया है हालाँकि आपने वो काम न

٥٧٦٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَحَرَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي زُرَيْقٍ يُقَالُ لَهُ لَبِيدُ بْنُ

दिया है, उसमें उसे बरकत अ़ता फ़र्माइयो। (राजेअ़ : 1982) [راجع: ١٩٨٢]

6335. हमसे उ़श्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह् बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक सह़ाबी को मस्जिद में क़ुर्आन पढ़ते सुना तो फ़र्माया, अल्लाह इस पर रह़म करे इसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जो मैं फ़लाँ फ़लाँ सूरतों से भूल गया था। (राजेअ़ : 2655)

٦٣٣٥- حدثنا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً يَقْرَأُ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ: ((رَحِمَهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا آيَةً أَسْقَطْتُهَا فِي سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)) [راجع: ٢٦٥٥].

6336. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने, कहा मुझको सुलैमान बिन मह्रान ने ख़ बर दी, उन्हें अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने कोई चीज़ तक़्सीम फ़र्माई तो एक शख़्स़ बोला कि ये ऐसी तक़्सीम है कि इससे अल्लाह की रज़ा मक़्सूद नहीं है। मैंने नबी करीम (ﷺ) को इसकी ख़बर दी तो आप उस पर गुस्सा हुए और मैंने ख़फ़्गी के आषार आपके चेहरा-ए-मुबारक पर देखे और आपने फ़र्माया कि अल्लाह मूसा (अ़लैहिस्सलाम) पर रह़म फ़र्माए, उन्हें उससे भी ज़्यादा तकलीफ़ दी गई लेकिन उन्होंने स़ब्र किया। (राजेअ़ : 3150)

٦٣٣٦- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ قَسْمًا فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ هَذِهِ لَقِسْمَةٌ مَا أُرِيدَ بِهَا وَجْهُ اللهِ فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَغَضِبَ حَتَّى رَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ وَقَالَ: ((يَرْحَمُ اللهُ مُوسَى لَقَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)). [راجع: ٣١٥٠]

मैं भी ऐसे बेजा इल्तिज़ामात पर स़ब्र करूँगा। ये ए'तिराज़ करने वाला मुनाफ़िक़ था और ए'तिराज़ भी बिलकुल बात़िल था। आँह़ज़रत (ﷺ) मस़ालेह़े मिल्ली को सबसे ज़्यादा समझने वाले और मुस्तह़िक़्क़ीन को सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। फिर आपकी तक़्सीम पर ए'तिराज़ करना किसी मोमिन मुसलमान का काम नहीं हो सकता। सिवाय उस शख़्स़ के जिसका दिल नूरे ईमान से मह़रूम हो। तमाम अह़कामे इस्लाम के लिये यही क़ानून है।

बाब 20 : दुआ में सजअ़ या'नी क़ाफ़िये लगाना मकरूह है

٢٠- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ السَّجْعِ فِي الدُّعَاءِ

(क़ालल्अज़्हरी हुवल्कलामुल्मुकफ़्फ़ा मिन ग़ैर मुराअति वज़्निन) अज़्हरी ने कहा कि कलामे मुक़्फ़ा वो है जिसमें मह़ज़ क़ाफ़िया बन्दी हो वज़न की रिआयत मद्देनज़र न हो।

6337. हमसे यह़्या बिन मुह़म्मद बिन सकन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ब्बान बिन हिलाल अबू ह़बीब ने बयान किया, कहा हमसे हारून मुक़्री ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुबैर बिन ख़रीत ने बयान किया, उनसे इ़क्रिमा ने और उनसे

٦٣٣٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُحَمَّدِ بْنُ السَّكَنِ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ أَبُو حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا هَارُونُ الْمُقْرِىءُ، حَدَّثَنَا

क़दमी है। और क़तादा, यूनुस, हिशाम और अबू हिलाल ने इब्ने सीरीन से नक़ल किया है, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। और कुछ ने ये सारी रिवायत ह़दीष़ में शुमार की है लेकिन औ़फ़ की रिवायत ज़्यादा वाज़ेह है और यूनुस ने कहा कि क़ैद के बारे में रिवायत को मैं नबी करीम (ﷺ) की ह़दीष़ ही समझता हूँ। अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि तौक़ हमेशा गर्दनों ही में होते हैं।

وَكَانَ يَكْرَهُ الْغُلَّ فِي النَّوْمِ، وَكَانَ يُعْجِبُهُمُ الْقَيْدُ وَيُقَالُ: الْقَيْدُ ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ. وَرَوَى قَتَادَةُ وَيُونُسُ وَهِشَامٌ وَأَبُو هِلاَلٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَدْرَجَهُ بَعْضُهُمْ كُلَّهُ فِي الْحَدِيثِ وَحَدِيثُ عَوْفٍ أَبْيَنُ وَقَالَ يُونُسُ: لاَ أَحْسِبُهُ إِلاَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْقَيْدِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: لاَ تَكُونُ الأَغْلاَلُ إِلاَّ فِي الأَعْنَاقِ.

और बेड़ियाँ हाथों में। आयत, ग़ुल्लत अयदीहिम में हाथों की बेड़ियाँ मज़्कूर हैं।

बाब 27 : ख़्वाब में पानी का बहता चश्मा देखना

٢٧- بَابُ الْعَيْنِ الْجَارِيَةِ فِي الْمَنَامِ

7018. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत उम्मे अ़ला (रज़ि.) ने बयान किया जो उन्हीं में से एक ख़ातून हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। उन्होंने बयान किया कि जब अंसार ने मुहाजिरीन के क़याम के लिये कुर्आअंदाज़ी की तो ह़ज़रत उ़ष्मान बिन मज़ऊन (रज़ि.) का नाम हमारे यहाँ ठहरने के लिये निकला। फिर वो बीमार पड़े, हमने उनकी तीमारदारी की लेकिन उनकी वफ़ात हो गई। फिर हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) हमारे घर तशरीफ़ लाए तो मैंने कहा अबू साइब! तुम पर अल्लाह की रहमतें हों, मेरी गवाही है कि तुम्हें अल्लाह तआ़ला इ़ज़्ज़त बख़्शी है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ये कैसे मा'लूम हुआ? मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह की क़सम! मुझे मा'लूम नहीं है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि जहाँ तक इनका ता'ल्लुक़ है तो यक़ीनी बात (मौत) इन तक पहुँच चुकी है और मैं अल्लाह से इनके लिए ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह हूँ और इसके बावजूद मुझे मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा? उम्मे अ़ला ने कहा कि वल्लाह! इसके बाद मैं किसी इंसान की पाकी नहीं बयान करूँगी। उन्होंने बयान किया मैंने ह़ज़रत

٧٠١٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أُمِّ الْعَلاَءِ وَهِيَ امْرَأَةٌ مِنْ نِسَائِهِمْ بَايَعَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَتْ: طَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فِي السُّكْنَى حِينَ اقْتَرَعَتِ الأَنْصَارُ عَلَى سُكْنَى الْمُهَاجِرِينَ، فَاشْتَكَى فَمَرَّضْنَاهُ حَتَّى تُوُفِّيَ، ثُمَّ جَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ فَدَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ قَالَ: ((وَمَا يُدْرِيكِ؟)) قُلْتُ: لاَ أَدْرِي وَاللهِ قَالَ : ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ، إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ مِنَ اللهِ، وَاللهِ مَا أَدْرِي وَأَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا يُفْعَلُ بِي وَلاَ بِكُمْ)). قَالَتْ أُمُّ الْعَلاَءِ: فَوَ اللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ، قَالَتْ: وَرَأَيْتُ

रिवायत यूनुस, मअ़मर और इब्ने जुरैज ने ज़ुह्री से की, उनसे अबू सलमा ने, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रजम के सिलसिले में यही ह़दीष़ ज़िक्र की। (राजेअ: 5270)

وَابْنُ جُرَيْجٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الرَّجْمِ. [راجع: ٥٢٧٠]

ईदगाह के क़रीब उनको रजम किया गया। ये शख़्स माइज़ बिन मालिक असलमी मदनी हैं जो बहुक्मे नबवी संगसार किये गये। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहू।

बाब 20 : फ़रीक़ैन को इमाम का नसीह़त करना

7169. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बिलाशुब्हा मैं एक इंसान हूँ, तुम मेरे पास अपने झगड़े लाते हो। मुम्किन है तुममें से कुछ अपने मुक़द्दमे पेश करने में फ़रीक़े ष़ानी के मुक़ाबले में ज़्यादा चर्ब ज़ुबान हो और मैं तुम्हारी बात सुनकर फ़ैसला कर दूँ तो जिस शख़्स के लिये मैं उसके भाई (फ़रीक़े ष़ानी) का कोई ह़क़ दिला दूँ। चाहिये कि वो उसे न ले क्योंकि ये आग का एक टुकड़ा है जो मैं उसे देता हूँ। (राजेअ: 2458)

٢٠- باب مَوْعِظَةِ الإِمَامِ لِلْخُصُومِ

٧١٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ إِلَيَّ، وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَلْحَنَ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ فَأَقْضِي نَحْوَ مَا أَسْمَعُ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ أَخِيهِ شَيْئًا فَلاَ يَأْخُذْهُ فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّارِ)). [راجع: ٢٤٥٨]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि किसी भी क़ाज़ी का ग़लत़ फ़ैसला अल्लाह के नज़दीक स़ह़ीह़ नहीं हो सकता गो वो नाफ़िज़ कर दिया जाए, ग़लत़ ग़लत़ ही रहेगा। इस ह़दीष़ से इमाम मालिक और शाफ़िई और अह़मद और अहले ह़दीष़ और जुम्हूर उ़लमा का मज़हब ष़ाबित हुआ कि क़ाज़ी का फ़ैसला ज़ाहिर में नाफ़िज़ होता है लेकिन उसके फ़ैसले से जो चीज़ ह़राम है वो ह़लाल नहीं हो सकती न ह़लाल ह़राम होती है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का क़ौल रद्द हो गया कि क़ाज़ी का फ़ैसला ज़ाहिरन और बात़िनन दोनों त़रह़ नाफ़िज़ हो जाता है और इस मसले का ज़िक्र ऊपर हो चुका है। ह़दीष़ से ये भी निकला कि आँह़ज़रत (ﷺ) को ग़ैब का इल्म नहीं था। अल्बत्ता अल्लाह तआ़ला अगर आपको बतला देता तो मा'लूम हो जाता।

बाब 21 : अगर क़ाज़ी ख़ुद ओहद-ए-क़ज़ा ह़ासिल होने के बाद या उससे पहले एक अम्र का गवाह हो तो क्या उसकी बिना पर फ़ैसला कर सकता है?

और शुरैह़ (मक्का के क़ाज़ी) से एक आदमी (नाम नामा'लूम) ने कहा तुम इस मुक़द्दमे में गवाही दो। उन्होंने कहा तू बादशाह के पास जाकर कहना तो मैं वहाँ दूँगा। और इक्रिमा कहते हैं उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) से पूछा अगर तू ख़ुद अपनी आँख से किसी को ज़िना या चोरी का जुर्म करते देखे और तू अमीर हो तो क्या उसको ह़द लगा देगा। अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा

٢١- باب الشَّهَادَةِ تَكُونُ عِنْدَ الْحَاكِمِ فِي وِلاَيَتِهِ الْقَضَاءَ أَوْ قَبْلَ ذَلِكَ لِلْخَصْمِ

وَقَالَ شُرَيْحٌ الْقَاضِي: وَسَأَلَهُ إِنْسَانٌ الشَّهَادَةَ فَقَالَ: ائْتِ الأَمِيرَ حَتَّى أَشْهَدَ لَكَ وَقَالَ عِكْرِمَةُ: قَالَ عُمَرُ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ لَوْ رَأَيْتَ رَجُلاً عَلَى حَدٍّ زِنًا أَوْ سَرِقَةٍ وَأَنْتَ أَمِيرٌ فَقَالَ:

मताअ़ दौलत इकट्ठा करते हैं उनको महाजन या साहूकार का लक़ब देना चाहिये न कि शाह और फ़क़ीर का। (वहीदी) इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद

٣- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:

कि अगर मुझे पहले से वो मा'लूम होता जो बाद को मा'लूम हुआ

((لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ)).

7229. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उ़क़ैल ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा (रज़ि.) ने कि आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर) फ़र्माया अगर मुझको अपना हाल पहले से मा'लूम होता जो बाद में मा'लूम हुआ तो मैं अपने साथ क़ुर्बानी का जानवर न लाता और उ़मरह करके दूसरे लोगों की त़रह में भी एह़राम खोल डालता। (राजेअ़ : 294)

٧٢٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ. مَا سُقْتُ الْهَدْيَ وَلَحَلَلْتُ مَعَ النَّاسِ حِينَ حَلُّوا)). [راجع: ٢٩٤]

7230. हमसे ह़सन बिन उ़मर जुर्मी ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ बस़री ने, उनसे ह़बीब बिन अबी क़ुरैबा ने, उनसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने, उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के (हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर) साथ थे, फिर हमने ह़ज्ज के लिये तल्बिया कहा और 4 ज़िलहिज्ज को मक्का पहुँचे, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमे बैतुल्लाह और स़फ़ा और मरवा के त़वाफ़ का हुक्म दिया और ये कि हम उसे उ़मर: बना लें और उसके बाद ह़लाल हो जाएँ (सिवा उनके जिनके साथ क़ुर्बानी का जानवर हो वो ह़लाल नहीं हो सकते) बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) और त़लह़ा (रज़ि.) के सिवा हममें से किसी के पास क़ुर्बानी का जानवर न था और अ़ली (रज़ि.) यमन से आए थे और उनके साथ भी हदी थी और कहा कि मैं भी उसका एह़राम बाँधकर आया हूँ जिसका रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एह़राम बाँधा है, फिर दूसरे लोग कहने लगे कि क्या हम अपनी औ़रतों के साथ सुह़बत करने के बाद मिना जा सकते हैं? (इस ह़ाल में कि हमारे ज़कर मनी टपकाते हों?) आँह़ज़रत (ﷺ) ने इसपर फ़र्माया कि जो बात मुझे बाद में मा'लूम हुई अगर पहले ही मा'लूम होती तो मैं हदी साथ न लाता और अगर मेरे साथ हदी न होती तो मैं भी ह़लाल हो जाता। बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) से सुराक़ा बिन मालिक ने मुलाक़ात की। उस वक़्त आप बड़े शैत़ान पर रमी कर रहे थे और पूछा या रसूलल्लाह

٧٢٣٠- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، عَنْ حَبِيبٍ، عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَلَبَّيْنَا بِالْحَجِّ وَقَدِمْنَا مَكَّةَ لأَرْبَعٍ خَلَوْنَ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ، فَأَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نَطُوفَ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَأَنْ نَجْعَلَهَا عُمْرَةً وَلْنَحِلَّ إِلاَّ مَنْ كَانَ مَعَهُ هَدْيٌ قَالَ: وَلَمْ يَكُنْ مَعَ أَحَدٍ مِنَّا هَدْيٌ غَيْرَ النَّبِيِّ ﷺ وَطَلْحَةَ وَجَاءَ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ مَعَهُ الْهَدْيُ فَقَالَ: أَهْلَلْتُ بِمَا أَهَلَّ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: نَنْطَلِقُ إِلَى مِنًى وَذَكَرُ أَحَدِنَا يَقْطُرُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا أَهْدَيْتُ وَلَوْ لاَ أَنَّ مَعِي الْهَدْيَ لَحَلَلْتُ)) قَالَ: وَلَقِيَهُ سُرَاقَةُ وَهْوَ يَرْمِي جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ: أَلَنَا هَذِهِ خَاصَّةً؟ قَالَ: ((لاَ بَلْ لِلأَبَدِ)) قَالَ: وَكَانَتْ عَائِشَةُ قَدِمَتْ مَكَّةَ وَهِيَ

बिन हनीफ़ (रज़ि.) ने (जंगे सिफ़्फ़ीन के मौक़े पर) कहा कि लोगों! अपने दीन के मुक़ाबले मे अपनी राय को बेहक़ीक़त समझो। मैंने अपने आपको अबू जन्दल (रज़ि.) के वाक़िये के दिन (सुलह हुदैबिया के मौक़े पर) देखा कि अगर मेरे अंदर रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से हटने की ताक़त होती तो मैं उस दिन आपसे इंह्रिराफ़ करता (और कुफ़्फ़ारे कुरैश के साथ उन शराइत को क़ुबूल न करता) और हमने जब किसी मुहिम पर अपनी तलवारें काँधों पर रखीं (लड़ाई शुरू की) तो उन तलवारों की बदौलत हमको एक आसानी मिल गई जिसे हम पहचानते थे मगर इस मुहिम में (या'नी जंगे सिफ़्फ़ीन में हम मुश्किल में गिरफ़्तार हैं दोनों तरफ़ वाले अपने अपने दलाइल पेश करते हैं) अबू आ'मश ने कहा कि अबू वाइल ने बताया कि मैं सिफ़्फ़ीन में मौजूद था और सिफ़्फ़ीन की लड़ाई भी क्या बुरी लड़ाई थी जिसमें मुसलमान आपस में कट मरे। (राजेअ : 3181)

عَوَانَة، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّهِمُوا رَأْيَكُمْ عَلَى دِينِكُمْ، لَقَدْ رَأَيْتُنِي يَوْمَ أَبِي جَنْدَل، وَلَوْ أَسْتَطِيعُ أَنْ أَرُدَّ أَمْرَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَرَدَدْتُهُ، وَمَا وَضَعْنَا سُيُوفَنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا إِلَى أَمْرٍ يُفْظِعُنَا إِلاَّ أَسْهَلْنَ بِنَا إِلَى أَمْرٍ نَعْرِفُهُ، غَيْرَ هَذَا الأَمْرِ قَالَ: وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ شَهِدْتُ صِفِّينَ وَبِئْسَتْ صِفُّونَ.
[راجع: ٣١٨١]

तशरीह : कुछ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़्यादा है, **क़ाल अबू अब्दुल्लाहि इत्तहमू रायकुम यक़ूलु मालम यकुन फ़ीहि किताबुन व ला सुन्नतुन व ला यम्बी लहू अंय्युफ़्तिय** इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा **इत्तहमू रायकुम** जो सहल की कलाम में है इसका ये मतलब है कि हर मसले में जब तक किताब और सुन्नत से कोई दलील न हो तो अपनी राय को सह़ीह़ न समझो और राय पर फ़त्वा न दो बल्कि किताबो सुन्नत में ग़ौर करके उसमें से उसका हुक्म निकालो। इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने कहा राय मज़्मूम से वही राय मुराद है कि किताबो सुन्नत को छोड़कर आदमी क़यास पर अ़मल करे।

बाब 8 : आँह़ज़रत (ﷺ) ने कोई मसला राय या क़यास से नहीं बतलाया

٨- باب مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُسْأَلُ مِمَّا لَمْ يُنْزَلْ عَلَيْهِ الْوَحْيُ

बल्कि जब आपसे कोई ऐसी बात पूछी जाती जिस बाब में वह्य न उतरी होती तो आप फ़र्माते मैं नहीं जानता या वह्य उतरने तक ख़ामोश रहते कुछ जवाब न देते क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह निसा में फ़र्माया ताकि अल्लाह जैसा तुझको बतलाये उसके मुवाफ़िक़ तू हुक्म दे। (सूरह निसा : 105)
और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा गया रूह़ क्या चीज़ है? आप ख़ामोश हो रहे यहाँ तक कि ये आयत उतरी।

فَيَقُولُ: ((لاَ أَدْرِي)) أَوْ لَمْ يُجِبْ حَتَّى يُنْزَلَ عَلَيْهِ الْوَحْيُ وَلَمْ يَقُلْ بِرَأْيٍ وَلاَ بِقِيَاسٍ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿بِمَا أَرَاكَ اللهُ﴾ [النساء : ١٠٥]
وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ : سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الرُّوحِ فَسَكَتَ حَتَّى نَزَلَتِ الآيَةُ.

7309. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा मैं ने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह

٧٣٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: مَرِضْتُ

बाब 8 : आँहज़रत (ﷺ) ने कोई मसला राय या क़यास से नहीं बतलाया

٨- باب مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُسْأَلُ مِمَّا لَمْ يُنْزَلْ عَلَيْهِ الْوَحْيُ

فَيَقُولُ : ((لاَ أَدْرِي)) أَوْ لَمْ يُجِبْ حَتَّى يُنْزَلَ عَلَيْهِ الْوَحْيُ وَلَمْ يَقُلْ بِرَأْيٍ وَلاَ بِقِيَاسٍ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿بِمَا أَرَاكَ اللهُ﴾ [النساء : ١٠٥]

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ : سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الرُّوحِ فَسَكَتَ حَتَّى نَزَلَتِ الآيَةُ.

बल्कि जब आपसे कोई ऐसी बात पूछी जाती जिस बाब में वह्य न उतरी होती तो आप फ़र्माते मैं नहीं जानता या वह्य उतरने तक ख़ामोश रहते कुछ जवाब न देते क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह निसा में फ़र्माया ताकि अल्लाह जैसा तुझको बतलाये उसके मुवाफ़िक़ तू हुक्म दे। (सूरह निसा : 105)
और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) से पूछा गया रूह क्या चीज़ है? आप ख़ामोश हो रहे यहाँ तक कि ये आयत उतरी।

٧٣٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: مَرِضْتُ فَجَاءَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ يَعُودُنِي وَأَبُو بَكْرٍ وَهُمَا مَاشِيَانِ، فَأَتَانِي وَقَدْ أُغْمِيَ عَلَيَّ، فَتَوَضَّأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ صَبَّ وَضُوءَهُ عَلَيَّ فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَرُبَّمَا قَالَ: سُفْيَانُ فَقُلْتُ: أَيْ رَسُولَ اللهِ كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي؟ قَالَ: فَمَا أَجَابَنِي بِشَيْءٍ حَتَّى نَزَلَتْ آيَةُ الْمِيرَاثِ. [راجع: ١٩٤]

7309. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा मैं ने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह

(रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं बीमार पड़ा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) अ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए। ये दोनों बुज़ुर्ग पैदल चलकर आए थे, फिर आँहज़रत (ﷺ) पहुँचे तो मुझ पर बेहोशी त़ारी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मुझ छिड़का, उससे मुझे अफ़ाक़ा हुआ तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! और कुछ औक़ात सुफ़यान ने ये अल्फ़ाज़ बयान किये कि मैंने कहा। अय रसूलुल्लाह! मैं अपने माल के बारे में किस त़रह़ फ़ैसला करूँ, मैं अपने माल का क्या करूँ? बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया। यहाँ तक कि मीराष़ की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ : 194)

तश्रीह : ह़दीष़ से आपका सुकूत निकला, वह्य उतरने तक लेकिन ये फ़र्माना कि मैं नहीं जानता इब्ने ह़िब्बान की रिवायत में है, एक शख़्स ने आप (ﷺ) से पूछा कौनसी जगह अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया नहीं जानता। दारे क़ुत्नी और ह़ाकिम की रिवायत में है आपने फ़र्माया मैं नहीं जानता ह़ुदूदे गुनाह करने वालों का कफ़्फ़ारा है या नहीं। मिह्लब ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने कुछ मुश्किल मुक़ामात में सुकूत फ़र्माया लेकिन आप ही ने अपनी उम्मत को क़यास की ता'लीम फ़र्माई। एक औरत से फ़र्माया अगर तेरे बाप पर क़र्ज़ होता तो तू अदा करती या नहीं? तो अल्लाह का ह़क़ ज़रूर अदा करना होगा। ये ऐने क़यास है और इमाम बुख़ारी (रह़.) का मत़लब ये नहीं है कि बिलकुल क़यास न करना चाहिये बल्कि उनका मत़लब ये है कि ऐसा क़यास जो उसूले शरइ़या के ख़िलाफ़ हो या किसी दलीले शरई़ पर मबनी न हो स़िर्फ़ एक ख़्याली बात हो न करना चाहिये और ये मसला तो उ़लमा का इज्मा है कि नस़ मौजूद होते हुए क़यास जाइज़ नहीं और जो शख़्स़ ह़दीष़ का ख़िलाफ़ करता है ह़ालाँकि वो दूसरी ह़दीष़ से उसका मुआ़रिज़ा न करता हो न उसके नस्ख़ का दा'वा करे न उसकी सनद में क़दह़ करे तो उसकी अ़दालत जाती रहेगी वो लोगों का इमाम कहाँ हो सकता है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने फ़र्माया जो आँहज़रत (ﷺ) से ष़ाबित हो वो तो सर और आँखों पर है और स़ह़ाबा के मुख़्तलिफ़ क़ौलों में से हम कोई क़ौल चुन लेंगे। मैं कहता हूँ बस ह़नफ़िया को अपने इमाम के क़ौल पर तो कम अज़्कम चलना चाहिये।

(रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं बीमार पड़ा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) अयादत के लिये तशरीफ़ लाए। ये दोनों बुज़ुर्ग पैदल चलकर आए थे, फिर आँहज़रत (ﷺ) पहुँचे तो मुझ पर बेहोशी तारी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मुझ छिड़का, उससे मुझे अफ़ाक़ा हुआ तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! और कुछ औक़ात सुफ़यान ने ये अल्फ़ाज़ बयान किये कि मैंने कहा। अय रसूलुल्लाह! मैं अपने माल के बारे में किस तरह फ़ैसला करूँ, मैं अपने माल का क्या करूँ? बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया। यहाँ तक कि मीराष़ की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ : 194)

فَجَاءَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ يَعُودُنِي وَأَبُو بَكْرٍ وَهُمَا مَاشِيَانِ، فَأَتَانِي وَقَدْ أُغْمِيَ عَلَيَّ، فَتَوَضَّأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ صَبَّ وَضُوءَهُ عَلَيَّ فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَرُبَّمَا قَالَ: سُفْيَانُ فَقُلْتُ: أَيْ رَسُولَ اللهِ كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي؟ قَالَ: فَمَا أَجَابَنِي بِشَيْءٍ حَتَّى نَزَلَتْ آيَةُ الْمِيرَاثِ. [راجع: ١٩٤]

तश्रीह : हृदीष़ से आपका सुकूत निकला, वह्य उतरने तक लेकिन ये फ़र्माना कि मैं नहीं जानता इब्ने ह्रिब्बान की रिवायत में है, एक शख़्स ने आप (ﷺ) से पूछा कौनसी जगह अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया नहीं जानता। दारे क़ुत्नी और ह्राकिम की रिवायत में है आपने फ़र्माया मैं नहीं जानता हुदूदे गुनाह करने वालों का कफ़्फ़ारा है या नहीं। मिह्लब ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने कुछ मुश्किल मुक़ामात में सुकूत फ़र्माया लेकिन आप ही ने अपनी उम्मत को क़यास की ता'लीम फ़र्माई। एक औरत से फ़र्माया अगर तेरे बाप पर क़र्ज़ होता तो तू अदा करती या नहीं? तो अल्लाह का ह्रक़ ज़रूर अदा करना होगा। ये ऐने क़यास है और इमाम बुख़ारी (रह़.) का मतलब ये नहीं है कि बिलकुल क़यास न करना चाहिये बल्कि उनका मतलब ये है कि ऐसा क़यास जो उसूले शरइया के ख़िलाफ़ हो या किसी दलीले शरई पर मबनी न हो सिर्फ़ एक ख़याली बात हो न करना चाहिये और ये मसला तो उलमा का इज्मा है कि नस़ मौजूद होते हुए क़यास जाइज़ नहीं और जो शख़्स हृदीष़ का ख़िलाफ़ करता है ह्रालाँकि वो दूसरी हृदीष़ से उसका मुआरिज़ा न करता हो न उसके नस्ख़ का दा'वा करे न उसकी सनद में क़दह़ करे तो उसकी अदालत जाती रहेगी वो लोगों का इमाम कहाँ हो सकता है और इमाम अबू ह्रनीफ़ा (रह़.) ने फ़र्माया जो आँहज़रत (ﷺ) से षाबित हो वो तो सर और आँखों पर है और स़ह्राबा के मुख़्तलिफ़ क़ौलों में से हम कोई क़ौल चुन लेंगे। मैं कहता हूँ बस ह्रनफ़िया को अपने इमाम के क़ौल पर तो कम अज़्कम चलना चाहिये।

बाब 9 : रसूलुल्लाह (ﷺ) का अपनी उम्मत के मर्दों और औरतों को वही बातें सिखाना जो अल्लाह ने आपको सिखाई थीं बाक़ी राय और तम्षील आपने नहीं सिखाई

٩- باب تَعْلِيمِ النَّبِيِّ ﷺ أُمَّتَهُ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ مِمَّا عَلَّمَهُ اللهُ لَيْسَ بِرَأْيٍ وَلاَ تَمْثِيلٍ

तम्षील या'नी एक चीज़ का हुक्म दूसरी चीज़ के मिष्ल क़रार देना बवजह इल्लत जामेआ के जिसको क़यास कहते हैं।

7310. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह्रमान बिन अस्बहानी ने, उनसे अबू स़ालेह़ ज़क्वान ने और उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह्राज़िर हुई और कहा या रसूलल्लाह! आपकी तमाम अह्रादीष़ मर्द ले गये, हमारे लिये भी आप कोई दिन अपनी तरफ़ से मख़्सूस़ कर दें जिसमें हम आपके पास आएँ और आप हमें वो ता'लीमात दें जो

٧٣١٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ ذَكْوَانَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ: فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ ذَهَبَ الرِّجَالُ بِحَدِيثِكَ فَاجْعَلْ لَنَا مِنْ نَفْسِكَ يَوْمًا نَأْتِيكَ فِيهِ

रसूलल्लाह! ये क्या है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये रहमत है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में रखी है और अल्लाह भी अपने उन्हीं बन्दों पर रहम करता है जो रहम दिल होते हैं। (राजेअ : 1284)

((هَذِهِ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللهُ فِي قُلُوبِ عِبَادِهِ وَإِنَّمَا يَرْحَمُ اللهُ مِنْ عِبَادِهِ الرُّحَمَاءَ)). [راجع: ١٢٨٤]

तर्जुम-ए-बाब यहीं से निकला कि अल्लाह के लिये सिफ़ते रहम का इष्बात हुआ।

बाब 3 : अल्लाह तआला का इर्शाद सूरह वज़्ज़ारियात में, मैं बहुत रोज़ी देने वाला, ज़ोरदार मज़बूत हूँ

٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَنَا الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ﴾

तश्रीह : कुर्आन मजीद में यूँ है, **इन्नल्लाह हुवर्रज़्ज़ाक़ु ज़ुल कुव्वतिल मतीन** (अज़्ज़ारियात : 58) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ लफ़्ज़ **अन्नर्रज़्ज़ाक़** लिखे हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि) की यही क़िरात है।

7378. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे अबू अब्दुर्रहमान सुल्मी ने और उनसे अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तकलीफ़ वो बात सुनकर अल्लाह से ज़्यादा सब्र करने वाला कोई नहीं है। कमबख़्त मुश्रिक कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और फिर भी वो उन्हें माफ़ करता है और उन्हें रोज़ी देता है। (राजेअ : 6099)

٧٣٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا أَحَدٌ أَصْبَرَ عَلَى أَذًى سَمِعَهُ مِنَ اللهِ يَدْعُونَ لَهُ الْوَلَدَ، ثُمَّ يُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ)). [راجع: ٦٠٩٩]

बाब 4 : अल्लाह तआला का इर्शाद है सूरह जिन में कि, वो ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब को किसी पर नहीं खोलता।

٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿عَالِمُ الْغَيْبِ فَلاَ يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا﴾ [الجن: ٢٦]. ﴿وَإِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾، وَأَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ - ﴿وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلاَ تَضَعُ إِلاَّ بِعِلْمِهِ﴾ - ﴿إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾. قَالَ يَحْيَى بْنُ زِيَادٍ الظَّاهِرُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا وَالْبَاطِنُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا.

और सूरह लुक्मान में फ़र्माया, बिला शुब्हा अल्लाह के पास क़यामत का इल्म है, और उसने अपने इल्म ही से उसे नाज़िल किया। और औरत जिसे अपने पेट में उठाती है और जो कुछ जनती है वो उसी के इल्म के मुताबिक़ होता है और उसी की तरफ़ क़यामत में लौटाया जाएगा। यह्या बिन ज़ियाद फ़रा ने कहा हर चीज़ पर ज़ाहिर है या'नी इल्म की वजह से और हर चीज़ पर बातिन है या'नी इल्म की वजह है।

7379. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उन्होंने

٧٣٧٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ



बाब 4 : अल्लाह तआला का इर्शाद है सूरह जिन में कि, वो ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब को किसी पर नहीं खोलता।

٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿عَالِمُ الْغَيْبِ فَلاَ يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا﴾ [الجن: ٢٦]. ﴿وَإِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾، وَأَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ - ﴿وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلاَ تَضَعُ إِلاَّ بِعِلْمِهِ﴾ - ﴿إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾. قَالَ يَحْيَى بْنُ زِيَادٍ الظَّاهِرُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا وَالْبَاطِنُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا.

और सूरह लुक़्मान में फ़र्माया, बिला शुब्हा अल्लाह के पास क़यामत का इल्म है, और उसने अपने इल्म ही से उसे नाज़िल किया। और औरत जिसे अपने पेट में उठाती है और जो कुछ जनती है वो उसी के इल्म के मुताबिक़ होता है और उसी की तरफ़ क़यामत में लौटाया जाएगा। यह्या बिन ज़ियाद फ़रा ने कहा हर चीज़ पर ज़ाहिर है या'नी इल्म की वजह से और हर चीज़ पर बातिन है या'नी इल्म की वजह है।

٧٣٧٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، إِلا اللهُ وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)). [راجع: ١٠٣٩]

7379. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उन्होंने

कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। ग़ैब की पाँच कुंजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि रहम मादर में क्या है, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि बारिश कब आएगी, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि किस जगह कोई मरेगा और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी? (राजेअ: 1039)

तश्रीह : इस पर सब मुसलमानों का इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ैब का इल्म आँहज़रत (ﷺ) को भी न था मगर जो बात अल्लाह तआला आपको बतला देता वो मा'लूम हो जाती। इब्ने इस्हाक़ ने मग़ाज़ी में नक़ल किया कि आँह ज़रत (ﷺ) की ऊँटनी गुम हो गई तो इब्ने सल्लत कहने लगा। मुहम्मद (ﷺ) अपने तईं पैग़म्बर कहते हैं और आसमान के हालात तुमसे बयान करते हैं लेकिन उनको अपनी ऊँटनी की ख़बर नहीं वो कहाँ है? ये बात आँहज़रत (ﷺ) को पहुँची तो फ़र्माया एक शख़्स ऐसा ऐसा कहता है और मैं तो क़सम अल्लाह की वही बात जानता हूँ जो अल्लाह तआला ने मुझको बतलाई और अब अल्लाह तआला ने मुझको बतला दिया वो ऊँटनी फ़लाँ घाटी में है, एक पेड़ पर अटकी हुई है, आख़िर सहाबा गये और उसको लेकर आए।

٧٣٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ كَذَبَ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ تُدْرِكُهُ الأَبْصَارُ﴾ [الأنعام: ١٠٣] وَمَنْ حَدَّثَكَ أَنَّهُ يَعْلَمُ الْغَيْبَ فَقَدْ كَذَبَ، وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ يَعْلَمُ الْغَيْبَ إِلاَّ اللهُ﴾. [راجع: ٣٢٣٤]

7380. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे शअबी ने बयान किया, कि अगर तुमसे कोई ये कहता है कि मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा तो वो ग़लत कहता है क्योंकि अल्लाह तआला अपने बारे में ख़ुद कहता है कि नज़रें उसको देख नहीं सकतीं और जो कोई कहता है कि आँहज़रत (ﷺ) ग़ैब जानते थे तो ग़लत कहता है क्योंकि अल्लाह तआला ख़ुद कहता है कि ग़ैब का इल्म अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं। (राजेअ : 3234)

तश्रीह : सच है,

इल्म ग़ैबी किस नुमी दांद बजुज़ परवरदिगारगर किसे दा'वा कन्द हर्गिज़ अज़्बावर मदार

जो ग़ाली लोग रसूले करीम (ﷺ) के लिये इल्मे ग़ैब षाबित करते हैं वो क़ुर्आन मजीद की तहरीफ़ करते हैं और अज़्ख़ुद एक ग़लत अक़ीदा घड़ते हैं। लोगों को ऐसे ख़न्नास लोगों से दूर रहकर अपने दीन व ईमान की हिफ़ाज़त करनी चाहिये। रसूले करीम (ﷺ) ने जो भी ग़ायबाना ख़बरें दी हैं वो सब वह्य इलाही से हैं। उनको ग़ैब कहना लोगों को धोखा देना है।

कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। ग़ैब की पाँच कुँजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि रह़म मादर में क्या है, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि बारिश कब आएगी, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि किस जगह कोई मरेगा और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी? (राजेअ़ : 1039)

دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، إِلا اللهُ وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)).

[راجع: ١٠٣٩]

तश्रीह : इस पर सब मुसलमानों का इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ैब का इल्म आँह़ज़रत (ﷺ) को भी न था मगर जो बात अल्लाह तआ़ला आपको बतला देता वो मा'लूम हो जाती। इब्ने इस्ह़ाक़ ने मग़ाज़ी में नक़ल किया कि आँह़ ज़रत (ﷺ) की ऊँटनी गुम हो गई तो इब्ने स़ल्लत कहने लगा। मुह़म्मद (ﷺ) अपने तईं पैग़म्बर कहते हैं और आसमान के ह़ालात तुमसे बयान करते हैं लेकिन उनको अपनी ऊँटनी की ख़बर नहीं वो कहाँ है? ये बात आँह़ज़रत (ﷺ) को पहुँची तो फ़र्माया एक शख़्स़ ऐसा ऐसा कहता है और मैं तो क़सम अल्लाह की वही बात जानता हूँ जो अल्लाह तआ़ला ने मुझको बतलाई और अब अल्लाह तआ़ला ने मुझको बतला दिया वो ऊँटनी फ़लाँ घाटी में है, एक पेड़ पर अटकी हुई है, आख़िर स़ह़ाबा गये और उसको लेकर आए।

7380. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने बयान किया, कि अगर तुमसे कोई ये कहता है कि मुह़म्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा तो वो ग़लत़ कहता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बारे में ख़ुद कहता है कि नज़रें उसको देख नहीं सकतीं और जो कोई कहता है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ग़ैब जानते थे तो ग़लत़ कहता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ख़ुद कहता है कि ग़ैब का इल्म अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं। (राजेअ़ : 3234)

٧٣٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ كَذَبَ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ تُدْرِكُهُ الأَبْصَارُ﴾ [الأنعام: ١٠٣] وَمَنْ حَدَّثَكَ أَنَّهُ يَعْلَمُ الْغَيْبَ فَقَدْ كَذَبَ، وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ يَعْلَمُ الْغَيْبَ إِلاَّ اللهُ﴾).

[راجع: ٣٢٣٤]

तश्रीह : सच है,

इल्म ग़ैबी किस नुमी दांद बजुज़ परवरदिगारगर किसे दा'वा कन्द हर्गिज़ अज़्बावर मदार

जो ग़ाली लोग रसूले करीम (ﷺ) के लिये इल्मे ग़ैब ष़ाबित करते हैं वो क़ुर्आन मजीद की तह़रीफ़ करते हैं और अज़्ख़ुद एक ग़लत़ अ़क़ीदा घड़ते हैं। लोगों को ऐसे ख़न्नास लोगों से दूर रहकर अपने दीन व ईमान की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिये। रसूले करीम (ﷺ) ने जो भी ग़ायबाना ख़बरें दी हैं वो सब वह़्य इलाही से हैं। उनको ग़ैब कहना लोगों को धोखा देना है।

बाब 5 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह ह़श्र में,

٥- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿السَّلاَمُ